

भगवद् यज्ञ प्रसाद





स्वामी ब्रह्मानन्द

नोट

जो प्रेमी पुस्तक को मंगवाना चाहे वह डाक खर्च भेज कर मंगवा सकता है। साथ ही यह लिख कर भेजे कि मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि कम से कम दस अन्य भाईयों को यह पुस्तक पढ़ाऊँ गा ॥

पता—

स्वामी ब्रह्मानन्द

C/O भारत गलास कम्पनी सदर बाजार देहली

ऋग्वेद ॥ ओ३म् ॥ यजुर्वेद

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

भगवद् यज्ञ प्रसाद

चेतावनी

पांच भूलें

लेखक तथा प्रकाशकः—
श्रीमान् पूज्यपाद स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

पहली बार १०००
संवत् २००६

सामवेद अथर्ववेद

प्रस्तुत पुस्तक शुभस्थान नारग, जिला सिरमौर (हिमाचल प्रदेश) तारीख २३-५-५२ तदनुसार १० ज्येष्ठ संवत २००६ दिन शुक्रवार (अमावस्या) २ बज कर २५ मिनट पर लिखनी प्रारम्भ की है।

स्वामी ब्रह्मानन्द

॥ ओ३म् ॥

समर्पण

त्वदीयं वस्तु गोविन्द । तुभ्यमेव समर्पये ।

जगन्नियन्ता जगदीश की असीम अनुकम्पा से महर्षि परिव्राजिकाचार्य स्वामी दयानन्द जी महाराज द्वारा प्रेरित "पंचमहायज्ञविधि" के ब्रह्म यज्ञ प्रसाद २०००, देव यज्ञ प्रसाद ५०००, पितृ यज्ञ प्रसाद २००० अतिथि यज्ञ प्रसाद १००० पारिवारिक सत्संग प्रसाद १००००, मौन यज्ञ प्रसाद १०००, पुस्तकें (२१००० प्रतियां) अपने प्रभु-प्रेरित विचारों के रंग में रंग कर आपकी सेवा में भेंट कर चुका हूँ। इस वर्ष नारंग जिला सिरमौर (हिमाचल प्रदेश) में ४ मास मौन के पुण्य दिनों में उसी प्रभु सच्चिदानन्द स्वरूप की कृपा से "भगवद यज्ञ प्रसाद" भी प्राप्त हुआ है। मेरे अन्तरात्मा में पांच भूलों की ओर चेतावनी हुई। बस वहीं से मुझे लिखने की भी प्रेरणा मिली। उसी प्रेरणा के कारण प्रस्तुत "भगवद् यज्ञ प्रसाद" पुस्तक भी तय्यार हो सकी है। भगवान् के प्रेरणा रूपी प्रसाद के कारण ही इस पुस्तक का नाम "भगवद् यज्ञ प्रसाद" रखा गया है। अतएव प्रभु की प्रेरणामयी रचना भी उसी जगदीश्वर के पवित्र चरणों में समर्पित है। और साथ ही मैं अपने गुरु देव प्रातः सायं स्मरणीय पूज्य पाद श्री महात्मा प्रभु आश्रित स्वामी जी महाराज का विनय पूर्वक धन्यवाद करता हूँ, जिन की आशीर्वाद सदैव मेरे साथ रहती है उनके संग तथा उनकी रचित पुस्तकों के स्वाध्याय से मुझे ऐसी पुस्तकों के लिखने का साहस हुआ है यह

मेरा अटल विश्वास है। और उन महानुभावों का भी धन्यवाद करता हूँ जिनकी पुस्तकों के स्वाध्याय से इस पुस्तकमें लिखने कीं सामग्री प्राप्त हुई है। मेरे इस पवित्र कार्य में सहयोग देने वाले व्यक्ति विशेष रूप से श्री ठाकुर अमर सिंह जी मुख्याध्यापक नारग स्कूल (हिमाचल प्रदेश) तथा उनके सहायक अध्यापकों को तथा इसके प्रकाशकों को प्रभु अशीर्वाद दें।

मेरे इस व्रत में मेरे प्रेमी श्री ला० लालचन्द जी नारग जिला सिरमौर (हिमाचल प्रदेश) तथा उनके परिवार ने जिस श्रद्धा सद्भावना एवं त्याग से सेवा की तथा मेरे इस व्रत को निर्विघ्न समाप्त होने में जो सहायता की है उनका मैं हृदय से आभारी हूं। इसी प्रकार श्री राज कुमार जी तथा उनकी धर्मपत्नि श्रीमती जनक दुलारी जी चन्दौसी जिला मुरादाबाद यू० पी० निवासी इन दोनों ही परिवारों का मैं धन्यवाद करता हूं साथ ही मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह उन्हें आशीर्वाद दें तथा इन परिवारों को शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक उन्नति में समृद्ध करें यही कामना है।

स्वामी ब्रह्मानन्द

आवश्यक-सूचना

(१) यह पुस्तक कुछ प्रेमी सज्जनों की श्रद्धा व सद्भावना से प्रेरित होकर प्रकाशित की जा रही है। परन्तु इन महानुभावों की इच्छा नही कि इन लोगों के भी नाम प्रकाशित किए जाएं, क्योंकि सात्विक भाव से की गई सेवा सात्विक ही रहनी चाहिये। ऐसे सहृदय लोगों को अपने निष्काम कर्म का सात्विक-फल प्रभु-आर्शीवाद के रूप में स्वयं ही मिल जाता है। मेरे, प्रभु देव ऐसे त्यागी सद्भावना रखने वाले नष्काम कर्म करने वाले को आर्शीवाद दें और काया माया छाया में सदैव उन्नत करते रहें, और सदैव अधर्म कार्यों में निवृति और धर्म कार्यों में प्रवृति बनाए रखें॥

(२) प्यारे प्रेमी सज्जनो,

प्राय: पुस्तक खरीदते समय लोग पुस्तक पर पुस्तक का मूल्य अंकित न देख कर प्रश्न किया ही करते हैं। ऐसे जिज्ञासु लोगों की सेवा में नम्र-निवेदन है कि अग्नि में जो वस्तु (हवि:) डाली जाती है वह विश्व में प्रसारित हो जाती है। सन्यासी भी अग्नि रूप होता है। सन्यासी का रूप धारण कर के पुस्तकें बेचना जान बूझकर इस पवित्र सन्यास-आश्रम को कलंकित करना है। मैं जब भी पुस्तक लिख कर प्रकाशित कराने की आकांक्षा करता हूं तो प्राय: प्रभु कृपा से जिन प्रेमी सज्जनों के पास भगवत् पूंजी होती है वे ही सात्विक-भावना से पूंजी इस शुभ-कार्य के लिए अवश्यमेव प्रदान करते हैं। वह पुस्तक छपवा कर प्रेमी सज्जनों की सेवा में भेट कर दी जाती है।

मेरा मुझ में कुछ नहीं, सब कुछ है सो तोर।
तेरा तुझ को सौंपते—क्या लागत है मोर ॥

अतः जो प्रेमी सज्जन ऐसे पवित्र कार्यार्थ अपनी गाढ़ी कमाई का भाग भगवत्प्रेरणा से भेजना चाहें वे निम्न पते पर भेज सकते हैं।

स्वामी ब्रह्मानन्द
C/O भारत गलास कम्पनी (सदर-बाजार) देहली

(३) नोट—

जिन प्रेमियों के हाथों में यह पुस्तक पहुँचे, कृपया वे भाई इस पुस्तक का मूल्य अवश्य चुका दें।

किस रूप में ?

इस रूप में कि वे भाई प्रतिज्ञा करें कि न्यून से न्यून अन्य १० भाई बहिनों को यह पुस्तक अवश्य पढ़ा देंगे। ऐसा करने पर उन्हें भी प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

स्वामी ब्रह्मानन्द

कृपया पुस्तक पढ़ने से पहले निम्न अशुद्धियों को शुद्ध करलें

शुद्धि पत्र

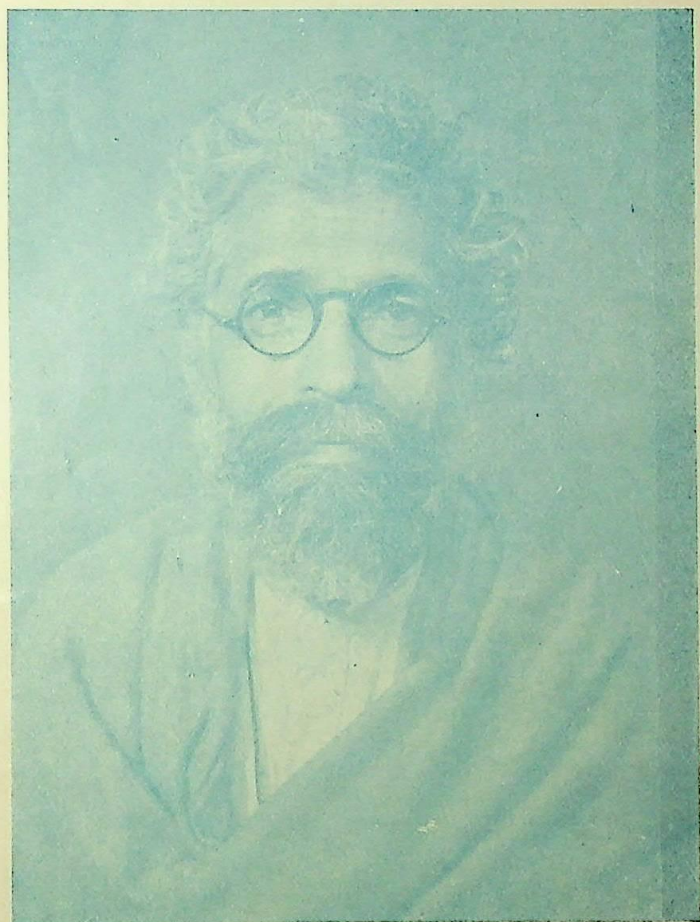
पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	५	जाभा	जाया
५	१६	आपसे	आप जैसे
६	६	सपुदम	सपुर्दम
२२	१	कह	वह
३६	१	इपना	इतना
३७	१४	जलाया	लाया
४१	१५	आपसे	आप जैसे
६१	७	रहा	नहीं रहा
६५	२३	उपदेश	आज्ञा
८१	२	या	गया
८४	५	भाक्त	भक्ति
८४	१७	रसि	मन्युरसि
८४	१८	सि	ऽसि
८७	१	वीतरागा	वीतरागी
९१	१४	रह	रहा
९७	१०	जिन	जिन
९८	१६	भुगतना	भुगतता
१०५	२	पीछे	पीछे
११८	२०	अहते	कहते
१२६	२२	वरुणा	वरुण
१३५	१२	दया	दिया

विषय सूची

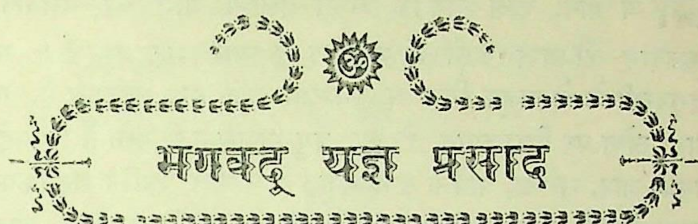
सं०	विषय	पृष्ठ
२६.	वाणी के दोष, तपस्वी साधु और जिज्ञासु ...	८६
२७.	भक्त और धनी	८८
२८.	साधु नौजवान	९०
२९.	अहिंसा--शेर और संत महात्मा	९२
३०.	शान्ति देवी	९४
३१.	चौथी भूल (मोह)	९६
३२.	गुरु और शिष्य	९८
३३.	कारून	९९
३४.	गुरु का शिष्य को सन्मार्ग दिखाना	१००
३५.	महाभारत	१०६
३६.	रामायण—ऋषि दयानन्द	११२
३७.	मोह पर विजय पाना	११३
३८.	पांचवीं भूल (अहंकार)	११६
३९.	हे प्रभु तेरी निराली शान है (गीत)	११७
४०.	प्रत्यक्ष दृश्य	१२०
४१.	वह ईश्वर कहां है	१२२
४२.	मैं हूं (कविता)	१२३
४३.	धनी अहंकारी	१२५
४४.	करनी भरनी	१२६
४५.	गुरु नानक देव जी	१३७
४६.	हृदय की पवित्रता कैसे हो	१३८
४७.	दो विद्वान	१४०
४८.	जीवन का मैं ने सौंप दिया (भजन) ...	१४४
४९.	नमो सृष्टि कर्ता (भजन)	१४५
५०.	यम नियम द्वारा विषयों की जीत	१४९
५१.	प्रार्थना—सुखी बसे संसार सब (कविता) ...	१५१

ओ३म्

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥



श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज



ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आसुव ।। यजु० अ०३० मं० ३ ।।

भावार्थः–

हे उत्तम गुण; कर्म, स्वभाव-युक्त; उत्तम गुण,कर्म, स्वभाव मं प्रेरणा देनेवाले परमेश्वर; आपहमारे सम्पूर्ण दुष्टाचरण व दुखों: को दूर कीजिए और जो कलयाणकारी धर्म–युक्त आचरण व सुख हैं उनको हमारे लिए अच्छे प्रकार उत्पन्न कीजिए ।

ॐ भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् । यजु० ३६० ३

भावार्थः–

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन पोषण है करता तू ।
हमारातू जीवन आधारहैं,दुखःऔर संकटहै हरतातू ।।
तेरा प्रकाश है महां, विश्व सारे में रम रहा ।
आनन्द शान्ति की तू; विश्व में वर्षा कर रहा ।।
तेरा ही धरते ध्यान हम, और करते हैं यहप्रार्थना ।
प्रभु हमारी बुद्धियों को, सत्य मार्ग पर चला ।।

आज प्रातः काल जब कि अमृत–वेला में जाग कर भगवान् के अमृतदान को प्राप्त करने में भगवान् के प्यारे भक्त मग्न हैं। एक सदगृहस्थी के दो बालक जिन का नाम राम लाल तथा सत्यपाल है, एक पहाड़ी स्रोत पर विराजमान हो कर प्रभु–उपासना में मस्त हैं। उन्होंने गायत्री जाप, सन्ध्या, प्रार्थना तथा भजन के पश्चात शान्ति पाठ किया। आसन लपेटते समय अकस्मात मनमोहनी मधुरध्वनि कानों में आकर गूंज गई। उन्होंने जब चौंक कर देखा तो दिखाई कुछ न पड़ा। वे तत्काल ही उस ध्वनि के सहारे चल पड़े। वे श्रद्धालु आत्माएं थीं। यद्यपि मार्ग पथरीला था तथापि ऊपर नीचे उतरते चढ़ते अन्ततः उस स्थान पर पहुंच ही गये जहां से यह मधुर–ध्वनि अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। वहां जा कर क्या देखा कि एक सन्त महात्मा पर्वत की एकान्त गुफा में आसन जमाए तथा आंख मूंद मस्ती में गीत गा रहे हैं। दोनों बालक चुप चाप उन के पीछे बैठ कर आंखें मूंद कर गीत का आनन्द लेने लगे हैं। गीत निम्न प्रकार था:—

गीतः– तेरे द्वारे ते आगया, रक्खन वाला तू ही तू।
सारे ही जग नूं वेख्या, लगदा ए प्यारा तू ही तू।
पापां दे घुम्मर घेरविच, बदियां दे काले अन्हेर विच।
बेड़ी है डगमग डोलदी, आस किनारा तू ही तू।
टेक .... तेरे द्वारे........ .....
खाली द्वारे तों मोड़न, तेरे बिना कोई होर न।
मैंनूं है तेरा आसरा, मेरा सहारा तू ही तू।
मैं निमाणी दा मान तू, अपना विरद पछान तू।
चरणां दे प्रीति दा दान दे, दाता दुलारा तू ही तू।
टेक............तेरे द्वारे.............

अमलां दे लेखे न फोलणे, ऐब न कंडे तोलने ।
भूल्लण हारा जहान है, बख्शण हारा तूही तू ।
टेक......... तेरे द्वारे.........

प्रार्थना

ॐ न दक्षिणा वि चिकिते न सव्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा ।
पाक्या चिद्वसवो धीर्या चिद्युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम् ॥
ऋ २-२७-११

हे प्रकाश स्वरूप प्रभु, आजकल मैं एक अन्धेरी रात्रि में घिरा हुआ हूं । मेरे मानसिक नेत्रों के सामने एक ऐसा दुर्भेद्य काला पर्दा आ गया है जिसने मेरा सम्पूर्ण-प्रकाश रोक लिया है । मैं अपनी वर्तमान् अध्यात्मिक समस्या को हल करने में ही रातदिन डूबा हुआ हूँ । कहीं से कोई भी प्रकाश की किरण मिलती दिखाई नहीं देती है। दाएं, बाएं, कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है । आगे पीछे कहीं भी इस अंधकार-मयी ज्वाला से बाहर निकलने का मार्ग नहीं सूझता है । क्या करूं ? यह भयंकर भयभीत करने वाली रात्री कहीं समप्त भी होगी या कि नहीं ? इस अन्धे जीवन से तो मरना ही श्रेयस्कर है । मैं चौबीसों घण्टे विचारों की इसी उधेड़बुन में लगा रहता हूं । मेरी बुद्धि कुण्ठित हो चुकी है । ओ प्रकाश देनेवाले तुझे पाने के लिए मैं निरन्तर सांसारिक घोर युद्ध में लगा हुआ हूं ।

हे प्रकाश देने वाली आशामयी किरण; ! आओ; कृपा करो। तेरी संसार में रचित इस सहनशील (सर्वंसहा) धर्ती माता के ऊपर इतना असह्य संकट बढ़ रहा है कि हम इस पर रहने वाले समस्त-प्राणी "त्राहि माम् ! त्राहि माम् !!" पुकार उठे हैं। तेरे चमकीले प्रकाश में भी हम दुःख

का शिकार बनते जा रहे हैं॥ यह तेरी प्रदान की हुई विश्रामदात्रि रात्रि में भी हमारा रोम २ कंप उठा है न दिन में हमें चैन है और न रात्रि में विश्राम्। हम तुम से भयभीत न होने वाले कैसे मूढ़, निर्लज्ज, कुटिल, विद्याविरोधी, छली, कपटी, दम्भी, अभिमानी, निर्दयी और दुष्ट हैं। हम पृथ्वी को कलंकित कर रहे हैं हे प्रभु, हम सब को सुपथ पर लाने के लिए और अपने दोषों को दूर करने के लिए मैं आप से बार बार प्रार्थना करता हूं कि तुम मुझे इस भयंकर रात्रि से निकालकर दूर ले चलो; नहीं तो मेरा जीवन इस संसार में कठिन है। मैं दुर्बल, अधीर तथा अज्ञानी हूं। हे वसु-आदित्यो ! तुम ही मुझे बसा लो और आज्ञनान्धकार से निकाल सत्य के सरल सुपथ पर ले चलो। यद्यपि मैं अज्ञानी, संकोची एवं धैर्य विहीन हूं; पर यदि तुम मुझे सुपथ पर ले चलोगे, मेरे नायक बन जाओगे तो मैं निस्सन्देह इस अंधकार को समाप्त कर प्रकाश को पा जाऊंगा और इस महाभय से पार हो जाऊंगा।

भजन (प्रार्थना)

तेरी शरण में आय के; फिर आस किस की कीजिये
फिर आस किस की कीजिये, प्रभु आस किस की कीजिये
नहीं देख पड़ता हैं मुझे, दुन्यिा में तेरी शान का।
गंगा किनारे बैठ के; कृिम कूप का जल पीजिये।
पतित-पावन नाम सुन कर, मैं शरण तेरी पड़ा।
सुफल कर इस नाम को, अपना मुझे कर लीजिये।
हरगिज़ नहीं हूं योग्य मैं यदि तेरे ही दरबार का।
मेरी खता को माफ़ कर, दीदार अपना दीजिये।

मिलता है ब्रह्मानन्द जिस के, नाम लेने से सही ।
ऐसे प्रभु को छोड़ कर, फिर कौन से हित कीजिये ।

आओ नाथ, अब मुझ पर करुणा करो, दया करो, बीती सो बीती मेरी रही सही बनाओ । मुझे अपने चरणों का वास प्राप्त कराओ । मैं इस कठिन परीक्षा के योग्य नहीं हूं । मैं इस आज़माईश के काबिल नहीं हूं—तेरा जाभा तेरे दर पै आया हूं और कुछ नहीं मांगता । केवल यही भिक्षा मांगता हूं कि तू मुझे अपना ले ! अपना ले !! अपनाले !!!

ओम् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

रामलाल और सत्यपाल जो पीछे बैठे प्रार्थना और भजनका आनन्द-रस ले रहे थे । प्रार्थना और भजन समाप्त होते ही तत्काल सन्त महात्मा की चरण शरण में आये नतमस्तक हो कर नमस्कार किया और कर बद्ध हो प्रार्थना की,महाराज ! भगवान् की अपार कृपा है कि आज ऐसे सुन्दर सुहावने समय में भगवान् ने महाराज के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त कराया । महाराज आप जब भी इस तरफ आते हैं हमें सूचना तक भी नहीं देते हैं । परन्तु अकस्मात ही प्रभुदेव आप जैसे इष्टजनों का दर्शन दिला देते हैं ।

सन्त महात्मा— प्यारे, आप की यह सद्भावना ही है और प्रभु की आप दोनों भाईयों पर असीम कृपा है जो अमृतवेलामें जाग कर और नदी तट पर नित्यप्रति भगवद्भजन और पूजन करते हो । जिस से मुझे भी भगवान् ने आपसे प्यारे सज्जनों के दर्शन करा दिए । रही मेरे आगमन की बात, सो तो भगवद् अधीन है । साधु का क्या स्थान ? कौन ठिकाना ? वह तो उसी प्रभु के आश्रित रहता है उसी प्रभु की प्रेरणा से यन्त्र बनकर काम करता है । साधु की बागडोर तो प्रभु के हाथों में होती है । जहां वह चाहे बिठाए, खिलाए, सुलाए, तथा चलाए । यह आप जैसे प्यारों की

उदारता है कि जो आप मुझ से प्रेम करते हो। अच्छा प्यारे भगवान् आप को आनन्दित रखें। आप गृहस्थी लोग हैं। अब कारोबार का समय है जा कर अपना २ काम करो।

रामलाल-सत्यपाल—महाराज, धन्य हो। हम लोग सांसारिक विषयों में लिप्त हो कर रात दिन आवागमन के चक्कर में फंसे हुए हैं। आप अग्नि-स्वरूप हैं। आप के ही पुण्य-प्रकाश से संसार के लोगों को कुमार्ग का त्याग कर सन्मार्ग मिलता है। आज हमारे अहोभाग्य हैं। जो आप महात्मा के दर्शन हुए हैं। आप के दर्शनों से तो हमारा सांसारिक छुटकारा होता है। आप के संग में रह कर आप के मुखारविन्द से जो प्रार्थना तथा सुन्दर-गीत सुनने का आज सौभाग्य प्राप्त हुआ उस में तो असीम आनन्द प्राप्त हुआ है। यह प्रभु की अपार कृपा है। (करबद्ध प्रार्थना करते हैं) महाराज! वर्तमान काल में संसार में चारों ओर अशान्ति ही अशान्ति दृष्टिगोचर होती है। विद्वान् से विद्वान्, बलवान् से बलवान्, धनवान् से धनवान्, जिस को देखो वह अशान्त है। बुद्धि-बल, शरीर-बल, धनबल, ये सब तो सुख-शान्ति का कारण होने चाहिएं। परन्तु परिणाम इस के विपरीत हो रहा है। इस का क्या कारण है ? कृपया इस विषय पर प्रकाश डालने का कष्ट करें।

सन्त महात्मा—प्यारे, आप ३० वर्ष पूर्व की बात बतलाओ। विद्या पहिले अधिक थी या अब, धन पहिले अधिक था या अब, पहिले लोग पराधीन थे या स्वतन्त्र, पहिले डाक्टर अधिक होते थे या अब, पहिले रोगी अधिक होते थे या अब, पहिले प्रेम-भाव अधिक था या अब, पहिले लज्जा अधिक थी या अब, पहिले एक दूसरे के प्रति विश्वास अधिक था या अब।

सत्यपाल-रामलाल—महाराज! पहिले विद्या कम थी, धन कम था, लोग

पराधीन थे, डाक्टर और रोगी भी कम थे, लोगों में प्रेम-भाव अधिक था, लज्जा थी, विश्वास था। परन्तु अब विद्या अधिक है, धन अधिक है, डाक्टर और रोगी भी घर २ में हैं। स्कूल, कालेज पाठशाला, एवं गुरुकुल अनेक। स्वार्थ, निर्लज्जता, अविश्वास की कोई सीमा नहीं।

सन्त महात्मा—प्यारे विद्या तो प्रकाश देती है। अन्धकार का नाश करती है। विशेषकर स्वतन्त्रता हो .. फिर शान्ति न हो. . ....

सत्यपाल-रामलाल—यही तो आश्चर्य है कि स्वतन्त्रता विशेष कर सुख का साधन है। परन्तु फिर भी अशान्ति! महाराज, कृपा कर इस विषय पर प्रकाश डालें।

सन्त महात्मा—प्यारे, इसके कारणतो अनेक हैं, परन्तु विशेष रूप से वे पांच ही प्रकार के हैं:-सुनो, अशान्ति के कारण हैं मनुष्य की पांच भूलें:-

(१) **पहली भूल**-मनुष्य ने मृत्यु को भुलाया हुआ है।

(२) **दूसरी भूल**-मनुष्य ने अपने किए हुए पापों और बुराईयों को भुलाया हुआ है।

(३) **तीसरी भूल**-मनुष्य ने सुख-संपत्ति के कारणों को भुलाया हुआ है।

(४) **चौथी भूल**-मनुष्य ने पिछले भोगे हुए दुःखों को भुलाया हुआ है।

(५) **पांचवीं भूल**-मनुष्यने परमात्मा के न्याय तथा दया को भुलाया हुआहै।

प्यारे, इन पांच भूलों का विस्तार समय २ पर सुनावेंगे। इस विषय को प्रस्तुत करने में कई दिन लग जावेंगे। यदि प्रभु ने यहां पर भोग रखा है—ठहरायेगा—तो इन भूलों का कारण विस्तार करने की सामर्थ्य प्रदान करेगा। अब आप घर पर जा कर विश्राम कीजिये, जो काम करने योग्य हो वह कीजिये।

रामलाल-सत्यपाल—महाराज, आज आप अपने चरण-कमलों से

हमारे गृह को पवित्र कीजियेगा और जो भगवान का दिया हुआ शाक दाल आदि है, उसे आप की भेंट करेंगे उसे स्वीकार कर कृतार्थ कीजियेगा ।

सन्त महात्मा– आज अमावस्या का दिन है। हमारा उपवास है। अतः हम भोजन नहीं करेंगे।

सत्यपाल- महाराज, दूध, फल, फूल जो व्रत के अनुकूल हों आदेश कीजिये। हम यहीं पर ला कर उपस्थित करेंगे।

सन्त महात्मा- प्यारे, आप के भण्डार भगवान भरपूर रखें। आज हम कुछ भी खान पान नहीं करेंगे।

रामलाल- महाराज, दिन भर आप कुछ न खावें; परन्तु रात्रि को तो दूध, फल आदि का आहार करना ही होगा । प्रायः लोग उपवास रखने पर ऐसा ही करते हैं।

सन्त महात्मा -यदि कोई व्यक्ति अन्धकार से आवृत हो तो उसे खान पान आदि कुछ नहीं सूझता है । उसे तो सब से पूर्व प्रकाश ही चाहिए । प्यारे, मैं तो गुप अन्धेरे में ही घिरा हुआ हूं । मैं प्रकाश स्वरूप प्रभु की शरण में हूँ । जब वह मुझे प्रकाश प्रदान करेगा तभी मुझे खान-पान सूझेगा। वह भोग दिलायेगा–खिलायेगा ।

सत्यपाल...महाराज, आप तो ज्ञानी, ध्यानी अग्निरूप, हो। फिर यह अनोखी बात कैसे।

सन्तमहात्मा– आप अपनी बुद्धि के अनुसार सच कहरहें होंगे। परन्तु प्यारे, **"घायल की गति घायल ही जाने और न जाने कोय,"** आज अमावास्या की गुप गहरी अन्धेरी रात्रि है क्या कुछ दिखाई देता है ? कोई वस्तु प्यारी लगतीहै? कल जब चन्द्रमा को थोड़ीसी ज्योत्स्ना

मिलेगी तो कैसा सुन्दर दीख पड़ेगा। वह ज्योत्स्ना उसे किस प्रकार मिलेगी जब वह सूर्य देवताके चरणों का वास प्राप्तकरेगा। फिर थोड़ी सी ज्योत्स्ना तो प्राप्तकरेगा चन्द्रमा, परन्तु सकल संसार सायं काल को उस चन्द्रकला के दर्शन कर खुशियाँ मनाएगा। बस प्यारे, जब वह चन्द्रमा को अन्धेरे से निकालकर प्रकाश प्रदान करेगा तो अवश्य ही वह हमें भी अपने प्रकाश की ज्योति प्रदान करेगा। फिर जो कुछ मेरा भाग होगा— वह खिलावेगा। अब तो प्यारे, उसी की चरण शरण में हूं जैसा कवि ने लिखा है :—

"सपुर्दम बतो दिले खेश रा; तू दानी हिसाबे कमो बेश रा"

अर्थात्:— मैंने अपना दिल तुम्हारे हाथों सुपुर्द कर दिया है। अपनी कमी और बेशी का हिसाब तू ही जाने॥

प्यारे–अब आप कृपा कर अपने स्थान पर चले जावें। यदि भगवान् ने जीवन में आप जैसे प्यारे प्रेमियों का मेल मिलाया तब-तो फिर यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

सत्यपाल रामलालने नतमस्तक हो कर सन्तमहात्मा को प्रणाम किया और वहां से चलते बने,। (परस्पर बातें करते हुए)

सत्यपाल:—आज हमारे भाग्य जाग पड़े हैं। हमें न सुध न बुध थी। प्रभु की अपारकृपा है कि उसने ऐसे सन्तमहात्मा, त्यागी, तपस्वी के दर्शन कराये और महात्मा जी ने कितनी सरलता, मधुरता और सुन्दरता से अमृतवेला में अमृतवर्षा की। भाई, गुरुनानकदेव जी ने क्या ही सुन्दर कहा हैं:-

"साधु-सगति, हरि--कीर्तन, सर[१] कर मन के कर्मा[२]
कहो नानक तिस भयो प्राप्त, जिस पूर्व[३] लिखे का लहना[४]"

(अर्थ) संतों की संगति और परमात्मा का भजन यह सब कामों में श्रेष्ठ

---

१ सरताज २ काम ३ पिछले जन्म के ४ वसूली जमा

कर्म है। परन्तु यह उस आदमी को मिलते हैं जिसने पूर्व जन्म में शुभ कर्म किए हों।

राम लाल— भाई साहब, आप का कथन बिल्कुल सत्य है। वस्तुतः प्रभु की हम पर अपार कृपा है जो कि वह अपने प्यारों द्वारा हमारा पथ प्रदर्शन कराता है और हमें सन्मार्ग दिखलाता है। इसी सन्तमहात्मा की रचित पुस्तकें पितृयज्ञ प्रसाद, अतिथियज्ञप्रसाद, मौनयज्ञप्रसाद, आदि मैं ने पढ़ी हैं। लिखने में क्या ही चतुरता प्रदर्शित की है; कितनी निर्भयता एवं सच्चाई के साथ विषय का प्रतिपादन किया है। भाई मैं ने जिस २ को यह पुस्तकें पढ़ने के लिए दीं, उन के परिवार सुधर गए हैं। वह प्रेमी सज्जन इस सन्त महात्मा के दर्शनों के अभिलाशी हैं। कई बार उन सज्जनों ने मुझ से आग्रह किया कि जब कभी यह सन्त महात्मा यहां पधारें तो हमें अवश्य ही दर्शन करा देना। दूसरी बात यह है कि इस सन्तमहात्मा में यह विशेषता है कि यह किसी सम्प्रदाय (मज़हब) का खण्डन न कर केवल वेद (जो भगवान् की निज अमृत वाणी है) का ही उपदेश करते हैं। इन को लोभ लालच की भावना से कोई सम्बन्ध ही नहीं है बल्कि यह तो त्याग भावना से भरपूर हैं।

सत्यपाल —भाई, आजकल तो नाना प्रकार के मतमतान्तर फैल गए हैं जो भी विद्वान आता है अपनी स्तुति तथा दूसरों की निन्दा करता है। सभी लोग मज़हब की आड़ में शिकार खेल रहे हैं। स्वयं दुःखी हैं, और दूसरों को भी दुःखी कर रहे हैं।

दोहा—" फांसी तब लग मज़हब की, जब लग होत न ज्ञान।
मज़हब फांसी टूटे जब ही, पावे पद निर्माण॥
पावे पद निरवान निरञ्जन, मांह न पावे।
जनम मरण को काट, फिर, वो जून न आवे॥

कहे गिरधर कविराय, बोध बिन भी चौरासी ।
जब लग होत न ज्ञान, मज़हब की तब लग फांसी ॥

निस्सन्देह ज्ञानी तो आजकल बहुत हैं पर कर्म करने से रहित हैं । कवि ने क्या सुन्दर कहा है:—

नहीं जिस में अमल, और हो किताबों से लदा फिरता ।
'ज़फ़र' उस आदमी को हम, तसवीरे बैल कहते हैं ॥

अर्थात्, कितना ही बड़ा विद्वान् ज्ञानी मनुष्य क्यों न हो यदि वह आचरण हीन है तो पशु समान है । सचमुच वर्तमान वर्नाश्रम की व्यवस्था ही निराली हो चली है—कैसे-सुनिये:—

ब्राहमन हो गए कर्म हीन- क्षत्रिय विषयों के आधीन ।
करते वैश्य व्यापार मलीन --शूद्र हो गए तेरह तीन ॥
इस से भारत दःखिया दीन ॥

राम लाल—भाई साहिब, चलो शहर चल कर प्रेमी जनों को सूचना देदें । और कल प्रातःकाल सभी प्रेमियों को सन्तमहात्मा के चरणों में ला कर उन के दर्शन करावें और महात्मा जी से प्रार्थना करें कि वे शहर ही में पधारें । कल प्रातःकाल महात्मा जी वेद की कल्याणमयी अमृत-वाणी द्वारा जन्ता को उपदेश करें । ऐसे ही सन्तमहात्मा लोगों के मधुरवचनों से ही शहर की जन्ता का उधार होगा । साथ ही हमारा भी कल्याण होगा । सन्त कबीर ने कहा ।

कबीरा संगत साध की, साहब आवें याद ।
लेखे में सोई घड़ी, बाकी दिन बरबाद ॥

अर्थ—सन्त कबीर कहते हैं कि साधु की संगति में भगवान् की याद

आती है। आयु का वही क्षण अच्छा समझो कि जिस में भगवान का सुमिरण हो जावे; अन्यथा शेष जीवन तो व्यर्थ ही बीतता है। सन्त तुलसी दास जी लिखते है:—

एक घड़ी आधो घड़ी, आधी से भी आध।
तुलसी संगत साध की, काटे कोटि अपराध॥

(यही वर्तालाप करते २ वे दोनों शहर पंहुच गए और सत्संगी प्रेमियों को सन्त महात्मां की सूचना दी। सब ही लोगों ने प्रातःकाल संगठित हो कर शहर से चलने की ठानी। इस निश्चय के पश्चात् दोनों भाई घर की ओर रवाना हुए।)



दूसरे दिन प्रातःसमय

दूसरे दिन प्रातःकाल रामलाल सत्यपाल नियमानुसार घर से चल पड़े और नियतस्थान पर आकर भजन-संध्या-जाप-प्रार्थना शान्तिपाठ किया। इतने में अन्य प्रेमी जन स्थान पर पंहुच गए। सभी लोग एकत्र हो कर सन्त महात्मा की सेवा में चल पड़े। (सन्त महात्मा स्वयं अपने ध्यान में मग्न हैं।) प्रेमी जन धीरे २ पंहुच कर शान्ति पूर्वक उन से कुछ दूरी पर बैठ गए (सन्त महात्मा जी गीत गा रहे हैं):—

गीत

जब ग़म नहीं था तेरा, ग़मगीन हो रहा था।
ग़मगीन तेरे ग़म में, ग़म से बरी हुआ हूं॥

जब बेफ़िक्र था तुझ से, फ़िक्रें लगी हुई थीं।
जब से है फ़िक्र तेरा, बेफ़िक्र हो गया हूं ॥
जब भय नहीं था तेरा, भयभीत हो रहा था।
जब भय हुआ है तेरा, निर्भय ही हो गया हूं ॥
जब तक नहीं दिया धन, निर्धन बना हुआ था।
सब कुछ तुझे ही दे कर, अब मैं धनी बना हूं ॥
हंसता था रातदिन मैं, दिल में खुशी नहीं थी।
रो २ के तेरे ग़म में, अब मैं खुशी हुआ हूं ॥

प्रार्थना

हे प्रकाशस्वरूप प्रभु, धन हैं कि तू ने अपनी अपार करूणा और प्रेरणा से व्रत करा कर अपने चरणों का वास प्राप्त कराया। मुझ को उन भूलों की ओर से सचेत किया जिस के बिना मैं जन्म जन्मान्तर के आवागमन के चक्कर में पड़ा हुआ हूं। हे नाथ, मैं स्वएं असमर्थ हूं। इन भूलों को दूर करने के लिए, बिना तेरी करूणा-सहायता के मैं शक्ति हीन हो रहा हूं। भगवन् जिस प्रकार आप ने मुझे इन भूलों से सचेत किया उसी प्रकार इन भूलों के चक्कर से निकालने की कृपा भी करें। यही भूलें प्रातः सायं स्मरणीय पूज्य गुरुदेव श्री स्वामीप्रभु आश्रित जी महाराज से उपदेश में सुनी थी; परन्तु कालचक्र से वह सुनी भी अनसुनी हो गई थी। यदि इन भूलों को सुन कर मनमें मनन करता, आचरणों में लाता तो आज दिन कुछ का कुछ हो गया होता। प्रभु जो बीती सो बीती अब रही सही तो संवारे। अब तेरी शरण में आगया हूं। मेरी अंगली अब स्वयं पकड़ लो। बस इतना करलो तो मेरा बेड़ा पार है। ओम् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

(जब सन्त महात्मा भजन प्रार्थना से निवृत्त हुए और पीछे मुड़ कर

देखा तो उन्हें बहुत से प्रेमी जन बैठे हुए दिखाई पड़े। सभी प्रेमी जनों ने उठ कर तत्काल बारी २ से नतमस्तक हो नमस्कार किया और चरणों में बैठ गए)

सन्त महात्मा—आप यहां पर कैसे पधारे हैं ?

प्रेमीजन—महाराज कल शाम को सत्यपास-रामलाल जो बड़े विचार शील, और धर्मात्मा सत्संगी भाई हैं, ने आकर महाराज के आगमान की सूचना दी, सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई, महाराज ! जबसे हमें महाराज की पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ प्रसाद इत्यादि पुस्तकें देखने पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है तब से इच्छा थी कि महाराज के दर्शन करें सो भगवान् ने बड़ी कृपा की घर बैठे गंगा में स्नान करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। और प्रार्थना की महाराज, अबतो महाराज का व्रत आमावस का पूर्ण होगया है। कृपया अब शहर में चल कर पधारें जो महाराज की इच्छा खान पान की हो सो भेंट करेंगे स्वीकार कीजिये। और हम सनतप्त आत्माओं को भगवान् की दात से तृप्त कीजिये ॥

सन्त महात्मा—ने प्रेमियों की श्रद्धा भावना से प्रेरित हो कर चलना स्वीकार किया आसन, लोटा, सोटा, लंगोटा, कम्बली लेकर चल पड़े साथ चलते २ सब प्रेमीजन गायत्री का गीत गाते २ नगर में पहुंच गये। दूध फल फूल जो प्रेमीलाये इच्छानुसार संत महात्मा ने सेवन किया नगर में पहले घोशणा करदी गई थी कि संत महात्मा जी का आज उपदेश होगा। अतः नियत स्थान पर नर नारी एकत्र हो गये। प्रेमी सन्त महात्मा को साथ लेकर मंडप में पहुंचे। सभा मंडप में भजनीक महाशय ने भजन गाना आरम्भ किया सभी ने भजन मिल कर गाया ॥

भजन

हे जगत स्वामी प्रभु भेंट धरू क्या मैं तेरी।

माल नहीं मोरे सम्पति नाहीं, जिस को कहूं मैं मेरी ॥१॥

इस जग में हम ऐसे विचरें, जोगी करें जैसे फेरी। प्रभुजी........
धन जन जोबन अपना माने, मूरख भूला भारी ॥२॥
तुम बिन और सहाई न मेरा, देख लिया मैं विचारी। प्रभु जी......
यह तन; यह मन होवे न अपना, है सब माल तुम्हारा ॥३॥
जब चाहे तब हीं तू लेवे, नहीं कुछ ज़ोर हमारा। प्रभु जी........
तुमरे दर का मैं कूकर स्वामी, लाज राखो प्रभु मेरी ॥४॥
चरण शरण निज अर्पण करके, देवो भक्ति बिन देरी।
प्रभु जी भेंट धरूं क्या मैं तेरी ॥

भजन समाप्त हुआ प्रेमियों ने सन्त महात्मा से कर जोड़ प्रार्थना की कि कृपा करके अब आप अमृतवर्षा कीजिए।

सन्त महात्मा—आज शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा है। घर २ में मंगल हो रहा है प्रभु भक्त प्यारे आज के दिन व्रत रखते हैं। वे दिन भर उपवास करते हैं। जब चन्द्रमा उदय होगा उसके दर्शन कर पुनः भोजन करेंगे। छोटे बड़ों को नमस्कार कर आशीर्वाद प्राप्तकरेंगे और घर २ में यज्ञ शेष बांटेंगे। यह प्राचीन शैली कितनी उत्तम थी। इससे कितनी उत्तम शिक्षा मिलती है। घर २ में प्रीती प्रवाह बहता रहता था। एक की दूसरे के साथ सहानुभूति होती थी। परन्तु आज की पश्चिमी शिक्षा का परिणामकितना दूषित है; घर२ में फूट है, आज भाई २ में, पुत्रपिता में, पति पत्नी, शिष्य गुरु में रात दिन ईर्षा द्वेष रहता है सभी कर्तव्य हीन हो रहे हैं तात्पर्य यह है कि समस्त संसार दुःखों का घर बना हुआ है।

न भाईयों से रही उलफ़त, न यारों में रही मिल्लत
जो उल्फ़त है तो ज़र से है, यही बस सब से प्यारा है।

ओ३म्

उपदेश

**ओ३म पृच्छे तदेनो वरूण दिदृक्षु, उपो एमि चिकितुषो विपृच्छम् ।
समानमिन्मे कवयश्चिदाहु:, अयं ह तुभ्यं वरूणो हृणीते ॥**

ऋ ७-८६-३ ॥

भावार्थ- हे पाप निवारक देव ! मैं उस पाप को तुझ से पूछता हूं जिसके कारण मुझे तुमारा दर्शन नहीं हो पाता मैं तुम्हारा दर्शनाभिलाशी हूं इस वषय में विविध प्रश्न पूछने के लिये मैं विद्वानों के पास जाता हूं। परन्तु वह सब ज्ञानी पुरूष भी मुझे एक ही उत्तर देते हैं। एकही बात कहते हैं कि निश्चय से यह वरुण देव ही तुम से अप्रसन्न है उसे प्रसन्न करो। नाथ कैसे आपको प्रसन्न करूं मार्ग बताओ ! बहुत अच्छा नाथ ! बड़ी कृपा की, बता दिया पांच भूलों को दूर करूं ! बस नाथ, आशीर्वाद दो ता कि भूलों को दूर कर के तुझे प्रसन्न कर सकूं ।

सन्त महात्मा पूज्य माताओ तथा भद्र पुरुषो ! अभी आप सब सत्संगी प्रेमियों ने मिल कर भजन गान किया, और मैं ने भी साथ मिल कर गाया। अब कृपा कर के मुझे यह बताओ, कि इस भजन गाने में आपको क्या लाभ मालूम हुआ ॥ सन्त महात्मा के प्रश्न को सुनते ही सभी एक दूसरे कीं तरफ़ देखने लगे। और एक दूसरे से कह रहा है कि तुम उत्तर दो परन्तु उत्तर कोई नहीं देता। तो सन्त महात्मा ने कहा प्यारे, बस यही भूल है सुनते हैं परन्तु टिकाते नहीं। धन्य है वह कवि, जिसने ऐसा सुन्दर भजन बनाया। मेरे गुरू देव जी महाराज ने आरम्भ में ही इस भजन को अग्नि होत्र नित्यप्रति करने के पश्चात दोनो काल गाया। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज

महात्मा प्रभु आश्रित स्वामी जो महाराज बन गये। बस भजन को सुना, टिकाया, विचारा, आचरण में लाया जो कुछ भजन में मांगा सो पाया। अच्छा तुम यह बताओ कि परमात्मा ने पशुओं के कान भी बनाए और मनुष्य के भी, पर पशुओं के कान हिलते हैं मनुष्य के नहीं हिलते, इसका क्या कारण। अब सभी चुप एक दूसरे का मुँह देख रहे हैं॥

सन्त महात्मो–ने बतलाया प्यारे, पशु जो कुछ सुनता है वह कान हिला कर बाहर फैंक देता है। मनुष्य के कान भगवान् ने न हिलने वाले बनाये।

इस वास्ते बनाए कि जो कुछ सुने, उसे टिकाए। अब यदि आप लोगोंने जो कुछ सुना या बोला, और उसे न टिकाया, तो फिर भविष्य में आप क्या बेनोगे। उत्तर 'मिला, पशु! बस प्यारे सम्भल जावो, समय की कदर करो, गाफिल मत होवो अन्मोल मनुष्य जन्म पाकर इसको व्यर्थ मत खोवो। पता नही कब बुलावा आजावे। कबूतर के सामने जब बिल्ली आजाती है तो वह आंखे बन्द कर लेता है। वह यह जान कर कि बिल्ली चली गई परन्तु प्यारे ऐसा नहीं होता वह तो तत्काल गला घोंट लेती है! सन्त कबीर ने कया अच्छा कहा है:–

चलती चक्की देख कर दिया कबीरा रोय।
दो पाटों के बीच में साबित रहा न कोय॥

प्यारे, आगे चल कर सन्त कबीर ने इससे बचने का उपाय बतलाया:–

चलती चक्की देख कर, दिया कबीरा हास।
दो पाटन के बीच आकर, बचा जो कीली पास॥

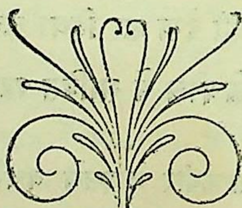
आगे एक कवी लिखता है:-

सिमरन कर मन ओ३म नाम, दिन नीके बीते जाते हैं।
पाप की गठड़िया सर पर भारी, पग नहीं आगे जाते हैं ॥१॥
मात, पिता, पति, कुल धन, दारा, संग नही कोई जाते है।
दौलत दुनियाँ माल खज़ाना, काम नही कुछ आते हैं ॥२॥

फिर कबीर लिखता है:-

स्वास २ में ओ३म कह, वृथा जनम मत खोय।
न जाने इस स्वांस का आवन होय न होय ॥

प्यारे मैं पहले वतला चुका हूं कि मनुष्य भूलों में पड़ा हुआ है उन भूलों के कारण सुख: शान्ति और परमात्मा की प्राप्ति नहीं कर सकता ॥



ओ३म्

पहली भूल

मनुष्य ने मृत्यु को भुलाया हुआ है

कारण = काम देवता

प्यारे—महाभारत में लिखा है कि यक्ष ने जब युधिष्ठिर की परीक्षार्थ प्रश्न किये थे। उनमें से यह भी यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न किया था।।

प्रश्न — सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है।

उत्तर — युधिष्ठिर ने उत्तर दिया था कि नित्य लोग मृत्यु के मुंह में जाते हैं। प्रन्तु भूल जाते हैं। वह यह देख कर भी सदैव जीते रहने की इच्छा करते हैं। उन्हें अपनी मृत्यु का ध्यान नहीं आता। इससे बढ़ कर आश्चर्य क्या हो सकता है। आहा—महात्मा बुद्ध, हजरत ईसा, ऋषि दयानन्द महाराज ने इस मृत्यु को आदर्श रखा, भगवान् का साक्षात् किया और इस असार संसार से पार हो गये।।

मृत्यु ही भगवान् का साक्षात कराने वाली है।

एक राजा ने वैद्य को बुलाया। उससे कहा कि मुझे एक काम वर्धक औषधि तैय्यार कर दे। वैद्य बड़ा खुश हुआ कि ऐसी औषधि तैय्यार कर देने से काफ़ी लाभ होगा। तो नुसखा तजवीज किया और उसे

तैय्यार किया डिबिया में बन्द कर के राजा के दरबार में पहुंचा। डिबिया और ओषधि राजा की भेंट की, और कहा, महाराज इसकी मात्रा (वजन खुराक) एक रत्ती, दूध के साथ पान करना, राजा ने डिबिया औषधि ले ली वैद्य को रुखसत किया॥

सज्जनों —राजा के बारहदरी बाग़ीचा में एक कुटिया बनी हुई थी। उस में एक सन्त महात्मा तपस्वी तयागी ठेहरे हुए थे। राजा उनका अनन्य भक्त था। जब राजा ने डिबिया औषधि ली तो तत्काल मंत्री से कहा, कि यह डिबिया सन्त महात्मा की सेवा में ले जावें। मंत्री ने डिबिया औषधि उठाई, बारहदरी बाग़ीचा में सन्त महात्मा की सेवा में पहुंचा। चरणों में नमस्कार किया और जेब से डिबिया निकाल कर सन्त महात्मा के सन्मुख रखदी, और कहा, कि महाराज राजा ने दी है। सन्त महात्माने डिबिया को खोला तो उससे तोला भर औषधि निकाल कर खाली, डिबिया बन्द करके वापिस मंत्री को देदी। और कहा इसे वापिस ले जावो॥

मंत्री जी ने डिबिया उठा कर जेब में डाली, सन्त महात्मा को नमस्कार किया और आज्ञा ले कर चल पड़ा। दरबार में पहुंचा, डिबिया राजा के सन्मुख रखदी, राजा ने डिबिया को उठा कर खोला, देखा उसमें तोलाभर औषधि नही है। तो मंत्री से पूछा, कि औषधि बीच में से किस ने निकाली है। तो मंत्री ने कहा, महाराज, आपकी आज्ञानुसार डिबिया सन्त महात्मा के चरणों में जाकर रखी। तो सन्त महात्मा ने तत्काल डिबिया को उठाया, खोला, और हाथ से औषधी निकाल कर खा ली और डिबिया बन्द करके मुझे वापिस देकर आदेश किया कि वापिस लेजा कर राजा को दे दो॥

राजा यह सुन कर बड़ा फ़िकर में पड़ गया, कि मैंने बड़ीभूल की, अपने पांव पर आप कुल्हाड़ी मारी, बस अब मेरा राज्य नष्ट हुआ॥

प्यारे-राजा क्यों फ़िकर में पड़ गया ? उत्तर-वैद्य ने तो औषधि की मात्रा एकरत्ती बतलाई थी पर वह भी गृहस्थि के वास्ते, अब सन्तमहात्मा ने एक रत्ती के बजाये ९६ गुना औषधि खाली, और वह विरक्त आत्मा हैं, वह मर जायगा, मेरा राज्य नष्ट होजावेगा। इस की मृत्यु का कारण मैं ही बनूंगा, राज्य के साथ मेरा अपना भविष्य भी नाश हो जावेगा, चिन्ता, फिकर में पड़ा हुआ भगवन् से प्रार्थना करता है, मुझे इस अपराध से बचाओ, मेरा अब कोई आसरा, सहारा नहीं है, तब मन में विचार उत्पन्न हुआ कि इस कदर घबराओ मत, पहले इसी औषधि का अनुभव भी तो कर के देखलो। वास्तव में जैसा वैद्य कह गया है वैसा गुण भी है या नहीं तो इस विचार पर सन्तोष कर लिया। रात्रि को जब उस औषधि का प्रयोग किया, जितना वैद्य जी ने औषधि का गुण वर्णन किया था, उस से कई गुणा अधिक पाया। तो अब राजा रात भर चिन्ता में व्याकुल रहा, कि बस अब मेरा राज्य नष्ट हुवा; और मेरा अपना भविष्य भी। अभी चार घड़ी रात्रि शेष थी राजा उठा, कपड़े पहन कर बाराह दरी बागीचा में सन्त महात्मा की कुटिया पर पहुंचा, तो क्या देखा, सन्त महात्मा पूर्व की भांति अपनी समाधि में मस्त हैं। राजा ने भगवान् का धन्यवाद किया और सन्त महात्मा के पीछे बैठ कर आश्चर्य अवस्था में सोच रहा है, कि मैंने एक रत्ती भर औषधि खाई, गृहस्थि होते हुए भी मेरी इस कदर गति हुई कि मैं उसे वाणी से प्रकट नहीं कर सकता पर सन्त महात्मा ने तोला भर खाली, और इस पर नाम मात्र भी प्रभाव नहीं, अपितु निरन्तर समाधि में मस्त हैं॥

सन्त महात्मा की समाधि खुली पीछे मुड़ कर देखा, राजा आश्चर्य अवस्था में बैठा हुआ है। राजा ने उठकर नतमस्तक नमस्कार किया, तो सन्त महात्मा ने पूछा, राजन्, क्या बात है। किस चिन्ता में हो। कैसे ऐसे समय में आपका यहां पर आना हुआ ? राजा ने कर जोड़ प्रार्थना की, महाराज, मैं ने वैद्यजी से कहा था, कि कामवर्धक औषधि तैय्यार कर

लाओ ? कह ओषधि डिबिया में लाया, और उसकी मात्रा एक रत्ती बतलाई, तो वह डिबिया ओषधि मैंने मंत्रीजीके द्वारा आपकी सेवामें भेजी जब मंत्री डिबिया वापिस लाया तो उसमें से तोला भर ओषधि को निकाला हुआ पाया। तो मंत्री से पूछने पर ज्ञात हुआ कि महाराज जी ने तोला भर निकाल कर खाली है। डिबिया वापिस करदी तो यह देखकर मुझे अति चिन्ता पड़ गई कि वह ओषधि, जिसकी वैद्य एक रत्ती मात्रा बतला गया है, वह भी गृहस्थि के वास्ते, मैं ने बड़ी भूल की कि डिबिया सन्त महातमा के पास भेजदी, अब वह गृहस्थी नहीं है ९६ गुणां ओषधि खाली है विरक्त आत्मा हैं। भगवान सन्त महात्मा की क्या गति होगी। फिर भगवान से पुकार और प्रार्थना की। मन में विचार आया कि पहले अनुभव करके देख तो लो। वास्तव में वह गुण भी हैं या नहीं। तो महाराज, मैंने एक रत्ती भर औषधि प्रयोग की जितनी औषधि का गुण वैद्य जी बतला गए थे, कई गुणा अधिक पाया। अब मुझे बड़ा दुःख हुआ, दिल में सोचा कि अब मेरा राज्य नष्ट हुआ और मेरा अपना भविष्य भी। तो महाराज उठ कर दौड़ता हुआ यहां पहुंचा, तो आप को निरन्तर समाधि अवस्था में बैठे हुए पाया, तो मुझे शान्ति हुई। फिर आश्चर्य इस बात का हो रहा है कि मेरे वास्ते एक रत्ती इस प्रकार असर करे हालांकि मैं गृहस्थि था और आप विरक्त, फिर छयानवे गुणा खा गए, तो उसका प्रभाव तक नहीं हो।

सन्त महात्मा ने कहाः—कि राजन्, पहले तुम एक कार्य करो इस बारह दरी बागीचा में एक सुन्दर महल तैय्यार कराओ इसमें जो २ भी वस्तु महल को सुन्दरता देने योग्य हों प्रस्तुत करो। दिवारों को सजैाओ जब महल तैय्यार हो जावे तो उस में अपनी राजधानी में से जो भी उत्तम से उत्तम पहलवाने हों, दो पहलवानों को ठहराओ और उनकी सेवार्थ सेवक रख दो। जो जो वस्तु वे चाहें उन्हे देते

रहें । किन्तु स्त्रीयां वहां हरगिज न जावें ऐसा करने के पश्चात् फिर तुमको तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देंगे ।

राजा ने सन्त महात्मा को नमस्कार किया आज्ञा ले कर चल पड़ा दरबार में आकर बाराह दरी में एक सुन्दर महल बनवानेका आदेश कर दिया, महल तैय्यार हो गया । राजधानी के दो पहलवान जो कि माने हुऐ थे उनको वहां ठहराया, उनकी सेवार्थ सेवक नियत कर दिए गए, दोनों पहलवान फूले नहीं समाते, जो मन चाही, मांगो, वह तत्काल मिल गई। अब वे सेवकों से यह कहते हैं कि महाराजा से जा कर कहो कि अब केवल दो सुन्दर लौंडियाँ भेज दें, नौकर ने आ कर महाराजा से कहा कि महाराज वह पहलवान बार बार दो लौंडियाँ ले आने को कहते हैं; और कोई इच्छा नहीं रखते । राजा ने यह सुन कर सन्त महात्मा की सेवा में पहुँच प्रार्थना की कि महाराज वे दो पहलवान और कुछ नहीं चाहते बार बार अब उनकी यह इच्छा है कि दो सुन्दर लौंडियाँ भेजो ।

सन्त महात्मा ने कहाः—कि राजन् । पहला यह कार्य करो कि अपने राज्य में अभी जा कर घोशना करा दो कि जो दो पहलवान बाराह दरी बागीचे में बहुत काल से पाले जा रहे थे कल दस बजे प्रातः अमुक स्थान पर उन दोनों पहलवानों का बलिदान किया जाएगा । सब नर नारी वहां पर पहुंचे, पर घोशना ऐसी कराई जाए कि नगर के कोने कोने में हो जावे । कोई कोना न रह जावे । दूसरी बात, रात्रि को दो सुन्दर से सुन्दर रूपवति देवियाँ भूषणवस्त्र से सजाकर पहलवानों के पास भेज दो ।

राजा, सन्तमहात्मा से आज्ञा लेकर दरबार में पहुंचा । आदेश किया कि सारी राजधानी में अभी अभी घोशना करदो कि जो दो पहलवान बाराह दरी बागीचे में बहुत समय से पाले जा रहे थे, कल प्रातः दस बजे अमुक स्थान पर उनका बलिदान किया जाएगा और सर्व नर नारी समय पर पहुँचें

घोशना ऐसी करवाई जावे कि राजधानी का कोई कोना न चूक जावे, यह घोशना वाले को सूचित करदो। और साथ ही आदेश किया कि दो सुन्दर से सुन्दर लौंडियाँ भूषण वस्त्र से सुशोभित करके रात्रि को उन पहलवानों के पास भेज दो।

प्यारे-घोशना हो गई और दो लौंडियाँ पहलवानों के पास उनकी इच्छानुसार रात्रि को भेज दी गई लौंडियाँ जब महल के अन्दर पहुँचीं तो क्या देखा दोनों पहलवान दीवार के सहारे मूर्त्ति की तरह बैठे हैं मानो जान में जान नहीं। रात भर लौंडियाँ उनको जाग्रित करती रहीं पर वे टस से मस न हुए और आँख तक न खोली।

जब लौंडियाँ प्रात: होते ही राजा के द्वार पर पहुँचीं, रात्रि की सारी बीती अवस्था सुनाई, राजा को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। तत्काल सन्त महात्मा की सेवा में पहुँचा, नमस्कार किया फिर लौंडियों की बीती अवस्था सुनाई और पूछा महाराज ! किस प्रकार उन की प्रबल इच्छा थी कि दो लौंडियां भेजो उनकी इच्छानुसार भेजी गई पर उन्हों ने टस से मस तक नहीं किया।

सन्त महात्मा:—राजन् अब तुम सोचो, राज महलों में सहवास, खान पान व विषय विकार (भोग विलास) की न्यूनता न हो, न चिन्ता, न फिकर, कितनी प्रबल इच्छा, कि अब अतिरिक्त दो लौंडियों के और कुछ नहीं चाहिये अतः उनकी इच्छानुसार दो लौंडियाँ भेज दी गई। फिर वे क्यों टस से मस न हुए। राजा ने कहा, महाराज यही तो आश्चर्य है कृप्या आप ही बतावें।

सन्त महात्मा ने कहा:—राजन्, जब दोनों पहलवानों के कानों में यह सूचना पहूँची कि कल दस बजे हमारा बलिदान होगा तो उन की सम्पूर्ण कामनाएं समाप्त हो गई यद्यपि बलिदान होने को अभी

सोलाह घन्टों का समय बीच में पड़ा था। यदि वे चाहते तो इच्छा पूरी कर लेते, परन्तु राजन्। जब कान में शब्द पहुँचे कि कल हमारा बलिदान होगा अथवा मृत्यु का जब रूप सामने आया तो सब कामनाएँ समाप्त हो गईं सामने रूपवती लौंडियाँ हैं छेड़ छाड़ कर रही हैं आँख तक नहीं खुलती, मानो शरीर में प्राण तक नहीं हैं। राजन् यही एक मित्र (मृत्यु) है जो संसार सागर से पार कराने वाली है। और परमात्मा का साक्षात् कराने वाली है। संसारिक विषय वासना सब दूर भाग जाते हैं। राजन्, तूं विषयों में फंसा हुआ है इसी नशे ने तुझे नाशौथ बना दिया है। उन्हें सोलह घण्टे पूर्व मृत्यु की सूचना मिलने पर वे विषयों से मुक्त हो गये।

तो प्यारे! हम ने तो हर समय हर घड़ी क्षण २ में इस मित्र (मृत्यु) को साथ रखा हुआ है तो तुम्हारी यह औषधियाँ क्या प्रभाव डाल सकती हैं। राजन्! तू भूला हुआ है इस मित्र (मृत्यु) को, जो व्याकुल हो रहा है, संभल जा! कवी ने क्या सुन्दर कहा है:—

खुल गया जिस पे राज़े पिनहानी।
हेच समझे वह ऐशे सुलतानी॥

अर्थात-जिस के हृदय में उसी की ज्योति जग जाती है वहां अंधकार (विषय वासनाएं निकट नहीं आसकती) का नाश हो जाता है। राजन् काम से ध्यान मारा जाता है, ध्यान से बुद्धि मारी जाती है, बुद्धि से विचार भ्रष्ट होते है अशुद्ध विचारों से मनुष्य बुरे कर्म करता है, बुरे कर्मों के करने से इस अनमोल जीवन को नष्ट कर देता है, रावण भी काम वश अन्धा हुआ और भगवती सीता पर आक्रमण किया उसे सारे परिवार ने समझाया परन्तु किसी की एक न मानी, परिणाम स्वरुप अपना और अपने वंश का और अपने राज्य का नष्ट किया, आजतक कलंक का टीका लगा आता है। प्यारे! वर्तमान काल में घर

घर में काम देवता का राज्य है। ब्रह्मचर्य्य का तो चिन्ह तक नहीं। स्कूलों, कालिजों; पाठशालाओं, किन्तु गुरुकुलों में जो ब्रह्मचर्य्य आश्रम के ठेकेदार हैं जा कर देखो, कहाँ तक वर्णन करूँ, पश्चिमी सभ्यता में बहे जा रहे हैं, पूर्व दिशा में प्रकाश होता है पश्चिम में सूर्य अस्त होता है, यह तो वह समय था, कि पश्चिम के लोग पूर्व (भारत) में आ कर शान्ति की शिक्षा प्राप्त करते थे अब हम पश्चिम को अपना गुरु मान कर शिक्षा ग्रहण करने जाते हैं वर्तमान काल में देखो सारा पश्चिम अशान्ति के गढ़े में पड़ा हुआ तड़फ रहा है। कहां तक वर्णन करूं—

दिल के फफोले जल उठे; सीने के दाग से।
इस घर को आग लग गई, घर के चिराग से॥

सुनो! एक सब इन्सपैक्टर पौलीस जो मेरे प्रेमी थे, मेरे पास आए और कहा, महाराज! आज कल घर घर में फैशन-परस्ति हो जाने से कितना संसार का भला हो गया है। मैंने पूछा कैसे?

सब इन्सपैक्टरः—"महाराज'! अभी मैं आ रहा था मार्ग में एक वेश्या जा रही थी। तहसीलदार ने उस से पूछा, कि 'क्यूं आज हाल से बेहाल हो चली है'। वेश्या ने उत्तर दिया, साहिब, क्या करें हम बीस पच्चीस बहिनें इस नगर में पहले थीं, हमारा गुजारा और समय अच्छा व्यतीत हो रहा था, अब तो घर घर में गली गली में हमारी बहनें हमारे जैसी हो गई हैं, अब हमारी कौन परवाह करे। तो महाराज जो इन वेश्याओं का संग किया करते थे वे बच गए घरों में फैशन हो जाने से कितना भला हो गया है। व्यभिचार का नाश हो गया।

सन्त महात्माः—प्यारे! तुमने अपनी बुद्धि अनुसार रोशन पहलू देखा है। तारीक पहलू नहीं देखा, वह कैसे? सुनो "इन वेश्याओं के संग जो जाता होगा वह छुप कर, और कोई कोई दुर्लभ, परन्तु इन

के संग करने से वीर्य स्थापन हो कर ऐसी बुरी वंश वृद्धि तो नहीं होती थी, अब तो घर घर में लज्जा हया व शर्म जो थी वह फैशन-परस्ति से एकदम नष्ट हो गई है, हार शृङ्गार करके मुंह पर मसी लगा कर, सर नंगा, हाथ की कलाई पर घड़ी, आँख पर चश्मा, लगा हुआ, बाजू नंगे, एड़ी वाले बूट, पान से मुँह तर किया हुआ गलियों दुकानों पर खुल्लमखुल्ला फिरती हैं। सिनेमा जायं, न घर का कुछ काम करें नौकर भोजन बनाएं, ये खा कर आराम से लेट जाएं, नौकर से कह देवें, लाला आवे, उसको रोटी खिला देना, अब बताओ ऐसी देवियों के गर्भ से जो सन्तान उत्पन्न होगी क्या वह माता की, पिता की या देश व जाती की हितैषी बनेगी, क्या वह सदाचारी सन्तान होगी या आचार हीन। व्यभिचार बढ़ा या घटा।

प्यारे-नव युवकों को देखो, युवती देवियों को देखो, आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द महाराज ने वेदों के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश तथा संस्कार विधि में इस ब्रह्मचर्य आश्रम के सम्बन्ध में क्या क्या आदेश किया है, आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में सत्यार्थ प्रकाश की कथा की जाती है कभी वेद या ऋषि के आदेश पर विचार किया और विश्वास किया, उस पर आचरण किया, आपके बालक बालकाएं आज कल कैसे रंग ढंग में रहती हैं। क्या लज्जा आँख में है? कहावत है:—

"सादगी जीवन, सजावट मृत्यु"

अब इस कहावत पर कौन आचरण करे जीवत रहने की इच्छा तो सभी करते हैं परन्तु कर्म मृत्यु के करते हैं। एक महात्मा का वचन है:—

फल मिच्छन्तिधर्मस्य न कुर्वन्तिधर्मं मानवाः।
न फल मिच्छन्ति पापस्य पापं कुर्वन्ति यत्नतः॥

नवयुवकों को देखो, न इन के उठने का समय, न सोने का समय, न खाने का समय, और न मालिक से प्यार, न माता पिता की आज्ञा का पालन, जिस का खाएं उस: को आँखें दिखाएं। संसार के उद्धार तथा सुधार के ठेके दारों का जब यह हाल हो तो दूसरों के सम्बन्ध में क्या कहूं।

अच्छा अब आप लोग ही बतलाओ कि यह मकान किस के आधार पर खड़ा है ?

प्रेमी:—महाराज यह मकान नींव (बुनियाद) के सहारे पर खड़ा है।

सन्त महात्मा:—क्या नींव (सीमां) में सजावट की जाती है ?

प्रेमी:—नहीं महाराज, नींव में तो रोड़ी चूना डाल कर कुटाई की जाती है यदि सजावट की जावे यो फिर ऊपर मन्ज़िल कैसे जावे।

सन्त महात्मा—तो यह युवती देवियाँ तथा नव युवक, भारत की बुनियाद (सीमा) नहीं हैं ? जब यह आरम्भ में सजावट, हार शृङ्गार में लिप्त हो गए, तो इनका भविष्य नाश होगा, या स्थिर।

प्रेमी:- महाराज आपका कथन सत्य ही है नाश होगा आज तो महाराज आवा का आवा हीं विगड़ा हुआ है हम बालकपन से युवा अवस्था तक माता पिता के आगे आंख तक नहीं उठाते थे वह हया और लज्जा का समय था और प्रात: काल उठते माता पिता तथा वड़ों को नमस्कार करते थे जाप सन्ध्या, हवन, स्वाध्याय करते थे, आज्ञा कारी इतने, कि वड़ों का आदेश मुख से हुआ ही नहीं तो तत्काल उस के पालन करने को खड़े होजाते, हमारा सादा लिबास होता था, चलते समय आँख झुका कर चलते थे दग़ा फ़रेब, मक्कारी, चोरी, का नाम तक न होता था। आपस में सहानुभूति, घर घर में प्रेम प्यार था।

दूसरा प्रेमी:-महाराज! आज तो दशा विगड़ी हुई है, लज्जा व शर्म का तो चिन्ह नाम मात्र ही रह गया है अमृत समय तो कुम्भकर्ण की तरह सोए पड़े रहते हैं जरा जगाओ तो आँखे दिखाते हैं। परमात्मा का नाम तक नहीं लेते, नास्तिक ही नास्तिक बने हुए हैं आज्ञा कारी कहाँ। महा-राज कुछ कभी इन को कहो कि गिलास पानी का भर लाओ तो इन की आँखे चार हो जाती हैं। हम डर के मारे महाराज कुछ कह नहीं सकते, और इनकी सादगी इतनी कि प्रातः उठते ही शीशा कंघी हाथ में है शृंगार सजावट में मस्त, मगन शौच तक जाना भूल जाते हैं जब तक चाय न पिएं। झूठ, चोरी, दगा, फरेब के तो प्रायः गुरू बने हुए होते है।

तीसरा प्रेमी:-महाराज प्रायः वर्तमान काल मे इनकी आँख इतनी भ्रष्ट हो चुकी है कि जब यह घर से निकलेंगे, गली कूचे से कोई स्त्री या युवती कन्या जा रही हो तो दो चार इकट्ठे हो कर अपनी दृष्टि भ्रष्ट करते हैं, हंसी मखौल करते हैं, यह तो इनका बायें हाथ का खेल ही है, ये यह नहीं समझते कि यदि हमारी बहिन अथवा माता ऐसे जारही होती और दूसरा हमारी तरह उस पर आँख उठाता तो क्या हमें प्रसन्नता होती?

चौथा प्रेमी-महाराज! कन्याओं को देखो घर से चलेंगी; भड़कीले वस्त्र पहने हुए और चश्मा आँखों पर, हाथ की कलाई पर घड़ी, सर पर दो गुत्तें जो पीछे घुटनों तक लटकती रहती हैं सिर पर दुपट्टा नहीं, हां दुपट्टा गले में डाला हुआ है, आँख नीचे नहीं पड़ती।

पाँचवां प्रेमी:-महाराज! मैं एक आर्य समाजी सज्जन, जो आर्य समाज में प्रसिद्ध गिने जाते है उन के घर गया तो उनकी पुत्री ने सर पर दो गुत्तें बनाई हुई थी मैंने उस पुत्री को बुला कर पूछा, बेटी! तु अच्छी या तेरी मां? तो उसने कहा मेरी मां अच्छी फिर मैंने पूछा, "तु अच्छी बनना चाहती है अथवा बुरी" वह बोली "मैं अच्छी बनना चाहती हूँ फिर मैंने पूछा "तेरी माँ दो गुत्तें करती है या एक" वह बोली," एक

गुत करती है" फिर पूछा "तु दो गुतें क्यों करती है यदि अच्छा बनना चाहती है, यह सुन कर वह चुप हो गई परन्तु इसकी मां ने तत्काल उत्तर दिया" महाराज!यह तो नहीं चाहती पर इसकी अध्यापिका इसको डांन्टती है और कहती है कि तेरी मां को दो गुत्तें बनाना नहीं आती अब हम क्या करें? लड़कियों को पढ़ाना तो हुआ, मूर्ख तो न बनी रहें अब सोचो यह हैं आजकल की मातायें। जो प्रथम गुरु का अधिकार रखती हैं, वह नहीं समझती कि पुत्री के आचरण विगड़ने पर मैं कुलंकित हूंगी।

गुरू जिन्हा दे चन्दरे; चेले चौड़ चपट।

छटा प्रेमीः महाराज! लड़की जब स्कूल या पाठशाला से घर आती है आराम से लेट जाती है, उसे माता जी जरा यह कह दें कि बेटी! ज़रा छोटे भाई को पकड़ ले और मैं रोटी पका लूं तो तत्काल क्रोध से भरी हुई कहती हैं मुझ से यह नही हो सकता मैंने तो स्कूल का कार्य करना है। अब सोचो क्या विद्या यही है? जो माता को आंखें दिखाए। नाश हो ऐसी विद्या का! इससे तो अनपढ़ अच्छी, जो लज्जा शर्म युक्त, और आज्ञा कारी तो होती हैं और उन का जीवन सादा और तपस्या का तो होता है।

सन्त महात्माः—प्यारे! जो कुछ आप ने कहा सोलहों आने सत्य कहा है परन्तु मैं एक आपबीती सुनाऊं।

आप बीती

मुझे एक समाज का निमन्त्रण आया। मैं वहां गया, जब स्टेशन पर गाड़ी से उतरा तो मंत्री जी आये हुए थे, मुझे मिले और साथ ले चले। मार्ग में मुझे कहा, महाराज! हमारी समाज के एक माननीय व्यक्ति समाज के सभासद हैं, उनकी बहिन की कल मृत्यु हो गई थी आज वहां पर यज्ञ और उपदेश होगा अतः सीधे वहां चलना है। मैंने कहा तथास्तु। वहांपर पहुंचे, स्नान किया फिर सारे परिवार तथा अन्य आर्य सज्जनों ने मिल

कर अग्नि होत्र किया और मेरा उपदेश हुआ। सत्संग की समाप्ति पर मुझसे इस गृहस्थि ने जो 'मेहता, कुल के नाम से पुकारे जाते हैं कहा, महाराज! इस समय हमारा घर शोकातुर बना हुआ है, देवियां स्यापा करती हैं, कितना बुरा रिवाज पड़ गया है। आप कृपा करके तेरह दिवस तक मेरे यहां पधारें, प्रातः पुरुषों और स्त्रियों का सम्मिलत सतसंग है सांय को केवल माताओं का, दोनों समय महाराज उपदेश करें तो महाराज के उपदेशों से शान्ति आ एगी और जो बुरे रीति रिवाज पड़ गए हैं वे दूर हो जाएंगे इत्यादि! मैंने स्वीकार किया। प्यारे मैं वहीं ठहर गया, प्रातः सायं सत्संग होना आरम्भ हो गया। मेहता जी अच्छे कुल वासी भद्र पुरुष थे। प्रातः व सायं भोजन समय वे स्वयं ही मेरे हाथ पांव धुलाएं अपने हाथों भोजन लाकर मुझे खिलाएं, पश्चात स्वयं भोजन जाकर करें। कुछ दिन ऐसे बीत गए, पर मेरा भजन न बने। मैं चकित! कि किस प्रकार श्रद्धा प्रेम से मेहता जी अपने हाथों भोजन कराते हैं और मेरा भजन नहीं बनता, तो मैंने खोज आरम्भ की, एक दिन भोजन करने के समय से पहले मैं भोजन शाला में चला गया, तो क्या देखा, एक सेवक और एक विधवा सेविका दोनों भोजन बना रहे हैं। घर का कोई मेम्बर तक नहीं है, मैंने जब यह दृश्य देखा, तो मुझे भजन न बनने का कारण ज्ञात हो गया, वहां से चला आया, सायंकाल स्त्रियों का सत्संग जो हुआ करता था, आरम्भ हुआ, बहुत अधिक संख्या में देवियां सत्संग में आया करती थीं। तो मैंने उपदेश किया, अन्त में मैंने मेहता जी की धर्मपत्नी जो मेरे निकट बैठी थी और सारा परिवार भी जो वहां उपस्थित था, से कहा; बेटी! औरों के सम्बन्ध में तो मैं कुछ कह नहीं सकता, पर आपका जो भविष्य बनेगा, वह तुझे बतला दूं। वह बोली, महाराज! अवश्य बतलाएं, मैंने कहा, बेटी, तेरा भविष्य, नरक वास होगा। जब उसने यह शब्द सुना, तो सिर नीचा कर लिया, और सैंकड़ों की संख्या में जो देवियां बैठी थीं सब हैरान हो गईं, उन में से एक देवी ने दूसरी से

कहा, यह साधु क्या कह रहा है, यह नरक में जाएगी । साधू जिस का अन्न खा रहा है, उसको कहता है नरक में जावेगी, मैंने फिर दूसरी बार कहा, बेटी, देख, अग्नि में दुर्गन्ध अथवा सुगन्ध जैसी आहुति डालेगी वैसे ही सुगन्ध, दुर्गन्ध तुझे देवेगी, अग्नि सुगन्ध को दुर्गन्ध नहीं बनाएगी, न दुर्गन्ध को सुगन्ध, । अग्नि का काम खरे खोटे की जान्च करना, न्याय करना है । मैंने जो कुछ कहा है सोलह आने सत्य कहा है, तेरा भविष्य नरकवास होगा । मेरे दोबारा कहने पर वह देवी रो पड़ी, तो मैंने कहा, बेटी! सुन; मैं तुम्हें बतलाऊं कि तेरा भविष्य नरक में कैसे होगा ।

पहले यह बतलाओ कि यह सर्वाङ्गपूर्ण सुन्दर तथा स्वस्थ शरीर यह महल, माड़ी कारखाने, नौकर चाकर, धन माल, जिसकी तुम अपने को मालिका समझती हो, और मालिका हो, क्या तेरी वर्तमान की कमाई है । देवी बोली कि महाराज ! पिछले किये कर्मों का ही फल है ।

सन्त महात्मा–अच्छा । अब बतलाओ कि इस समय तक जितनी आप की आयु बीत चुकी है । इस सुन्दर शरीर से क्या पुण्य काम किया है, जो तुझे फिर ऐसा शरीर मिलेगा । कितना, अब तक धन दान किया है। क्या अपने हाथों का पक्का अन्न किसी मुहताज, यतीम, विधवा, दीन दुःखी, या किसी साधु सन्त महात्मा को दान दिया, या खिलाया ?

क्या अपने पति देव जिस की. पूंजी, सम्पत्ति. महल, माड़ियों कारखानों, की तू स्वामिनी, आ कर बनी है, जो तेरे लिये ईश्वर समान है । उसको कभी अपने पवित्र हाथों से भोजन पका कर खिलाया। क्या कभी सास श्वसुर की सेवाकी, क्या अपनी उत्पन्नकी हुई सन्तान तक को अपने हाथोंसे भोजनकराया । यदि किसी पराधीन, दीनदुःखीके द्वार पर आजाने पर उसके पुकार करने पर तुमने कुछ दिया? यदि कुछ दिया भी होगा तो नौकर से उपदेश कर के कहा होगा, कि जावो भृत्य ! इस को पैसा दो पैसा, ये ले जा, देदो । यदि इतना कर्म भी किया तो

अंहकार के साथ दान दिया, ऐसा जान कर कर्म किया। यदि आज तेरे श्वांस निकल जावें, तो तू अपना भविष्य का कोष सम्भाल। कि कितना अन्न, धन भगवान के कोष में तू ने जमा किया है, जो तुझे पुनः प्राप्त होगा। और सुन, यदि तेरा अपना बालक भोजन गृह में जाकर भृत्य से कहे, मुझे रोटी दो, तो नौकर रोटी देगा, अब आप का बालक भृत्य से कहे कि मुझे सब्जी और दो, तो भृत्य क्या कहेगा कि और सब्जी नहीं है, तो बालक चुप हो कर चला आवेगा। मान लो यदि तुम स्वयं भोजन बालक को करा रही हो, तुम से सब्जी दुबारा बालक मांगे, तो क्या यूं कहोगी और सब्जी नहीं है, अपितु अपने मुख तक का ग्रास उस की भेंट करने पर तुम्हें शान्ति आवेगी। अब, जब तुम बालक के लिये ऐसा त्याग करोगी, तो बालक तुम्हारा त्यागी, आज्ञाकारी बनेगा, या नहीं। भृत्य का खिलाया हुआ बालक क्या तेरा बनेगा? कदापि नहीं, हां तब तक तेरे आधीन रहेगा जब तक वह खान पान के आधीन है। जब स्वयं अपने पैरों पर खड़ा हो जायेगा तेरी बात नहीं पूछेगा। और सुन। सायं को सोते समय तेरा पति भृत्य से कह देवे कि अब हम दुग्ध पान नहीं करते, बारह बजे जागृत अवस्था में लाकर मुझे पिला देना। भृत्य उस समय उत्तर में कहेगा बहुत अच्छा महाराज! किन्तु तेरे पति के सो जाने पर भृत्य बैठा हुआ क्या प्रसन्न होगा, या दुराशीर्वाद तेरे पति को देगा? कैसे कहेगा कितना निर्दयी (बेरहम) है, स्वयं सोगया है मुझे दूध पिलाने के वास्ते कष्ट दे रहा है। अब बता ऐसा दूध पिया हुआ तेरे पति को सुखकारी होगा? कदापि नहीं, यदि तुम पतिव्रता हो तो तुमको पति देव सोते समय कह देवें कि देवी! मैं आज दुग्ध पान नहीं करता, मेरी इच्छा नहीं है तो तू कहेगी महाराज अब आप कुछ देर आराम करलेवें मैं आप को जगा कर दूध पिला दूंगी अब पति के सो जाने पर तू बैठी है। कोई दुःख अनुभव नहीं हो रही है कुछ समय बीतने पर दुग्ध ऊष्ण करेगी प्रेम, श्रद्धा प्यार से मधु वाणी से पतिदेव को जगायेगी दुग्ध पीलायेगी,

अब बताओ, इस दूध से पति देव के मन आत्मा पर क्या प्रभाव पड़ेगा, और तेरा भविष्य क्या बनेगा। और सास श्वसुर की अपने हाथों सेवा करने से इनके आशीर्वाद, प्यार से तेरा जन्म जन्मान्तर बन जावेगा। बेटी यह साधारण सी बातें मैं ने तुम से पूछीं हैं। अब यदि यह भी मैं पूछ लूं कि भगवान से कितना प्रेम करती हो। प्रातः कितना समय जागती है और कितना समय प्रभु की भेंट करती है। दूसरे, क्या यह प्राण बाज़ार से मिलते हैं. एक अन्धे से पूछो जो कि लाख की सम्पत्ति का स्वामी है, कि तेरी आंखों में प्रकाश आ जावे, तो बता वह क्या कहेगा। निस्संकोच हो कर वह 'यह कहेगा कि लाखों की मेरी सम्पत्ति लेलो परन्तु मेरी आंखों को प्रकाश युक्त कर दो, तो क्या लाखों की सम्पत्ति अर्पण करने पर उसकी आंखों में प्रकाश आ जावेगा ?

उत्तर—कदापि नहीं, अब तुम बताओ यह प्रकाश कहां से प्राप्त होता है। प्रभु से। अब बता तूं ने प्रभु का कभी धन्यवाद तथा गुणवाद गाया ? अब तूं बता, तेरा भविष्य नरक होगा या स्वर्ग ?

अब सब सतसंगी देवियां सन्त महात्मा की बातें सुन कर चकित हो गई एक दूसरे से कहने लगीं बहिन आज मेरे प्राण यदि भगवान ले लेवें, मैं तो सीधी नरक द्वार जाऊंगी, मैं ने बड़ी २ पाठशालाओं, स्कूलों में विद्या प्राप्त की, बड़ी २ पुस्तकें पढ़ीं, बड़े २ उपदेश भी सुने, परन्तु मैं तो भोग विलास फैशन में मस्त शरीर की पुजारिन बनी रही, बहिन, आज मुझ पर भगवान ने बड़ी कृपा की, यह सन्त महात्मा आ गए इनके उपदेश ने मुझे तो जगा दिया है मैं तो आज से घर का काम स्वयं करूंगी। अपने हाथों बड़ों की सेवा करूँगी, बहिन यह सच है जो कोई जैसाकरेगा वैसा भरेगा जो मेरी बीती सो नरक बीती, अब रही सही मेरी बन जावे तो भी कुछ तो हो ही जावेगा, अब भगवान मुझ पर दया करें मुझे सुबुद्धि प्रदान करें ताकि इस उपदेश पर आचरण कर सकूँ और दूसरी बहनों को भी जागृत करके अपना कर्त्तव्य पालन करूँ, इसी प्रकार देवियाँ आपस में चिन्तन करने

लगीं। कई देवियाँ तो बातें करती करती रोती रहीं ।

प्यारे, उपदेश समाप्त हुआ, सब देवियाँ अपने अपने घरों को चली गईं उसी दिन मैं ने ६ बजे सायं की गाड़ी पर प्रस्थान करना था। उपदेश समाप्ति के आध घन्टा पश्चात मेहता जी, मेरे पास आए, चरणों में गिर पड़े, और कहने लगे, महाराज; आज आपने मेरे घर को सच्चा स्वर्ग का रूप बना दिया है ; मैंने पूछा; कहो, क्या बात है तो वह बोले, महाराज ! मेरी धर्मपत्नि भोजन शाला में गायत्री जाप करती हुई स्वंय भोजन बना रही है, तो मैंने उससे पूछा; तुम क्यों भोजन बना रही हो, नौकर नहीं है? तो वह बोली, कि बस जो मेरी बीती, सो नरक बीती, अब रहीसही संवारनी है। मैंने पूछा वह कैसे ? वह बोली, कि मैं आज से भोजन का कार्य स्वयं करूंगी, आपको और सास सुसर, बाल बच्चों को और आए हुए सन्त महात्माओं की सेवा स्वयं किया करूंगी। इसी में मेरा उधार, सुधार, संवार और कल्याण होगा आप मुझे आर्शीवाद दें, ताकि मैं अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकूं। मैं इस समय सन्त महात्मा के वास्ते भोजन बना रही हूं क्योंकि उन्होंने ६ बजे की गाड़ीं से जाना है। महाराज! यह सब आपकी कृपा है। अब मुझे भी आशीर्वाद दें ताकि मैं भी माता पिता की सेवा स्वयं किया करूं और मेरी रही सही अवस्था बन जाए।

आत्म अभिमान

एक युवती देवी विदुषी और बहुत सुशील थी। वह घरसे बाहर जारही थी उस पर एक पुरुष ने आंख उठाई, देवी जल भुन गई, तुरन्त घर आई अपने पिता जी को बुलाया, पूछा, आप मुझे यह बतलाएं कि आज आपने दूसरे की युवती कन्या पर आंख उठाई है; पिता यह सुन कर सहम गया। लड़की से पूछा, क्यों पूछती है, तो लड़की ने कहा कि मुझ पर एक पर पुरुष ने आंख डाली है। यदि आपने ऐसा ना किया होता तो मुझ पर दूसरे की

क्या शक्ति थी जो आंख उठाता। बस इतना कह कर उसने कमरे में जाकर दरवाज़ा बन्द करके मिट्टी का तेल अपने ऊपर डाल कर आग लगा दी।

यह थी एक आत्माभिमानी देवी! ऐसी सहस्रों माताओं तथा युवती कन्याओं ने पाकिस्तान में अपने स्तीत्व की रक्षा के लिये अपने आप को अग्नि की भेंट कर दिया परन्तु दूसरे की आँख अपने ऊपर न पड़ने दी। क्या यह देवियाँ फैशन की पुजारी तथा बी. ए., ऐम. ए. पढ़ी हुई थीं? नहीं, हरगिज़ नहीं। अगर सादगी का जीवन जो कि स्त्री-जाति का प्राण है, उसे अच्छी प्रकार समझती थीं। अनपढ़ थीं या साधारण पढ़ी लिखी थीं। यह था मातृ-शक्ति का आदर्श।

पर आज कल लड़कियां बन ठन कर जाती हैं उनकी भावना यह होती है कि लोग हमे देखें।

वेद क्या आदेश करता है।

ओ३म उत्सक्थ्या अव गुदं धेहि समञ्जि चारया
वृषन्। य स्त्रीणां जीव भोजनः॥ यजु० २३ मं २१।

पदार्थः—हे! शक्तिमन, जो स्त्रीयों के बीच, प्राणियों का मांस खाने वाला, व्यभिचारी पुरुष, व पुरुषों के बीच उक्त प्रकार की व्यभिचारिणी स्त्री वर्तमान हो, उस पुरुष और उस स्त्री को बांध कर ऊपर को पांव, (पग) नीचे को सर करके, ताड़ना करके, अपनी भुजा के मध्य में, उत्तम सुख को धारण करो। और अपने प्रकट न्याय को भली भांति चलाओ।

ओ३म अवर्त्या शुन आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम्
अपश्यं जायाममह ीयमानोम धा मेश्येनो मध्वा जभार॥

ऋ०म० ४ सू० १८ मं० १३॥

भावार्थः— हे राजन्! जो पुरुष और स्त्रियां व्यभिचार करें उन को तीव्र दण्ड दे कर नाश करो॥

राजा अश्वपति अतिथियों से प्रार्थना करता है, छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है:—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नो विद्वान न स्वैरि स्वैरिणी कुतः।

अर्थात— मेरे देश में कोई भी चोर नहीं है कोईभी कंजूस नहीं है तथा मद्य (शराब) पान करने वाला भी कोई नहीं है। जो अग्नि होत्र न करता हो ऐसा पुरुष भी मेरे राज्य में नहीं है। अविद्वान नहीं है, व्यभिचारी नहीं तो व्यभिचारिनी कहां से आवेगी।

सत्यार्थप्रकाश— में ऋषि दयानन्द महाराज मनु का हवाला दे कर लिखते हैं कि पांच वर्ष की कन्या और पांच वर्ष का बालक सगे भाई भी क्यों न हों एकान्त स्थान में आपस में न बैठें।

मनु भगवान् लिखते हैं जो स्त्री व्यभिचारिनी हो उसको यह दण्ड राजा देवे कि उस व्यभिचारिनी स्त्री पर काला पोश चढ़ा कर उसे मैदान में जलाया जावे, उसे कुत्तों से फड़वा कर मार डाला जावे। और पुरुष व्यभिचारी के वास्ते लोहे का पलंग अग्नि में तपा लाल करके व्यभिचारी पुरुष को सुला कर जीते को बहुत पुरुषों के सामने भस्म कर देवें।

प्यारे :-अब सोचो, वेद भगवान् क्या आदेश करता है। उपनिषद तथा मनु भगवान् क्या उपदेश करते हैं। वर्तमान राज्य की गति को भी देखो जब राजा स्त्रीयों को व्यभिचार करने के लाईसैन्स देवे और मातृ शक्ति के स्तीत्व का इतना नाश करे उनकी कमाई राज्य कोष में प्राप्त हो और शराब के लाईसैन्स देवे, राज्य अधिकारी रिश्वतखोरी, चोरी ब्लैक करने के हिस्सेदार हों तो परमात्मा के न्याय में फिर ऐसे राज्य का भविष्य क्या होगा। व्यभिचार बढ़ाना, सिनेमा जारी करना, घर २ में स्त्रीयों की नंगी तस्वीरों का लगाना, जिस देश व जाति में मातृ शक्ति

की इस प्रकार दुर्गति और अपमान हो, भला बताओ वह देश सुख शान्ति को प्राप्त कर सकेगा ? प्राचीन भारत और वर्तमान भारत का अध्ययन करो।

॥ प्राचीन समय की वीर देवियां और पुरुष ॥

जिस भारत में भीष्म पितामह, हनुमान्, जैसे शूरवीर, गम्भीर, धैर्यशाली, ज्ञानी, ब्रह्मचारी थे। जहां पर व्यास, वशिष्ठ, बालमीक, गोतम भारद्वाज जैसे ज्ञान के समुद्र थे।

जहां पर धर्म राज शिव, दधीचि, हरिश्चन्द्र, कर्ण, और बाली जैसे महा प्रतापी सत्य मूर्ती थे। जहां पर नीति, न्याय, मर्यादा का पालन करने वाले बड़े २ शूरवीर राम, धुरेंन्द्र, जनक, परीक्षित, दशरथ, रघू जैसे राजा महाराजा थे।

जहां पर विश्वामित्र, भरत, भागीरथ जैसे कठोर व्रतधारी महात्मा जहां पर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, और धर्मराज युधिष्ठिर, भीम अर्जुन, नकुल, सहदेव तथा श्री कृष्ण बलराम सरीखे अत्यन्त तेजस्वी, ओजस्वी, आज्ञाकारी सुपुत्र सहोदर हुए हैं, जहां पर सीता, सावित्री, दमयन्ती, शकुन्तला, रुक्मणी, द्रोपदी, लोपामुद्रा, मैत्रयी, अंजना, गान्धारी; जैसी महां पति निष्ठा अत्यन्त तेजस्वी सती देवियां थीं।

जहांपर ध्रुव, लव, कुश, प्रह्लाद, अभिमन्यु जैसे महां तेजस्वी और सामर्थ्य सम्पन्न बालक उत्पन्न हुए आज उस भारत भूमि की हम सन्तान नीच, पतित, निर्बल, रोगी, मूर्ख, अल्पायु तथा पूर्णतया अभागी हो रहे हैं, क्यों?

काहू न कोऊ सुख दुख कर दाता, निज कृत कर्म भोग सब भ्राता॥

अर्थात:— कोई भी किसी के दुख सुख का कारण नहीं है अपने २ किए कर्मों का फल है।

जब भारत में अंग्रेजों का राज्य था। एक यूरोपियन लेडी को सीमा प्रान्त के लोगों ने उठा लिया था, तो वायुयानों की उड़ान आरम्भ कर दी थी, चौबीस घन्टों के अन्दर यूरोपियन देवी वापस आ गई थी, पर आज भारत की स्वतन्त्रता की शक्ति को देखो सहस्रों देवियां भारत की, पाकिस्तान में आह व पुकार कर रही हैं पर राज्य अधिकारी सिनेमा के खेलों, मांस, शराब के खाने में मस्त हैं। इनकी अपनी बहन पुत्री होती तो दर्द आता परमात्मा ही इन्हें सुमति प्रदान करें॥

ओ३म अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन् स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ॥

ऋग्वेद मण्डल ८ सूक्त ३३ मन्त्र १६

अर्थात्–ऐ स्त्री! नीचे देख, ऊपर न देख गम्भीरता से पांव रख कर चल तेरा अवयव (अंग) किसी को दिखाई न दे, क्योंकि आत्मा ही स्त्री रूप धारण करके तेरे अन्दर प्रकट हुआ है॥

(१) पुरुष की तरह ऊपर न देखे, किन्तु नीचे की ओर देखे।

(२) चलने के समय गम्भीर गति से (शरीफ़ाना चाल से) चले। पांव ज़ोर से आवाज़ करके न चले।

(३) वस्त्र से अच्छी प्रकार अपने अंगों को आच्छादित (ढक) रखे। ताकि कोई तेरा अंग दूसरों को दिखाई न देवे।

यह समझ कि आत्मा ही अपने आप स्त्री रूप धारण किए अवतरित हुआ है। प्यारे वेद भगवान् तो स्त्री जाति के लिए यह आज्ञा देता है। पर औरों के सम्बन्ध में तो कुछ कहना अच्छा नहीं, सम्भव है उन्हों ने वेद न पढ़ा, न सुना हो, पर आर्य समाजिक लोगों से पूछता हूं (जो वेद प्रचार के अधिकारी हैं) जो गूंज गूंज कर नारा लगाते हैं कि वैदिक धर्म की जय। आगे उन्हें कहना तो यह चाहिए कि अलमारी की जय॥

क्यों साहब:—यह मन्त्र वेद का सत्य है क्या आप इस के प्रचार के अधिकारी हैं? इस पर आचरण भी करते हो क्या आप की पुत्रियां तथा स्त्रीयां इस पर आचरण करती हैं? कवि ने क्या सुन्दर कहा है।

निजदोष ज्ञान है कठिन महान्, पर दोषन सघन हीहंसावत है।
दुर्गन्ध उठे कैसी ही मुख सों, निज नाक में कबहू न आवत है॥
औरन पर नित्य कटाक्ष करे, निज दोष नहीं लख पावत है।
नारायन जब निज दोष लखे, लज्जित हो शीश झूकावत है॥❀

ब्रह्मचर्य्य

ब्रह्मचर्य्य के अर्थ—ईश्वर भक्ति, ईश्वर प्रणिधान, ब्रह्म के अर्थ ईश्वर, चर के अर्थ विचरना, अर्थात्, "ब्रह्मणि चरणम्"

ब्रह्मचर्य्य—ब्रह्मचर्य्य ही एक ऐसी शक्ति है, जो मृत्यु पर विजय दिलाती और आत्मा और परमात्मा का साक्षात् कराती है, जिस ने ही इस ब्रह्मचर्य्य व्रत को धारण किया, तप किया, उसने मोक्ष, मुक्ति, के धाम को प्राप्त कर लिया।

ॐ आदित्पश्चा बुबुधाना व्यख्यन्नादिद्रत्नंधारयन्तद्यु भक्तम्।
विश्वे विश्वासु दुर्यासु देवा मित्रधिये वरूणासत्यमस्तु॥

॥ ऋ० म० ४ सु० १ म० १८॥

भावार्थ:—जो लोग ब्रह्मचर्य्य से विद्या, उत्तम शिक्षा, सत्य और धर्माचरणों को धारण करके अन्य जनों के प्रति उपदेश देते हैं वे बुद्धि को बढ़ा कर सर्वत्र प्रसिद्ध हो के आनन्द से घरों में रहते हैं॥

❀इस विषय के सम्बन्ध में विशेष कर लेखक कीं लिखी पितृ यज्ञ प्रसाद पुस्तक को पढ़ें।

"एक ब्रह्मचारिणी कन्या और उस का तप"

एक सद्‌गृहस्थी ने जो कि सन्त महात्माओं की श्रद्धा, प्रेम, त्याग भाव से अतिथि सत्कार तथा सेवा करता रहता था, एक दिन एक साधु को निमन्त्रित किया, भोजन तैय्यार हुआ; तो सद्‌गृहस्थी साधु को भोजनार्थ भोजन शाला में ले गया, जल से उसके पाँव धो, हाथ मुख के धोने को जल भेंट किया। और आसन पर बिठाया, भोजन परोस कर आगे धरा, परन्तु साधु भोजन न करके चुप चाप बैठा हुआ है॥

गृहस्थीः—(कर जोड़ कर साधु से) महाराज! कृपया भोजन अङ्गीकार करो ठंडा हो रहा है, बे रस हो जावेगा।

साधुः—क्या आप जानते हो कि भोजन के साथ साधु सन्त, विद्वानों को दक्षिणा भी दी जाती है ?

गृहस्थी-हां महाराज! अवश्य दी जाती है और मैं भी दिया करता हूं

साधु—तो पहले दक्षिणा दो, फिर मैं भोजन करूंगा॥

गृहस्थीः—महाराज! यह सब ऐश्वर्य्य पदार्थ तो भगवान् का दिया हुआ आप से महात्माओं के आशीर्वाद से मिला हुआ है। यह सभी कुछ आपका ही है, जो कुछ आप चाहें, हमारा अपना क्या है।

साधुः—पहले तुम प्रतिज्ञा करो कि जो कुछ मैं मांगूंगा सो तुम दोगे।

गृहस्थीः-महाराज! जो आज्ञा करो, हाजिर हूं।

प्यारे गृहस्थी जानता है साधु है, स्वादु तो नहीं है; घर बार त्याग और सर्व इच्छाओं कामनाओं का त्याग किया हुआ, अग्नि का रूप है. तो निर्भय हो कर कह दिया, महाराज जो आज्ञा करो।

साधुः-यह कन्या जो भोजन तैय्यार कर रही है, इसका विवाह मेरे

साथ करदो ।

गृहस्थी:—यह शब्द सुनते ही आश्चर्य में हो गया, अब प्रतिज्ञा कर चुका है; कि जो कुछ आप आज्ञा करेंगे. उपस्थित है । अब कन्या ने यह व्रत धारण किया हुआ है, कि मैं आयु पर्यन्त विवाह नहीं करूँगी । ब्रह्मचार्य्य तप का जीवन बिताऊंगी, देश की सेवा करूंगी । अब एक और अपनी प्रतिज्ञा है दूसरी ओर कन्या का व्रत है । अब करे तो कैसे करे, परन्तु साधु डटा हुआ है. अपनी दक्षिणा पर;आखिर साधु भोजन छोड़ कर चला गया । और यह कह गया; कि जब तक दक्षिणा का संकल्प जो तुम कर चुके हो पूरा न करोगे, मैं भोजन नहीं करूंगा।

अब गृहस्थी चिन्ता और व्याकुलता में है । साधु का भोजन छोड़ कर चला जाना. और पिता जी को अति व्याकुल अवस्था में देख कर कन्या ने पिता से पूछा ? पिता जी ! क्या बात है साधु महात्मा ने भोजन नहीं किया. यूंही थाली परोसी हुई धरी की धरी छोड़ गया है स्वीकार नहीं किया ।

पिता जी:—बेटी क्या बताऊं, मैं तो अब न इधर का रहा न उधर का ।

बेटी:—पिता जी! क्या बात है, कृपया मुझे बतलाईये तो सही, इतने चिन्तित और व्याकुल क्यों हो रहे हैं सम्भव है मैं इस व्याकुलता को दूर कर सकूं ।

पिता जी:--बेटी ! क्या पूर्ण कर देगी? साधु ने भोजन करने से पहले मुझ से दक्षिणा मांगी, मैंने कहा, "महाराज! जो कुछ चाहो उपस्थित है; हमारा अपना क्या है तो साधु ने मुझ से संकल्प दक्षिणा में यह मांगा है कि अपनी कन्या (तुम्हारा) का विवाह मेरे साथ कर दो।

अब मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि जो कुछ आप मांगो हाजिर है। दूसरी ओर तू ने व्रत धारण किया हुआ है, कि मैं आयु पर्यन्त

विवाह न करूंगी। अब अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करूं, तो तेरा व्रत तुड़वाऊं, तो भी मेरा नाश. यदि ऐसा नहीं करता तो भी मेरा नाश अब कैसे छुटकारा हो, अब भगवान मेरे वास्ते मृत्यु को भेज देवे तो मेरा छुटकारा हो जावे" यह कह कर बेहोश हो कर गिर पड़ा।

बेटी:—पिता जी, बस यही बात है, इसी लिए व्याकुल और बे चैन हो रहे हो। वाह यह तो साधारण बात है वह सन्तान क्या? जो माता, पिता, को अपनी सेवा में सुख शान्ति न दे कर कष्ट का कारण बने ऐसी सन्तान का तो न होना संसार में अच्छा है, आप मेरे व्रत की कुछ परवाह न करें, मैं ने अपने भरोसे पर यह व्रत थोड़ा लिया हुआ है। कोई कार्य मनुष्य अपने भरोसे से पूरा नहीं कर सकता, जब तक प्रभु की कृपा न हो। वह प्रभु व्रत पति हैं वह ही पूरण करेंगे। अब मेरा पहला व्रत यह है कि मैं माता पिता के कल्याण अर्थ अपने जीवन को अर्पण कर दूं। किस प्रकार से माता, पिता, सन्तान के हित कल्याणार्थ, संकट, विपत्तियां, सहन करते हैं कोई भी उनका जीवन पर्य्यन्त ऋण नहीं उतार सकता। मैं अपने को भाग्य शालिनी समझूंगी, कि यदि आप का संकल्प पूर्ण हो जावे, जिस से आप को शान्ति मिले। अब आप साधु महात्मा से जाकर कह देवें कि आठवें दिन आकर मेरे साथ विवाह कर लेवें, केवल आठ दिन का समय मुझे तैय्यारी करने के लिये दे देवें।

पिताजी पुत्री की बातें सुनकर चकित हो गए, दिल में ढारस बन्ध गई तो साधु की सेवा में आकर कहा महाराज! आप भोजन कर लेवें मैं जो संकल्प दक्षिणा में दे चुका हूं, उसको पूरा करने को तैयार हूं परन्तु विवाह के वास्ते कुछ दिन तैयारी करनी पड़ती है आप आठ दिन का अवकाश दे देवें। आठवें दिन आप आकर विवाह कर लेवें। साधु सुनते ही प्रसन्न हो गया, भोजन करके चला गया, अब अपने आप को विवाह के योग्य बनाने लगा।

लज्ज़तें इन्सान को करती हैं दुनिया में हलाक ।
जहर देती हैं यह ज़ालिम, शक्कर१ व शीर के साथ॥
ऐ ऐश व तुरब तुने जहां ये रोज किया ।
सुल्तान को गदा, गनी को मुहताज किया ॥
ऐश का समर तलख़ सदा होता है ।
यह कहे पैगाम वफा होता है ॥
जो औरों की तेगो अलम देखते हैं ।
वह सर पहले अपना कलम देखते हैं ॥
जो गैरों की सूरत पे होते हैं शैदा ।
वह दुनिया में रंजो अलम देखते हैं ॥

साधु से स्वीकृति ले कर घर आया । अब पुत्री से पिता जी ने आकर कहा । बेटी ! साधु महात्मा ने आठ दिन का समय दे दिया है, वह आठवे दिन विवाह करने को आ जावेगा ।

बेटीः– पिता जी! बहुत अच्छा

अब बेटी ने जिस के आश्रय हो कर व्रत किया हुआ है, उससे प्रार्थना करती है ।

प्रार्थना

ओ३म गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिनम् ।
ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि ॥ ऋ० १–८६–१० ॥

हे प्रकाश स्वरूप, मैं अन्धेरी गुफा में पड़ी हूं । चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा है ।, इस अन्धेरे में, खा जाने वाले राक्षस मुझे खाय रहे हैं, इन्हें भगाओ; मुझे जो कुछ चाहिये; वह प्रकाश है मुझे प्रकाश दो; इस गुफा में;

चारों ओर प्रकाश फैला दो। मैं पंच कोशों की अन्धेरी गुफा में रह रही हूं शरीर; प्राण; मन; आदि के पांच शरीरों में बन्द पड़ी हुई हूं अपने आप को भूल इन शरीरों को आत्मा समझ रही हूं। इस लिये काम; क्रोध; लोभ; आदि राक्षस मुझे खाना चाहते हैं। यह काम; क्रोध; आदि, अज्ञान में रह सकते हैं। उत्तम अन्धकार में ही यह फलते फूलते हैं। इस लिये हे प्राण! तुम मेरे इस गुफा के अन्धकार को नाश कर दो; अन्धकार के हटने पर यह अपने आप ही यहां से भाग जायेंगे। जब मुझ में आत्म ज्योति फैल जायगी। सब भूतों; सब प्राणियों में; फिर आत्मा दिखाई देने लगेगी तो मैं किसी के प्रति क्रोध न करूंगी; जब प्रेम सर्व व्यापक हो जायगा तो मैं किसी एक में काम आसक्त हूंगी? लोभ किस लिये करूंगी? ओह; आत्म ज्योति का प्रकाश हो जाने पर यह क्षुद्र अत्रि कहां ठहर सकते हैं। आत्म ज्योति वह ज्योति है; जिससे कि सहस्रों सूर्य; चन्द्र और विद्युतें; प्रकाशित हो रहे हैं जिस परम उज्जवल ज्योति के सामने सहस्रों सूर्य की इकट्ठी ज्योति भी फीकी है, वह प्रकाश मुझे देदो। मैं उस प्रकाश के पाने के लिये तड़प रही हूं; उस प्रकाश के पा जाने पर तो सब कुछ हो जायगा; हृदय का अन्धकार मिट जावेगा; और इन खा जाने वाले राक्षसों से मेरी रक्षा हो जावेगी। इस सत्य में मुझे विश्वास है। इस लिये हे प्रकाश स्वरूप मैं तुम से विनय कर रही हूं तुम मुझ में समाकर मेरे प्रकाश खोल दो॥

ओं शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

"हाफ़िज़ वज़ीफ़ाय तू दुआ गुफ़्तन अस्त।
वबस दरबन्द आँ मबाशोक न शनीद य शुनीद॥

अर्थात्—ऐ हाफ़ज़, तेरा काम प्रार्थना कर देना है, और बस, इस फ़िकर में न पड़ कि वह सुनी गई या न सुनी गई।

—⁂—

योगिराज भगवान् कृष्ण चन्द्र जी महाराज गीता के अध्याय ६ श्लोक ३४ में अर्जुन को आदेश करते हैं:—

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥

अर्थात्---ऐ अर्जुन! मुझ में दिल लगा, मेरी भक्ति कर, मेरे लिये यज्ञ (देशसेवा) कर, तू मुझे नमस्कार कर अपने आत्मा को मेरे साथ जोड़ तू मुझे ही पाएगा इस में ज़रा भी सन्देह नहीं।



मुझ में अपना दिल लगा, और मुझ को सच्चा मान ले।
मेरी ख़ातिर कर रियाज़त, मुझ को मालिक जान ले॥
नक़दे हस्ती को मुझे तफ़वीज तू हो जा फ़ना,
मुझ में व असल होगा, मेरे कौल पर ईमान ला।

प्यारे— अब कन्या प्रार्थना करके उठी तो वैद्य जी से जुलाब की दवाई मगंवाई. और नाई को बुलवाया, पहले नाई से रक्त निकलवाया, जितना रक्त निकला उस को एक बर्तन में इकट्ठा कर लिया, फिर जुलाब की औषधि प्रयोग की, तो बहुत सी टट्टियां आ गईं। वह भी बरतनों में इकट्ठा रखती गई। अब शरीर बहुत निर्बल हो गया, मानो हाड्डियों का पिंजरा बनगया हो अब चलने फिरने से असमर्थ हो गई, और तपेदिक के रूप में चारपाई पर पड़ी हुई है। आज सात दिन पूरे हो गये, आठवां दिन आगया, तो साधु बन ठन कर गृहस्थी के यहां पहुंच गया। अब पिताजी ने पुत्री को कहला भेंजा कि साधु आ गया है, तो लड़की ने उत्तर में कहला भेजा कि उन्हे मेरे पास भेज देवें। अब पिता जी ने साधु से कहा महाराज! आप अन्दर चलें सब काम तैय्यार है। अब साधू फूला नहीं समाता, गृहस्थि के संग हो कर अन्दर गया, जहां पर वह ईश्वर-विश्वासी

ब्रह्मचारिणी कन्या लेटी हुई थी। साधु जब वहां पहुंचा और कन्या के रूप व रंग को देखा, तो अति आश्चर्य में आकर बिना कुछ बोले पीछे को लौटने लगा। तो ब्रह्मचारिणी ने कहा! आओ महाराज, आप अपनी दक्षिणा स्वीकार करो। मैं वही हूं, जिस के आप इच्छुक थे।

साधुः- मैं आप से विवाह नहीं करना चाहता हूं।

ब्रह्मचारिणीः- महाराज! क्यों विवाह नहीं करते? क्या मैं कोई और हो गई हूं? आप भूलें नहीं मैं वही हूं, जिस पर आप लट्टू हुए थे।

साधुः- बस अब मेरी इच्छा पूर्ण हो चुकी है। मैं तेरे से विवाह नहीं करना चाहता।

ब्रह्मचारिणी- महाराज! तो क्या अब मैं स्वतन्त्र हूं, और मेरे पिता जी की दक्षिणा पूरी होगई है।

साधुः- हां तुम स्वतन्त्र हो, मैंने दक्षिणा पूरी कर ली है।

ब्रह्मचारिणीः- महाराज! अब आप तो मुझ से घृणा कर चुके हैं, पर महाराज जिस सौन्दर्य पर आप लट्टू हुए थे, ऐसा अग्नि का जामा पहने हुए अपने कर्त्तव्य से गिर गये थे उस सौन्दर्य की आकृष्ट करने वाली वस्तु अब यहां उपस्थित हैं, कहीं नहीं गई हैं। आओ अब वह दक्षिणा अपनी स्वीकार करो, निराश न होवो, आप की अमानत है। उपस्थित करती हूं।

साधुः-आश्चर्य में हो कर, वह कहां हैं, मुझे दिखलाओ।

ब्रह्मचारिणीः-ने खून टट्टी मूत्र आदि जो इस शरीर में सौन्दर्य का रूप दिखला रहे थे, कपड़े से ढके रखे थे, कपड़ा उतार कर दिखाया और बोली! महाराज! यही वस्तुएं मेरे शरीर में चमत्कार का रूप बन कर आप

को मोहित कर रही थीं, जिस पर आप लट्टू हुए थे, उठालो। साधु की आंखों में आंसू भर आए। ब्रह्मचारिणी के चरणों में गिर पड़ा और बोला, तू मेरी माता है तूने मुझ पतित को पावन किया है, तू सचमुच साक्षात् देवी है, दिव्य गुण सम्पन्न है मैं तुझे प्रणाम करता हूं, और इस अपराध के वास्ते कर जोड़ क्षमा याचना करता हूं। कि जो कष्ट आपके पिता जी तथा आपको मुझ अज्ञानीसे हुआ है आपने मुझे ज्ञान चक्षु देकर सन्मार्ग दिखाया है। नमस्कार करके चलता बना।

हरदम बज़ाते जुमला, अयाँसत आँ यके।
दर जुमला हस्त बुवद, निहाँ सत आं यके॥
दर सूरते बशर तू निगाहे चह मी कुनी।
ने ने बशर कुजा सत, अयां सत आं यके॥

अर्थात:- वह परमात्मा हर एक वस्तु, रंग रूप के अन्दर हर समय व्यापक है तू मनुष्य की शकल व सूरत को देख कर क्या कयास आराईयाँ करता है (ऐ बे समझ) यह इन्सान कहां है, यह तो सब उस परमात्मा की विचित्र लीलायें हैं।

हुसने सूरत महज बे रौनक है सीरत के बदूं।
जिन गुलों में बू नहीं, वह खुशनुमा कहने को हैं॥

तेरी बाहर दी रोशनी कम केहड़े, रोशन नूर नहीं जैचन्द अन्दर,
किसे कम न जाहरी बनत चिट्टो, भरया होया है जै गनद अन्दर।

प्यारे! वर्तमान काल में स्त्री पुरुष; युवक, युवतियां, सब इसी शरीर के शृङ्गार, बनावट, और भोग विलास में पड़े हुए आत्मिक ज्ञान से शून्य हो रहे हैं। भोग्य पदार्थ नाशवान हैं। मनुष्य हीरा जनम प्राप्त किये हुए अपने जीवन को नष्ट कर रहा है फिर चांहता है, सुख शान्ति तथा भगवत्प्राप्ति हो।

दृष्टान्त

एक राजा की रानी ने महल के उपर स्नान करते समस अपना गले का हार उतार कर खूंटी पर लटका दिया, स्नान कर चुकने पर कपड़े पहन कर चली गई कुछ देर के पश्चात् हार याद आया, तो ऊपर गई और देखा, हार नहीं है। आश्चर्य्य चकित हो कर नीचे आई! और राजा से कहा कि मेरा हार गुम हो गया है। राजा ने उसके ढूंडने का बड़ा यत्न किया परन्तु हार न मिला। अन्त में, नगर में ढिंडोरी करवा दी गई, कि जो कोई रानी का हार ढूंड करलावेगा तो एक सहस्र रुप्या उसको पारितोषिक मिलेगा, अकस्मात् एक आदमी नगर के बाहिर कहीं जा रहा था। चलते २ मार्ग में पानी का पुराना तालाब था। देखा तो उसमें उसे वही हार पड़ा दृष्टि में आया। देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ, कपड़े उतार उसके अन्दर घुसा, घुसते ही पानी के अन्दर जो मैल थी उसके कारण पानी गदला हो गया, हार दिखाई न पड़ा तो वह बार २ उसमें डुबकी लगावे पर हार हाथ में न आवे। फिर बाहिर आकर कुछ देर ठहर जावे, इतने में मैल पानी के नीचे दब जाने से पानी निर्मल सा हो जावे, फिर देखा, तो हार पड़ा हुआ है तो आहिस्ता २ जाकर छलांग लगा डुबकी लगावे, परन्तु फिर हार हाथ न आवे सायंकाल तक इसी चक्कर में पड़ा रहा, अब तंग हो कर घर आया अब बतलाए भी किसी को नहीं, । फिर प्रातः ही उठ कर गया, देखा हार पहले की भांति पड़ा हुआ दृष्टि आया। तो कपड़े उतार छलांगें लगानीं आरम्भ कीं, पर हार हाथ न आया। अन्त में थक कर राजा के दरबार में पहुंचा, और कहा, महाराज जहां पर रानी का हार है वह स्थान और हार तो मैंने देखा है आपको दिखला दूंगा। परन्तु इसको प्राप्त आप स्वयं ही करोगे। राजा ने कहा; चलो दिखलाओ।

अब स्वयं राजा, मंत्री मंडल, और सेवकों सहित उस के साथ गये। तो उसने तालाब में पड़ा हुआ हार दिखला दिया। अब राजा ने

कुछ आदमी तालाब के बीच घुसाए। अब बार २ डुबकियां लग रही हैं। परन्तु हार प्राप्त नहीं हो रहा है। अन्दर जाते ही पानी गदला हो जाने से हार दृष्टि न आवे। अब कोई साधन हार प्राप्त करने का नहीं सूझता। अकस्मात् एक ज्ञानी, महात्मा, इसी मार्ग से जाते हुए ठहर गए यह खेल सारा देखा, तो राजा से कहा, ठहरो २ मैं तुम्हें हार निकाल देता हूं। और कहा, एक दर्पण (आईना) और मिश्री की डली मंगवाओ तो सेवक उसी समय जाकर दर्पण (आइना) और मिश्री की डली लाया महात्मा ने राजा के हाथ में मिश्री की डली दी और दर्पण (आइना) को अपने हाथ में रख कर कहा, कि मिश्री की डली दर्पण (आईना) के सामने लाओ तो मिश्री का प्रतिबिम्ब दर्पण (आईना) में पड़ा। महात्मा ने राजा से कहा अब इस डली को दर्पण से निकाल लो। राजा कहता है महाराज! यह तो मिश्री का प्रतिबिम्ब है कैसे हाथ आए महात्मा ने शीघ्र से राजा के हाथ से मिश्री की डली खैंच (छीन) ली, फिर पूछा अब बताओ दर्पण में मिश्री की डली कहां है अब उस का प्रतिबिम्ब नहीं हैं। जब असल चली गई है; तो प्रतिबिम्ब कहां हो।

महात्मा ने कहा! तुम; और तुम्हारी सेना इस तालाब में दिन रात डुबकियां लगाते रहो, हार प्राप्त नहीं कर सकते, यह हार का प्रतिबिम्ब है असल हार को प्राप्त करो। तालाब के ऊपर वृक्ष था। हार ऊपर लटक रहा था। महात्मा ने कहा! ऊपर देखो, जब ऊपर देखा तो हार लटक रहा है, सभी देख कर आश्चर्य्य, चकित हो गये। जब हार उतारा गया तो तालाब में अब प्रतिबिम्ब कहां, प्यारे! इसी प्रकार वर्तमान काल में मनुष्य इस शरीर रूपी प्रतिबिम्ब पर जो कि नाशवान् है, लट्टू (मस्त, दीवाना) होकर अपने जन्म को खो रहा है। और वास्तविक आत्मिक ज्ञान का जो मार्ग है, जिस से सुख, शान्ति भगवत्प्राप्ति होती है उस से

दूर हो रहा है, काम रूपी, गदले पानी में डुबकियां लगा २ कर अपना जन्म और समय खो रहा है। नहीं समझता, कि मैं कौन हूं, मुझे क्योंकर यह मनुष्य का जन्म मिला है। मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है।

प्यारे ! कन्या ने किस प्रकार से वेद विद्या, उत्तम शिक्षा, और ईश्वर विश्वास ब्रह्मचर्य्य, तप, को धारण किये हुए साधु को धर्म उपदेश के द्वारा कुमार्ग से सन्मार्ग दिखाया, परन्तु आजकल की शिक्षा कैसी है। कवि ने लिखा है:—

न अब तादीब में शफ़क़त, न शोखी में अदब बाक़ी।
बुजुर्गों की रविश बिगड़ी, अज़ीज़ों का चलन बिगड़ा ॥

जब शत सहस्र इच्छाओं से, सब हृदय कलपित होवे।
फिर कहां प्रभु की ज्योति, से अन्तर अनुरक्त होवे ॥

जिसने ईश्वर को मन से भुलाया,
दुःखों ने फिर उसको आकर सताया ॥
प्रभु पूजा में जो हैं करते यत्न,
करें प्रेम वह सब से हो कर मग्न ॥
यह सन्देश देता है संसार सारा,
वही सब का मित्र वही सब का प्यारा ॥
इसे भूल कर किसने है सुख उठाया,
यह वेदों के उपदेश ने है फरमाया ॥

वर्तमान काल में जिस महान आत्मा (महात्मा गान्धी) ने देश को स्वतन्त्र कराया उसने ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण किया, वह अमर हो गया मृत्यु पर विजय पा गया, जब तक सृष्टि स्थित है, वह जीवित रहेगा, यह है मृत्यु को याद रखना। पर आज उसके नाम लेवाओं के जीवनों को देखो क्या यह मृत्यु पर विजय पाएंगे? कदापि नहीं। प्यारे उन महान् आत्माओं के जीवन को अपने सामने आदर्श रक्खो, जो अमर हो गए हैं, वैसे आचरण करो, अपने जीवन को सफल करो, सुख शान्ति के धाम को प्राप्त करो।

अब काम कैसे वश में किया जावे।

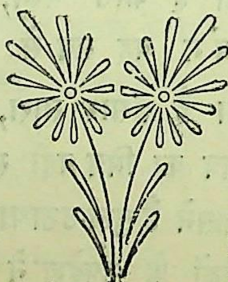
काम का स्थान है आंख।

आंख में लज्जा हो।

सदैव मृत्यु को याद रखो।

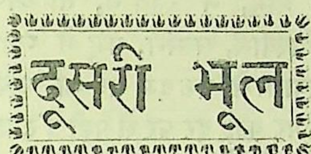
ब्रह्मचर्य्य का पालन करो।

और स्वाध्याय किया करो॥



॥ ओ३म् ॥

उपदेश (२)



कारण—लोग

अपने किए हुए पापों और बुराईयों को भूला हुआ है।

ओ३म् अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम्।
दूरमधि स्रुतेरज ॥ ऋग १-४२-३।

भावार्थ :—चोर अनेक प्रकार के होते हैं; कोई डाकू; कोई कपट से हर ले कोई मोहित करके, दूसरे के पदार्थों को ग्रहण करके, कोई रात में सुरंग लगाकर ग्रहण करने; कोई हाथसे छीन लेने; कोई नाना प्रकार के व्यवहारी दुकानों पर बैठ छल से पदार्थों को हरने; कोई रिश्वत लेने, कोई नौकर हो कर स्वामी के पदार्थों को हरने; कोई छल कपट से औरों के राज्य को स्वीकार करने, कोई धर्म उपदेश से मनुष्यों को भरमा कर गुरु बन शिष्यों के पदार्थों के हरने, कोई वकील होकर मनुष्यों को विवाद में फंसा कर पदार्थों को हर लेने और कोई न्याय आसन पर बैठ प्रजासे धन लेके अन्याय करने वाले इत्यादि हैं । इन सब को चोर जानों इनको सब उपायों से निकाल कर मनुष्यों को धर्म से राज्य का पालन करना चाहिये ।।

प्यारे ! आप सभी जानते व मानते होंगे; कि मनुष्य सुख और दुख अपने किये कर्मों के अनुसार ही भोगता है। इसमें ज़रा भी शक और संदेह नहीं है। देखो;! पाकिस्तान बना, लाखों की संख्या में पाकिस्तान से परिवार यहां आये और लाखों की संख्या में परिवार यहां से गए, जब अपने २ शहर, नगर, ग्राम, में रहते थे, तो आपस में प्रेम, प्यार, सहानुभूति, आपस में विश्वास, सत्संग, प्रभु से प्यार भी था;लाखों, करोड़ों की सम्पत्ति के स्वामी थे, एक दम सब का अपनी पूंजी पत्ति का त्याग करके आना, वहां पर कोई दूर पर से पड़ी ईंट उठा लेता तो दिल को दुखः होता था, लड़ाई तक को तैय्यार हो जाते थे, अब जब हिन्दू मुस्लिम सवाल पैदा हो कर निकास हुआ तो क्या उस समय मनुष्यता थी, बल्कि जंगली पशुओं की भान्ति मनुष्य मनुष्य को खा रहा था ।

"त्राहिमाम्, त्राहिमाम्" हो रही थी चिट्ठियां तारें आती थीं कि भगवान् के नाम पर महात्मा गान्धी से मिलो, फौज भिजवाओ, हमें बचाओ, हमें नंगे तन से निकाल लो, हम वहां भीख मांग कर खा लेंगे, इत्यादि । उस समय मृत्यु के भय के अतिरिक्त और कुछ न सूझता था। न धन माल, महल, माड़ी, अटारी, न भाई बन्धु, न पुत्र स्त्री प्यारी लगती थी, हरएक को यही चिन्ता थी, प्राण बचाओ ! प्राण बचाओ ! वह कितना भयानक दृश्य था, जब तक पाकिस्तान की सीमा (हद) पार होकर अटारी स्टेशन पर नहीं पहुंचे थे, मानो जान में जान न थी। अब जब भारत की सीमा में आगए तो उनमें जान आगई,महलों में रहने वाले,अनेकों नौकर चाकर रखने वाले, लाखों की पूंजी वाले सब कुछ छोड़ छाड़ कर यहां पहुंचे, तो घोर सर्दी गर्मी में ही कैम्पों में आकर फकीरों की झोंपिड़यों की भान्ति रहन सहन किया और लाखों की संख्या में पाकिस्तान में हमारे भाई बन्धु युवती देवियां मारे गये। किसी का किसी ने मृतक संस्कार तक न किया, और न कर सके ॥

प्यारे–बताओ, यह जो कुछ हुआ क्या बिना हमारे किए पापों और बुराईयों के यह फल मिला है ? मानना पड़ेगा कि भले ही हमारे किये कर्मों का यह फल मिला है, तो इतना फल पाते हुए हमने यहां आकर अपना कुछ सुधार किया ? क्या कुछ अपने में परिवर्तन किया ? क्या अब हम लोगों ने इतना संकट भोगते हुए ऐसे कर्म यहां आकर किए है जिस से हमें सुख शान्ति प्राप्त हो रही हो। उत्तर स्पष्टतम यह मिलेगा कि पहले से भी हम अधिक अशान्त हैं तो इसका कारण जानना चाहिए ।

प्यारे:— इसका कारण है–**लोभ देवता,**

गीता में श्री कृष्ण चन्द्र महाराज ने कहा हैं, । अधयाय १६ श्लोक २१ ।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाश नमातमनः ।
काम क्रोध स्तथा लोभस्तस्मादेत तत्रये त्यजेत् ॥ २१

अर्थात्:— काम,क्रोध, लोभ, यह तीनों आत्मा के शत्रु हैं नरक के द्वार ही हैं।

सेह दरवाज़ाए दोज़ुख अन्द ऐ ज़वां ।
तमा[1] हस्तो खशम[2] हसतो शहवत[3] बदां ॥

अर्थात:—ऐ मनुष्य काम क्रोध लोभ यह दोज़ख के तीन दरवाजे हैं ।

फारसी के कवि ने कहा है:—

दिल चूं आलूदस्त अज हिर्सोहवा ।
कै शवद मकशूफ़ इसरारे खुदा ॥

१—लोभ २—क्रोध ३—काम

सद तमन्ना दर दिल्त ऐ बुल फजूल ।
कै कुनद नूरे खुदा दर दिले मन्जूल ॥

अर्थात् :- जब हृदय सांसारिक लोभ और कामनाओं से अपवित्र है तो इस में परमात्मा का प्रकाश क्यों कर प्रकट हो सकता है। ऐ भोले जिस समय तक हृदय में सहस्रों कामनाएं विद्यमान हैं उस समय तक उस परमात्मा का प्रकाश हृदय में कैसे प्रवेश कर सकता है ?

प्यारे:-एक दिन मुझे गाजियाबाद आर्यसमाज मन्दिर में प्रातःसमय एक प्रेमी साथ ले गया वहां जाकर स्नान किया, सत्संगी प्रेमी भी आए, सन्ध्या अग्नि होत्र सम्मिलित होकर किया। पश्चात् मेरा उपदेश होकर शान्तिपाठ हुआ तो तीन प्रेमी बैठ गये और मुझसे पूछा कि महाराज ! एक प्रश्न है कृपया इसका उत्तर देवें तो मैंने कहा, मेरी समझ में यदि आपका प्रश्न आगया तो उत्तर दे दूंगा।

प्रश्नः- एक प्रेमी ने दूसरे साथी की ओर संकेत करके कहा कि यह प्रेमी और इसका छोटा भाई दोनों पाकिस्तान से मिलकर रवाना हुए, गाड़ी मे भीड़ होने के कारण जहां २ पर किसी को गाड़ी में स्थान मिल गया चढ़ गए, इसका छोटा भाई दूसरे डब्बे में सवार हो गया, घर से रवाना होते समय जितना नकद रुपया (नोट) था इसने छोटे भाई को दे दिया। अब जहां पर गाड़ी ने आकर उतारा तो जब यह प्रेमी बाहर निकला, सामान और अपने परिवार को बाहर निकाला, तो अपने छोटे भाई को ढूंडा परन्तु वह कहीं न मिला बहुत दुखी हुआ रूपया पैसा उसके पास था, न वह स्वयं मिला न कोई उसके परिवार का आदमी, इस घटना को छः मास बीत गए हैं, अब खोजना करते २ यह यहां छोटे भाई को मिला है। अब उससे यह रूपया मांगते हैं, तो वह उत्तर देता है। कैसा रुपया, किस को दिया था ? यहां तक कि बात तक नहीं सुनता। अब यह उस भाई को कतल करना

चाहता है। अब आप हमें बतलावें कि हम क्या करें?

उत्तर:—प्यारे ! अब अनुमान लगाओ, सोचो; कि जब पाकिस्तान से यहां आने लगे थे तो किस २ वस्तु से प्यार किया था ! वह सब भूल गए क्या अब भाई की हत्या करने पर धन आजावेगा ! या तुझे फांसी पर लटकाया जावेगा। तेरा परिवार सारा बरबाद हो जावेगा। अब लोभी अन्धा बना हुआ है नहीं समझता है कि सहस्रों का सामान हाथों फैंक कर अपने प्राण की रक्षार्थ भाग आया हूं और न उस छोटे भाई को भय है कि परमात्मा मुझे इस अन्याय का क्या फल देगा दोनों स्वार्थ लोभ में अन्धे होकर बीती अवस्था को भूल गये हैं फिर सुख: शान्ति कैसे प्राप्त हो।

लोभी की गति(२)

एक गृहस्थी घर आया; सौ रुपया का नोट जेब से निकाला अपनी धर्म पत्नि के हाथ में देकर कहा इसको रखले कुछ देरके पश्चात् आकर लूंगा: देवी रोटी पका रही थी, सौ रुपया का नोट लेकर चूल्हे के पीछे रख दिया, नन्हा बच्चा उसका खेलते २ चूल्हे के पास पहुंचा सौ रुपया के नोट को उठा लिया मुंह से चबाते चबाते टुकड़े २ कर फैंक दिया, कुछ देर पश्चात् वह गृहस्थी घर आया देवी से नोट मांगा, देवी झट चूल्हे के निकट गई देखा नोट नहीं है। दूसरी ओर बच्चे की ओर देखा तो नोट छोटे २ टुकड़े हुआ पड़ा है बच्चा उन टुकड़ों को मुंह में चबा चबा कर खेल रहा है जब उस गृहस्थी ने बच्चे को ऐसे करते देखा तो लोभ से अन्धा हुआ बच्चे को टाँग से पकड़ा दूसरी टाँग पर पाँव रख कर फाड़ डाला अब देवी सर फोड़ रो रही है स्वयं भी ढाएं मार २ कर सर पर राख डाल कर पीट रहा है:— "अब पछताए क्या होत, जब चिड़ियां चुग गईं खेत"।

३— यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न किया कि कौन सा रोग असाध्य है युधिष्ठिर ने उत्तर दिया था कि लोभ ऐसा रोग है जिस की कोई औषधि नहीं।

"पाप का बाप कौन है" ?

कहते हैं एक विद्यार्थी काशी में विद्या प्राप्तार्थ गया, जब विद्या प्राप्ति का कोर्स पूरा हो गया, पंडित बन गया तो गुरू जी से आज्ञा ले कर अपनी जन्म भूमी को चला, जब अपने शहर के निकट पहुंचा तो एक किसान ने इस विद्यार्थी (पंडित जी) से पूछा, प्यारे कहाँ गया था बहुत काल के उपरान्त आज दर्शन हो रहे हैं ?

पं० जी:—मैं काँशी (बनारस) में विद्या प्राप्तार्थ गया था, पूर्ण विद्या प्राप्त कर ली है, अब घर चला हूँ ।

किसान:—पं० जी ! क्या क्या ग्रन्थ पढ़ आए हो ?

पं० जी:—काँशी की पूर्ण विद्या पढ़ आया हूँ ।

किसान:—पं० जी ! मेरा एक प्रश्न है उसका उतर देने का कष्ट करें ?

पं० जी:—बताइऐ, क्या पूछते हो ?

किसान:—पं०जी, पाप का बाप कौन है ?

पं० जी: यह प्रश्न सुन कर आश्चर्य में पड़ गए सोचने लगे कि कितने ग्रन्थ मैं ने पढ़े कहीं भी ऐसे ग्रन्थ व उत्तर को न पढ़ा गया अभी तो मैं नगर में नहीं पहुँचा शहर के बाहर ही एक किसान ने ऐसा प्रश्न किया है जिस का उत्तर मुझे नहीं आता । धन्यवाद है प्रभु का, यदि नगर में पहुँचा होता तो ऐसे ही कोई पहुंचते ही प्रश्न मुझ से कर लेता तो मेरा तो किया कराया सब खाक में मिल जाता अब किसान से नम्रता से कहता है, भाई मैंने तो बनारस में विद्या पढ़ी, बड़े बड़े ग्रन्थ पढ़े पर आपके प्रश्न को नहीं पढ़ा, कृपया तू बतादे इसका क्या उत्तर है अर्थात पाप का बाप कौन सा है ।

किसान:—वाह पं० जी वाह ! बस मूर्ख का एक प्रश्न सुना उसका उत्तर नहीं आता इतने लम्बे २ ग्रन्थ पढ़े; माता पिता का धन खर्च किया

और इतने वर्ष पढ़ने में गंवाए तो इस से क्या लाभ !

पं० जीः—भाई, अब तो जो बीत गई, सो बीत गई उसकी चिन्ता क्या करूं भगवान का ज्ञान तो महान् है कोई भी उसे पूरा नहीं कर सकता और न किसी ने पूरा किया है अब आप कृपा करके इस प्रश्न का उत्तर मुझे अवश्य बतलावें ।

किसानः—पं०जी, अब तुम ऐसा करो शहर में जा कर फलां गली से अमुक कूचे में चले जाना, वहां पर एक वेश्या रहती है उस से जा कर पूछो पाप का बाप कौन है, वह बतलायेगी ।

पं०जी ने किसान से तो छुट्टी पाई पर प्रश्न का उत्तर उस ने स्वयं न दिया दूसरे का द्वार खटकाने को कहा और उत्तर देने वाली भी वेश्या ! सोच में पड़ गया कि कैसे उसके पास जाऊंगा यदि किसी ने जाते हुऐ मुझे देख लिया तो मेरी तो पढ़ी पढ़ाई सब विद्या भी समाप्त हो जावेगी मैं तो नगर में फिर मुंह दिखाने के योग्य भी न हो सकूंगा यदि प्रश्न का उत्तर प्राप्त किये बिना नगर में गया, किसी ने यह प्रश्न पूछ लिया, तो उसका उत्तर न देकर मेरी विद्या किरकरी हो जायेगी, इसी उधेड़बुन में लगा हुआ नगर में पहुँचा अब किस से पूछे कि अमुक वेश्या किस मकान में रहती है । बड़ी लज्जा की बात है अन्त में एक अनजान बालक आया उससे धीरे २ पूछा तो उस ने संकेत से बताया कि वह घर वेश्या का है । अब पण्डित जी चौकन्ने इधर उधर ताक रहे हैं कि कहीं से कोई मुझे अन्दर जाते देख न ले, अन्त में शीघ्रता से वेश्या के द्वार के अन्दर प्रवेश कर गये अब हांप रहा है, वेश्या ने देखा कि एक नवयुवक ब्राह्मण आ पहुंचे हैं तुरन्त उठी, सन्मुख आई, कर जोड़ नमस्कार करने को निकट आने लगी तो पं० जी ने कहा कि दूर, दूर दूर रहो ।

वेश्या :-महाराज आप ने बड़ी कृपा की मुझ अभागिन के घर को अपने चरणों से पवित्र किया है

पं० जीः— बस २ बहुत बातें न करो (इधर उधर की खट २ से चौंकता है) मेरा एक प्रश्न है उस का उत्तर मुझे दे दो।

वेश्याः— महाराज प्रश्न का उत्तर भी मिल जाएगा (आसन भेंट करके) कृपा करके बैठिये, ज़रा विश्राम कीजिऐ।

पं० जीः— मुझे आसन्न इत्यादि की आवश्यक्ता नहीं है ना ही मैंने बैठना है मुझे अपने प्रश्न का उत्तर चाहिए वह मुझे शीघ्र देदें कि पाप का बाप कौन है ?

वैश्या ने एक सुन्दर गालीचा निकाल कर पलंग पर बिछाया, कर जोड़ कर प्रार्थना करती है।

वेश्याः-महाराज ! बैठिये विश्राम करें, कुछ मेरा फल फूल स्वीकार करें प्रश्न का उत्तर भी दे दूंगी, गृहस्थी के दर पर ब्राह्मण देवता का आना, फिर उसका गृहस्थी सत्कार न करे तो गृहस्थीं का कुछ नहीं रहता, अतिथि सेवा तो भगवान् का मिलाप कराती है। कहावत है:— "मेहमान आया, भगवान् आया"। महाराज ! आज मेरे भाग जागे आपने चरण छुआए हैं

पं० जी :—मेरे प्रश्न का उत्तर देदो बस आपका यह सत्कार भी और फल पुष्प उत्तर मिल जाने पर पूरा हो जावेगा।

वेश्याः— महाराज ! ज़रा पलंग पर बैठिये तो सही अभी उत्तर देती हूं

पं० जी बैठ गए वेश्या अन्दर गई एक थाल में अशर्फियां रख लीं उपर कीमती सुन्दर रुमाल से ढका, दोनों हाथों से उठा कर लाई सामने आ कर पं० जी की भेंट करते हुए कहा, महाराज ! इसे स्वीकार करो यह थोड़ी सी मेरी श्रद्धा की भेंट है।

पं० जी :— ओह ! जा, जा, दूर कर मुझे इस की आवश्यक्ता नहीं है बस मुझे प्रश्न का उत्तर दे दे।

वेश्या :— महाराज ! कृपा करो श्रद्धा से भेंट करती हूं मेरा गृह कैसे पवित्र होगा (थाली से थोड़ा सा रुमाल हटा कर)स्वीकार करो।

पण्डित जी ने थाल से रुमाल दूर हुआ देखा ! यह तो सोने की अशर्फियां हैं तो धीमी आवाज़ से कहता है नहीं मैं नहीं लेता, वेश्या (अब रुमाल को कुछ और सरका कर) ने हाथ जोड़ कर कहा, महाराज पहले इसको स्वीकार करो फिर उत्तर भी दे दूँगी घबराते क्यों हो ।

पण्डित जी; अब दिल में सोचने लगे यह तो अशर्फियां हैं कोई खाने की वस्तु तो नहीं है जो मेरा जन्म भ्रष्ट होजावेगा दूसरा कोई देख भीं तो रहा, लोग पैसे पैसे के वास्ते कितने धक्के खाते और पाप करते हैं मुझे बिना कमाए इतनी अशर्फियां दे रही है तो वेश्या से कहा, अच्छा तू बार २ आग्रह कर रही है और श्रद्धा से भेंट कर रही है, अतिथि सत्कार करना तेरा धर्म था मैरा लेना भी अनुकूल है। ले लिया। और अच्छा तो अब मेरे प्रश्न का उतर दे दो ।

वेश्या अन्दर चली गई अन्दर से थाली मे फल मिठाई जल लाई और कहा महाराज इसे भी अङ्गीकार कर लों, मेरा घर पवित्र हो जावे कुछ तो मुख में डाल लों ॥

पं० जी-:ओहो, यह क्या करती है, मेरा जन्म भ्रष्ट करती है जा, जा दूर ले जा अशर्फियों का थाल उठा कर कहा बस यही तेरी श्रद्धा की भेंट पर्याप्त है।

खड़ा हो कर चलने लगा अब प्रश्न का उत्तर पूछना समाप्त हो गया। भूल गया)

वेश्या ने पं. जी का हाथ पकड़ लिया और कहा महाराज ! क्या करते हो इस को क्यों उठा कर ले चले हो, कौन सी कमाई की है, जो इसे उठा रहे हो।

पण्डित जी ने लज्जा के मारे सिर नीचा करके कहा मेरे प्रश्न का उत्तर तो दो ।

वेशयाः --मूर्ख ! अभी तक तुझे प्रश्न का उतर नहीं मिला

कि पाप का बाप कौन होता है यद्दि अब तक बनारस से विद्या पढ़ी है ?

पंडित लज्जित हो कर चरणों में गिर पड़े क्षमा मांगी और कहा, तुम धन्य हो, जो मुझ भूले हुए को तूने सन्मार्ग दिखाया ! सच मुच "पाप का बाप लोभ है" ! नमस्कार कर के तुरन्त बाहर चला गया।

प्यारे ! यह गाथा न जानें ! यह प्रकृति बड़ी रूप वती है इस को लक्ष्मी नाम से पुकारा जाता है लक्ष्मी का पति विष्णु भगवान है।

विष्णु लक्ष्मी

कहते हैं एक बार एक गृहस्थी के द्वार पर विष्णु भगवान साधु सन्त का भेष करके गए गृहस्थी श्रद्धालु प्रेमी, अतिथि सेवा करने वाला, उदार हृदय था साधु को द्वार पर देखा तो हाथ जोड़ कर नमस्कार किया, और प्रार्थना की, कि महाराज, । कृपा करके आईये, अन्दर पधारिये, सन्त महात्मा ने कहा बस हमें भिक्षा देदो और कहा प्यारे 'पानी बहता अच्छा साधु रमता अच्छा'। फारसी के कवि ने भी कहा है:-

"दरवेश रवाँ रहे तो बेहतर, आबे दरया बहे तो बेहतर"

गृहस्थी ने फिर प्रार्थना की, महाराज ! यह सब कुछ आप का ही है। आप कृपा कर के, चरण धुआएं और इस गृह को पवित्र करें।

सन्त महात्मा ने कहा, देखो प्यारे, तुम बार बार श्रद्धा से मजबूर कर रहे हो मैं तुम्हारा कहना तो मान लूँ पर मेरी एक शर्त है, यदि मानो, तो ठहर जाऊंगा ।

गृहस्थी – महाराज, आदेश करें।

सन्त महात्मा:-देखो प्यारे, हमारी शर्त यह है कि ठहरता हूं मैं तुम्हारे

कहने पर, परन्तु जाऊंगा मैं अपनी इच्छा से,स्वीकार हो तो ठहर जाऊंगा।

गृहस्थी:- (चरणों में शीश झुका कर), वाह महाराज! सब कुछ परमात्मा का और आप का दिया हुआ है, हमारा अपना क्या है, आयु पर्यन्त आप यहां पर रहो हमारे भाग उदय होंगे यह धन, दौलत, माया, काया सब भगवान् की है आप भगवान् के प्यारे, कि जिस की पूंजी उसी की भेंट मुझे स्वीकार है।

सन्त महाराज:—अच्छा प्यारे चलो, अन्दर जा कर गृहस्थी ने सुन्दर आसन तकिया लगाया जल ला कर सन्त के पांव धोए, मुहं हाथ धुला कर लघु आहार भेंट किया, खूब श्रद्धा से सेवा आरम्भ कर दी, सन्त महात्मा खुब भजन कर रहे हैं गृहस्थी का कुछ काल सेवा करते बीत गए एक दिन लक्ष्मी एक बूढ़ी कुबड़ी स्त्री का रूप बना कर मैले से कपड़े पहने हुए हाथ में डंगोरी और लोटा बगल में गुदड़ी लिए हुए उसी गृहस्थी के द्वार पर पहुंची और अलख जगाई, गृहस्थी की दृष्टि पड़ी तो नौकर को बुलाया और कहा इस बुढ़िया को भिक्षा दे दो, नौकर भिक्षार्थ आटा उठा कर बुढ़िया को देने लगा।

बूढ़िया:—प्यारे! इस को क्या करूंगी कहां ले जाऊं, कोई मेरा ठिकाना है, जो जा कर पकाऊंगी मुझे तो दो रोटियाँ दे दो।

भृत्य ने गृहस्थी के पास जा कर कहा महाराज! वह तो आटा नहीं लेती। पकी हुई रोटी मांगती है।

गृहस्थी:—अच्छा तो दाल रोटी ले जाकर दे दो।

भृत्य:—महाराज। रोटी दाल किस में ले जाऊं।

गृहस्थी:—छवी प्याला कमरे में पड़ा होगा उठा कर उस में दे दो, और फिर छवी प्याले को बाहर फैंक देवेगी।

भृत्य छवी प्याला उठा रोटी दाल घर से ले कर बुढ़िया के पास गया

और कहा लो यह पक्की रोटी और दाल है, खा लो,पुनः यह वर्तन एक ओर फैंक देना।

बुढ़िया:—प्यारे ज़रा ठहर जावो मैं अपने वर्तन गुदड़ी से निकालती हूं इस में दे दो।

बुढ़िया ने गुदड़ी में से एक थाली एक कटोरा जो सोने के बने हुए थे निकाले इस में दाल रोटी ली और खाने लगी, तो भृत्य यह निरीक्षण कर चकित हो गया कि यह बुढ़िया सोने के वर्तन में रोटी खा रही है चकित हो कर निरीक्षण करता रहा, बुढ़िया जब रोटी खा चुकी तो पात्रों को एक ओर फैंक दिया और वहां से प्रस्थान किया, भृत्य ने सोने के पात्रो को जब फैंके हुए देखा तो दौड़ता हुआ गृहस्थी के पास आया और कहा।

भृत्य:—महाराज! बुढ़िया को छवी प्याले में रोटी लाकर दी, किन्तु उसने अपने पात्र गुदड़ी से निकाले, इस में ले कर भोजन किया, भोजन कर पात्र गली में फैंक दिये हैं। पर वह पात्र स्वर्ण के हैं।

गृहस्थी:—क्या वह पात्र स्वर्ण के हैं? जो बुढ़िया ने फैंके हैं?

भृत्य:—हां, महाराज अभी गली में पड़े हैं (दौड़ता गया, उठा लाया)

गृहस्थी:—अरे—यह तो सच मुच स्वर्ण को ही है अच्छा इन को स्वच्छ करके अन्दर अलमारी में रखदो। फिर पूछा वह बुढ़िया कहां है, नौकर बाहर गया तो देखा बुढ़िया नहीं है। दूसरे दिवस वह बुढ़िया पुनः आई। भिक्षा मांगी तो पूर्ववत दाल रोटी प्राप्त हुई, बुढ़िया ने गुदड़ी से स्वर्ण के पात्र निकाले, भोजन लिया और खाया, पुनः वह पात्र फैंक दिये, चली गई अब भृत्य ने पुनः गृहस्थी से कहा, और पात्र स्वच्छ कर अलमारी में रखदिये गये, तो गृहस्थी देख कर अत्यन्त चकित हो

गया, कि दाल रोटी खिलाई सैंकड़ों रूपये के पात्र स्वर्ण के प्राप्त हो गये, भृत्य से कहा कि कल बुढ़िया जब पुनः आवे तो मुझे तुरन्त सूचना देना अब तीसरे दिवस पुनः वह बुढ़िया आई, और भृत्य बुढ़िया को देखते ही गृहस्थी के पास चला गया और कहा कि महाराज, वह बुढ़िया पुनः आगई है, गृहस्थी लोभ में अन्धा हो कर दौड़ता हुआ आया और बुढ़िया से कहने लगा !

गृहस्थी:— माता ! कहां पर रहती हो, बाहर क्यों बैठी हो, आओ भीतर आजाओ, आराम से बैठो ।

बुढ़िया:—प्यारे-मेरा कोई निश्चित रहने का स्थान नहीं है, भगवान् आश्रय रहती हूं, तेरे गृह का पवित्र अन्न श्रद्धा युक्त मुझे भाया है । तू प्रभु का पुजारी है, आती हूं तेरा अन्न खा जाती हूं, बस अब भिक्षा दे दो, तेरे भीतर आकर मैं ने क्या करना है।

गृहस्थी:—धन्य हो माता जी, मेरा क्या है, सब कुछ प्रभु और आप का ही दिया हुआ है आप वृद्ध अवस्था में हैं, आप यहां पर ही आकर ठहरें एक विशेष कमरा स्वच्छ करा देता हूं आसन इत्यादि लाये देता हूं, स्वयं सेवा किया करूंगा, आप की सेवा से मेरा जन्म सफल हो जायेगा ।। इत्यादि वाक्यों से और श्रद्धासे याचना की, किन्तु बुढ़िया मना करती रही जब गृहस्थी बाहर जा कर पाओं पड़ा फिर प्रार्थना की तो वृद्धा ने कहा ।

वृद्धा—प्यारे—तुम ठहरने को तो वाध्य करतेहो, अच्छा तोयह है कि अब भी मेरा कहना मान लो मुझे जाने दो, यदि अपने कार्य सिद्धिकेलिये तुम वाध्य करते हो तो मेरी एकबात है उसेमानो तोठहर जाऊंगी अन्यथा नहीं

गृहस्थी, माता जी उपदेश दो जो आप कहेंगी वैसे ही करुंगा ।

बुढ़िया-: आप के गृह में जो साधु ठहरा हुआ है उसे निकाल दो, तब तो

आकर ठहरुंगी ।

गृहस्थी:- बस यही बात है, माता जी, यह साधु तो बहुत काल से यहां निवास करता है वह हमारे आधीन है उसे ठहरायें य निकाल दें ।

वृद्धा:- तो पहले उसे निकाल दो तो भीतर आऊंगी ।

गृहस्थी:—बहुत अच्छा, अभी निकालता हूं आप जाएं नहीं ।

गृहस्थी भीतर गया और साधु से इस प्रकार कहा ।

गृहस्थी:—सन्त जी महाराज, मैं बहुत दिनों से आश्चर्य में हूं ।

सन्त महात्मा:—आश्चर्य में क्यों हो क्या बात है ?

गृहस्थी:—महाराज आश्चर्य में हूं कि सन्तो की वाणी सत्य कर्मी होती है जोकुछ वह मुख से कहते हैं वही करते हैं पर मैं चकित हूं आप पर, कि आप ने आरम्भ में कहा था कि 'साधु रमता अच्छा, पानी बहता अच्छा' क्या आपने ऐसा कहा था कि नः ।

सन्त महात्मा—हां प्यारे मैंने ठीक ऐसा कहा था ।

गृहस्थी:—तो फिर महाराज आप एक ही स्थान पर ठेहर गये हैं आप का काम चलते फिरते रहना संसारिक लोगों को उपदेश करना सन्मार्ग दिखाना है ।

सन्त महात्मा:—प्यारे-कहा तो मैं ने ठीक था और सदैव ऐसा ही किया करता था, पर आप की श्रद्धा त्याग भावना से ठहर गया, श्रद्धा से तो मनुष्य भगवान् को भी बांध लेता है, गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा है:-

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वापरां शान्ति मचिरेणाधिगच्छति ।।

अर्थात् जितेन्द्रिय तत्पर हुआ श्रद्धावान् पुरुष ज्ञान को प्राप्त होता है, ज्ञान को प्राप्त होकर तत्क्षण भगवत् प्राप्ति रूप परम शान्ति को प्राप्त होता है।

गृहस्थी – महाराज गीता में ठीक कहा गया है परन्तु श्रद्धा की भी कोई सीमा होती है। हम गृहस्थी जन हैं जल तक दूसरे के द्वार पर जाते हुए नहीं पीते क्यों; इस लिये कि इस की सेवा का भार कब उत्तारेंगे बड़ी श्रद्धा से यदि हमें कोई वाध्य भी करता है तो थोड़ा सा स्वीकार कर लेते हैं यह तो नहीं करते जैसा आप ने किया है, अर्थात आप तो साधु लोग हैं साधु तो त्यागी तपस्वी होता है तो श्रद्धा से कहीं कुछ मिल गया ले लिया फिर चलते बने, श्रद्धा यह थोड़ी कहती हैं कि श्रद्धालु की श्रद्धा को भी सदैव के लिये समाप्त करदो और सदैव के लिये उसी श्रद्धालु पर बैठे रहो, चाहे वह मरे य जिए।

सन्त महात्माः-(हंस कर) प्यारे–आज तो तुम्हारी बातों में मुझे बड़ा आनन्द आरहा है, आज तक ऐसा कभी आनन्द नहीं आया, आप तो आज सच्चे त्यागी विद्वान् के रूप में हो कर वार्तालाप कर रह हैं।

गृहस्थी:-महाराज ! (लोभ में अन्धा हुआ) आप इन बातो को छोड़ मेरी प्रशंसा न करो मैं तो आज सत्य २ ही आप से कह रहा हूं, कि आप अपने कहने पर चलो, मैं तो समझता था कि आप सच्चे त्यागी साधु होंगे किन्तु आप तो भीतर से कुछ और निकले।

सन्त महात्माः—(प्रबल हास्य में कहा) आज खूब आनन्द आ रहा है देखो प्यारे घबराईये मत, एक वात सुनो और उसे सुन कर न्याय भी उस का तुम ही करो।

गृहस्थीः —क्या बात है ? आप कहिये मैं शीघ्र ही निर्णय कर दूंगा आप समय न नष्ट करें, वास्तिवक बात करें,हम गृहस्थी लोग हैं आप जैसे बेकार थोड़े हैं जो पकी पकाई मिल गई आराम से खाया और लेट गए न काम न काज ॥

सन्त महात्माः—प्यारे बात यह है कि तुम्हें स्मरण होगा कि जब तुमने

मुझ को अपने गृह में ठहरने को वाध्य किया था, प्रथम तो मैं ने ठहरने से इन्कार किया था, पर तुम्हारे बार २ वाध्य करने पर इस शर्त पर ठहरा था कि ठहरता हूँ, तुम्हारी इच्छा से और जाऊँगा अपनी इच्छा, पर अब बताओ ऐसा मैं ने आपको कहा था य नहीं, फिर तुमने स्वीकार किया था।

गृहस्थीः—(क्रोध में आकर)महाराज ! कहा होगा हम व्यवहारी लोग हैं, कोई साधु सन्त थोड़े हैं, जो कुछ कहा उसी पर डटा रहा नदी कभी एक किनारे नहीं बहा करती, कभी इधर कभी उधर आप तो दरया दिल हो, बस जितनी मेरी समर्थ थी आपकी सेवा की और भी तो सारा संसार पड़ा है आप भी अपने कथन पर चलो, आप ने कहा था साधु रमता अच्छा बस अब चलो ॥

सन्त महात्माः—प्यारे, पहले तुम यह बताओ कि तुमने यह स्वीकार किया था कि मैं जाऊँगा अपनी इच्छा से ।

गृहस्थीः—हां २ महाराज ! कहा था बस भूल हो गई अब कृपा करो क्षमा करो !

सन्त महात्माः—प्यारे अब हम जाएंगे अपनी इच्छा पर जैसा कहा था वैसा ही करेंगे ॥ गृहस्थी अत्यन्त क्रोधित हो कर घर पहुंचा ।

स्त्री ने पति को अति दुखी व्याकुल अवस्था में देखा, चकित हो कर पूछा आज क्या बात है जो इतने अति व्याकुल, दुखी हो रहे हैं ।

गृहस्थीः— क्या बताऊं प्रातः से दुखी हो रहा हूं कुछ भी नहीं सूझता सर चकरा रहा है ।

देवीः— क्यों क्या बात है ?

गृहस्थीः-क्या बताऊं हृदय जला हुआ है मन तो चाहता है विष

खा कर अभी प्राण दे दूं ।

देवी – (दुखी हो कर) क्यों क्या बात आज हो गई है । क्या कोई काम काज में घाटा पड़ गया है, कोई तार विदेश से आ गई है ?

गृहस्थीः– घाटा क्या सारा उजाड़ा हो रहा है ।

देवीः— क्यों कैसे ? आप कहते क्यों नहीं, क्या बात है ?

गृहस्थीः-- सुन, वह कुबड़ी बुढ़िया आती रहती है उस को दाल रोटी पहले दिन दी, तो उस ने सोने की थाली, कटोरा अपना निकाला इस में लिया भोजन खा करके बर्तन यहां छोड़ गई । तो हम ने इस को अलमारी में स्वच्छ कर के रख दिया । इसी प्रकार उस को तीसरा दिन आज हो गया है, वह ऐसे ही करती है तो मैं ने सोचा यदि इस बुढ़िया को अपने यहां ठहरा लिया जाये, तो यह खाएगी दो रोटी दाल और देगी सोने का कटोरा व थाल ! तो हम सोने से भरपूर हो जावेंगे। हमारा लगेगा कुछ नहीं और बनेगा सब कुछ । तो मैं ने बुढ़िया से याचना की कि तुम हमारे अन्दर आकर ठहरो। मकान खान पान अच्छा दूंगा दिल से सेवा करूंगा बड़ी नम्रता से याचना की अन्त में वह मान गई. पर एक शर्त साथ रखी, वह क्या कि इस साधु को जिस को तुम ने अपने यहां ठहराया हुआ है इस को निकाल दो, तो मैंने कहा बहुत अच्छा, यह साधारण बात है साधु हमारे अधीन है हम उसके अधीन नहीं हैं, तो मैं ने साधु से बार बार प्रार्थना की, क्रोध से भी कहा, पर वह मानता नहीं और कहता है जाऊंगा अपनी इच्छा से, अब बता क्या करूं अब बुढ़िया जाती है तो हमारा सारा नाश होता है इस बेकार निकम्मे साधु के ठहरने से हमें क्या लाभ, अब करूं तो क्या करूं, साधु तो अकड़ा हुआ है, जैसे कोई घर का स्वामी बना हुआ हो खिलखिला कर हंसता है जिस से मुझ को दुखः हो रहा है मेरी सुनता ही नहीं ।

देवीः-- बस यही बात है ! आप ऐसे ही व्याकुल और बेचैन हो रहे हैं ।

कोई साधु के बाप की पूंजी हमारे यहां रखी हुई है, जो वह ऐसी बातें करता है देखो अभी उसे बाहर निकाल देती हूं, आप यहां बैठें ॥

देवी क्रोध में हो कर चली और साधु के पास पहुंची और कहा, महाराज आप स्वस्थ तो हैं कोई कष्ट इत्यादि तो आपको यहां नहीं है ।

महात्मा:– देवी कोई कष्ट नहीं ईश्वर की कृपा से सब आनन्द मंगल है।

देवी:– महाराज! हम गृहस्थी जन हैं, हमारा कर्त्तव्य है कि दर पर आए अतिथि साधु सन्त महात्मा की सेवा करें, सो प्रभु की कृपा से इस समय तक हमारा समय बहुत अच्छा व्यतीत होता रहा, व्यवहारी लोगों की सदैव एक अवस्था नहीं रहती. कभी ऊंच, कभी नीच । यद्यपि यह होता तो अपने किये कर्मों का फल ही है, महाराज ! आपतो हमारे पूजनीय हो माता पिता के रूप हो, आप से क्या छुपाएं मेरे पति देव कीं अवस्था वह अब नहीं रही जो पहले थी, जबकि आपको श्रद्धा उदारता से ठहराया था, अत: ! अब हम से वह सेवा नहीं हो सकती साधु सन्त सदैव संसार के कल्याण करने वाले होते हैं अत: ! अब आप हमें आर्शीवाद देकर आज यहां से चले जावें और भी संसार में अनेकों आपके पुजारी भक्त प्यारे होंगे उनके यहां जाकर विश्राम करें फिर कभी प्रभु की कृपा होगी तो आपको हम बुला लेंगे।

सन्तमहात्मा: देवी ! तुमने जो कुछ अपनी बुद्धि अनुसार कहा है सत्य कहा होगा पर देवी, हमें यहां पर से चले जाने में कोई कष्ट तो नहीं होगा, पर बात यह है कि हमने आपके पति देव से आरम्भ में यह कहा था कि तुम हमको ठहरा तो रहे हो, पर प्यारे हम ठहरेंगे तुम्हारी इच्छा पर, और जायेंगे अपनी इच्छा पर, उन्होंने स्वीकार किया था अत: अभी हमारी इच्छा यहां से जाने की नहीं हो रही, जब इच्छा होगी चले जाएंगें, ।

देवी:– (क्रोधित होकर) महाराज ! आपतो ढीठ साधु हो; आग उठाने

आई घर की स्वामिन बन बैठी की तरह आप चिमट रहे हो; यही साधु पना है, प्रेम प्यार श्रद्धा से जो सेवा की गई इसको भी मिलिया मेट कर रहे हो कोई हम सदैव के ठेकेदार तेरे थोड़े हैं? अब कृपा करो उठाओ अपना लोटा, सोटा; लंगोटा; बाहर चलो, मैं दरवाजा बन्द करती हूं नहीं तो फिर.......... पछताओगे॥

सन्तमहात्मा:- (हंस कर), देवी बहुत अच्छा अब हमारी इच्छा भी जाने की होगई है हम जाते हैं। बस लोटा सोटा; लंगोटा उठाया चल पड़े।

देवी ने दरवाज़े को ताला लगाया, दौड़ी हुई पति के सामने आकर कमरे की चाबी भेंट कर बोली, बस यही बात थी। साधु फकीर तो हमारे दर के भिखारी और फिर करें हम से मक्कारी, मैंने दो बातें सुनाई हैं बस तत्काल खड़े हो लोटा, लंगोटा इत्यादि उठा चले गये,॥

गृहस्थी:-(हंस कर बोला) देवी! आपने कमाल किया, आज अनहोनी तूने कर दिखाई॥ अब दौड़ता हुआ बाहर आया, तो क्या देखा, कि वह बुढ़िया भी अपनी गुदड़ी समेट के चली जा रही है, तो बुढ़िया से बोला, माता जी वह सन्त चला गया है, आओ ठहरो बुढ़िया बोली, लोभी, जो बर्ताव महात्मा से तू ने किया है, मेरे साथ भी वही करेगा तेरा कोई धर्म ईमान य कोई स्वामी भी है,? कहती हुई चली गई,,

"अब पछताए क्या होत, जब चिड़ियां चुग गई खेत"

विनाश काले विपरीत बुद्धि।

अर्थात्- जब मनुष्य के नाश होने का समय आता है तो बुद्धि उलटी हो जाती है इस प्रकार लोभी मनुष्य की बुद्धि नाश हो जाती है। लोभी मनुष्य को लोभ वश हो जाने से अपनी सुध बुध नहीं रहती, माता पिता भाई बन्धु गुरु, सब घृणित दीखते हैं, प्यारे, लक्ष्मी तो विष्णु भगवान् की स्त्री ही है जहाँ विष्णु होगा लक्ष्मी तो पति के संग रहेगी। साधु सन्त तो वैष्णव रूप होते हैं गृहस्थी ने सन्त महात्मा की सेवा की तो लक्ष्मी भी

आने लगी थी, अब गृहस्थी ने (सन्त विष्णु) को निकाल दिया। तो लक्ष्मी कैसे ठहरे। प्यारे विष्णु सारे संसार की पालना करता है। जो गृहस्थी साधु सन्तों तथा संसार के प्राणी मात्र की सेवा और प्यार करता है, ईर्षा, द्वेष, लोभ लालच से रहित हो कर जो कुछ इसके पास होता है वह भगवान् का समझता है, इसका जीवन यज्ञ मय होता है। 'यज्ञो वै विष्णुः' अर्थात यज्ञ विष्णु का स्वरूप है, जो मालिक और मालिक के प्यारों से प्यार करेगा। सेवा त्याग भाव से, वह स्वामी की सम्पत्ति का स्वामी बनेगा। सुख और शान्ति को प्राप्त होगा वर्त्तमान काल में धन व सम्पत्ति जो प्राप्त की जाती है या की जा रही है, बड़े धनी से धनी को पूछो कि तू सुखी है, शान्त है, वह स्पष्ट कहेगा कि मेरे जैसा कोई संसार में दुखी न होगा, इसका कारण! दूसरों को दुख दे कर धन कमाया, लोभी हिरसी लालची हो कर कमाया, तो विष्णु फिर कैसे आवे? विष्णु के विना लक्ष्मी कैसे सुख देवे? वह पति के संग से सुखी होती है। अब धनी ने धन कमाना चाहा पर विष्णु को अपने घर से हटा दिया। लूटना सीखा, दान पुण्य से रहित हो गया। प्यारे, तू ऐसे धन के कमाने में दुख; इसके सम्भाल रखने में दुख, इसके चले जाने में दुख ही होगा। लोभी की गति सदैव ऐसी ही रहती है।

माया के खेल

माया दो प्रकार की जो कोई जाने खाये,
एक मिलावे प्रभु को एक नर्क ले जाये।
माया मेरे प्रभु की मोदो सब संसार,
जा की चिट्ठी उतरी सोई खर्चन हार॥
कबीरा माया वेसवा दोनों की एक जात,

आवत को आदर करे जात न पूछे बात ।

कबीरा माया मोहनी मोहे जान सुजान,
भागे हूं छूटे नहीं भरि भरि मारे बाण ।

माया का सुख चार दिन कहां तु गहे गवाँर,
सुपने पायो राज धन, जात न लागे बोर ।

करँक पड़ा मैदान में कूकर मिले लख कोट,
दावा कर कर लड़ी मरे अन्त चले सब छोड़ ।

माया माथे सींघड़ा लम्बे नौ नौ हाथ,
आगे मारे सींघड़ा पाछे मारे लात ।

अर्थात:——मायाके मस्तिक पर बड़े लम्बे २ नौ नौ हाथ के सींग होते हैं, आते समय सींग मारती है जिस से अहंकार के मारे सीना तन जाता है और जाते समय पीछे से लात मारती है कुबड़ा बन जाता है दर दर का मोहताज फिरता है ।

गुरु को चेला विष दे, जो गान्ठी हो दाम,
पूत पिता को मारसी यह माया के काम ।

तन की जाने मन की जाने जाने चित की चोरी,
वह साहब से क्या छुपावे जिन के हाथ में डोरी ।

लोभी की गति

ज़र की जो मुहबत तुझे पड़ जायगी बाबा,
दुखः इस में तेरी रूह भी पायगी बाबा ।

हर खाने हर पीने को तरसायगी बाबा,
दौलत जो तेरे यहां ही न काम आयगी बाबा ।।

तू लाख अगर माल के सन्दूक भरेगा,
है यह यक़ीन आख़िरश इक दिन तू मरेगा ।
फिर बाद तेरे इस पर कोई हाथ धरेगा,
वह नाच मज़ा देखेगा और ऐश करेगा ।।
और रूह तेरी कबर में चिल्लायगी बाबा–ज़र की...

इस के तो वहां ढोल व मरदंग बजेगी,
और रूह तेरी कबर में हसरत से जलेगी ।
वह खाएगा और तेरे ताईं आग लगेगी,
ता हशर तेरी रूह को फिर कल१ न पड़ेगी ।।
ऐसा यह तुझे गोर२ में तड़पायगी बाबा–ज़र की...

गर होश है तुझ में तो बखीली का न कर काम,
इस काम का आख़िर को बद होता है अन्जाम ।
थू करेगा कोई कह के कोई देवेगा दुशनाम,३
ज़िन्हार न लेगा कोई हर सुबह तेरा नाम ।।
पैज़ारें तेरे नाम पे लगायगी बाबा–ज़र की...

दौलते दुनयां की बेजा है हवस,
कबर में जब हाथ ख़ाली जाएगा ।
काम कारू के न आया मालो ज़र,
मनअमो बेजा है दौलत पे घमन्ड ।।

१—आराम २—कबर ३—गाली

हरीस दौलते दुनया न इतना हो मनअ़म,
ग़नी जो दिल के हैं उन को गदा समझते हैं।

अख़ीर कार यह ख़ाक है मसकन सब को,
अहिले दौलत को बुलन्द आज मकान करने दो।

मरतबा आली नहीं पाता असफ़ले माल से,
जानते हैं अहिले दानश जिन को अकले होश है।
सरका रूतबा पावों को हरगिज़ कभी मिलता नहीं,
इस से कया होता, ज़रदोज़ो अगर पापोश है॥

यह दुनयां आज मनअ़म है, तेरी कल तेरे दुशमन की,
ज़ने बदकार कब पाबन्द होगी एक शौहर की॥

सम्पत्ति और जीवन की तुलना

सम्पत्ति से भोजन तो प्राप्त हो सकता है, परन्तु भूख नहीं ।
सम्पत्ति से नरम बिछौने मिल सकते है, ,, नींद नहीं ।
,, पौष्टिक भोजन लिया जा सकता है ,, शक्ति नहीं ।
सम्पत्ति से पुस्तकें खरीदी जा सकती हैं ,, विद्या नहीं ।
सम्पत्ति से साथी बन सकते हैं ,, मित्र नहीं ।
सम्पत्ति से नौकर रख सकते हैं ,, सच्चा सेवक नहीं ।
सम्पत्ति से ऐनक खरीद सकते है ,, नजर नहीं ।
सम्पत्ति से भोगविलास की कामनाएं पूर्ण हो सकती हैं ,, आत्मिक आनन्द नहीं ।

सम्पत्ति से भौतिक सुख मिल सकता है परन्तु आध्यात्मिक नहीं।
,, ,, भूषण खरीदे जा सकते हैं ,, सुन्दरता नहीं।
,, ,, प्रशंसा करने वाले मिल सकते हैं ,, हित चिन्तक नहीं।
,, ,, मसजिद मन्दिर बना सकते हैं ,, धर्म नहीं।
,, ,, दिखावे का मान हो सकता है ,, हार्दिक मान नहीं।
,, ,, औषधि खरीद कर सकते हैं ,, स्वास्थ्य नहीं।

राजा भोज

इतिहास में लिखा है कि राजा भोज के पिता जब मरने लगे तो अपने भाई मुञ्ज को भोज का हाथ सौंप कर कहा कि जब तक यह अयोग्य है तुम राज्य करना। इस के योग्य होने पर राज्य इसे दे देना। राजा स्वर्गवास हो गया, मुञ्ज ने भोज को पढ़ाना आरम्भ कर दिया, जब भोज को तीव्र बुद्धि पाया, तो लोभ वश हो कर मन्त्री को कहा कि भोज का सिर काट कर मेरे पास लाओ, मन्त्री पाठशाला में गया भोज को अवकाश पर लिवा लिया। उसे जंगल में लेजा कर मुञ्ज की सारी बात सुनाई भोज ने कहा, कि चाचा लोभ वश हो कर मेरा सिर चाहता है तो बड़ी प्रसन्नता की बात है। पर मैं कुछ शब्द लिख देता हूं उन्हे दे देना।

मान्धाता कब गत स्त्रिभुवन विजयी राज्ञा सत्यव्रतः।
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः।
अन्येचापियुधिष्ठिर प्रभतयो याता दिव भूपतेः।
नकेनापि सगंतो वसुमती मुंज! त्वया यास्यति ॥

अर्थात:—सतयुग में मानधाता जो पृथ्वी का भूषण समझा जाता था अब कहाँ है जिस राम ने पुल बान्ध कर समुद्र पार कर परक्रमी

रावण का वध किया था कहाँ है ऐ राजन । बड़े बड़े शूरवीर, युधिष्ठिर भीषम, हरिश्चन्द्र अन्य महान तेजस्वी राजा हुए पर ऐ चचा तू इस राज को छाती पर लाद कर ले जावेगा ! मंत्री ने पत्र ले लिया भोज को जंगल में बिठा कर स्वयं मुञ्ज के पास पहुंचा पत्र भेंट किया जब यह पत्र मुञ्ज ने पढ़ा तो पश्चाताप किया मन्त्री से कहा, मेरे भतीजे भोज को लाओ, मन्त्री तत्काल जाकर भोज को लाया । मुञ्ज ने क्षमा मांगी राज भोज को सौंप कर वन में चला गया ॥

प्यारे:- देखा जब अपने पाप और बुराई के किये कर्म सामने आए तो तत्काल कुमार्ग से सुमार्ग प्राप्त किया । प्यारे! इस लोभ वश आकर दुर्योधन ने महाभारत का युद्ध करके धर्मात्माओं, शूरवीरों का नाश कराया, स्वयं नष्ट हुआ, जिसका फल आज तक भारत मां भोग रही है । राजा कंस ने अपने पिता उग्रसैन को कैद किया, और अपनी बहिन के छः पुत्रों का नाश किया अन्त में उसकी कैसी गति हुई । औरंगजेब ने इस लोभ वश अपने पिता को कारावास में डाला, भाईयों को कत्ल करवाया, कलङ्क का टीका आज तक लगा हुआ है और लगा रहेगा । महमूद गजनवी ने इस लोभ वश गजनी में दो२ रुपया को आदमी बेचा, अन्त में चिल्ला चिल्ला कर तड़प कर मरा ।

अंग्रेजों ने जब भारत का राज्य प्राप्त किया था क्या उस समय स्वार्थ और लोभ वश हो कर प्राप्त किया था! नहीं कदापि नहीं, किन्तु त्याग से प्राप्त किया था, तो सैंकड़ों वर्ष राज्य करते रहे अन्तमें वह यहाँ से निकाले गए तो इसका कारण क्या था इसका कारण लोभ, कैसे गावों गावों में शहर व नगर नगर में यहाँ तक कि घर घर में लोभ का जंजाल फैला कर, घर घर में फूट डलवाई । एक ही घर में रहने वाले दस मनुष्यों को छिन्न भिन्न किया, क्यों ? इसलिये कि मेरा राज्य स्थिर रहे । भारत को खूब लूटा खून की नदियाँ बहाई, तो क्या वह स्थिर रहा । और जब

उन्होंने यहाँ से राज्य छोड़ा तो क्या भारत वासियों ने उन से राज्य प्राप्त करने में कोई लड़ाई झगड़ा किया, क्या बारूद बन्दूक, तोप, या एटम् बम्ब चला कर उनको निकाला बताओ वह कौन सा शस्त्र चलाया गया जिससे वह प्रसन्नता पूर्वक बिस्तर बान्ध कर इङ्गलैंड जा पधारे।

प्यारे:—उस समय भारत वासी भारत माता के पुजारी, त्यागी, तपस्वी, एक बन गये थे उनकी नौ जवानी ने अपनी जान को हथेली पर रख कर अपने आपको स्वाहा किया। अनेकों वीर देवियों ने जेल यात्रा की अपने कलेजे के टुकड़ों को भारत माता को स्वतंत्र कराने में अर्पण किया। क्या यह लोभ था नहीं कदापि नहीं किन्तु त्याग था। जेल में दस वीर जाते पीछे से बीस और खड़े हो जाते थे, धन्य हैं वह वीर देवियाँ और वह वीर नवयुवक जिन्हों ने अपने तप और त्याग से अपने आपको न्योछावर करके भारत माता को स्वतंत्रता दिलाई। यह खद्दर की टोपी जो महात्मा गान्धी के नाम से पुकारी जाती है जो उस समय इस टोपी को पहनता था योरपीन लोग उसको देखकर अपने वास्ते तोप समझते थे उसके पीछे सी. आई. डी. वाले आदमी नियत कर दिए जाते थे एक खद्दर की टोपी की इतनी शक्ति थी, धन्य है वह महात्मा गान्धी जिस ने भारत माता को स्वतंत्र कराया। अमर हो गया अमर ही रहेगा जिस ने अपने तप से ही राज्य प्राप्त किया था। अब सोचो वर्तमान काल में राज्य करने वाले राज कर्मचारी राजाधिकारी उस बापू का नाम लेकर काम तो करते हैं, क्या उसके आदर्श जीवन को सामने रखते हैं? नहीं, कदापि नहीं क्या वह मांस खाता था, शराब पीता था, सिनेमा देखता था, भोगबिलास में फंसा हुआ स्वार्थी था! आज उसे सारा संसार महात्मा नाम से क्यों पुकारता है? क्या उसने दुनियाँ से वोट लिऐ थे कि मुझे महात्मा बनाओ? नहीं कदापि, नहीं अच्छा और सोचो यदि किसी देश के बादशाह की मृत्यु हो जावे तो दूसरे राज्य सहानुभूति

प्रकट करने के लिए अपने राज्य का झन्डा नीचे करें, पर महात्मा गान्धि क्या भारत का राष्ट्रपति था, प्रधान मन्त्री था, नहीं ! नहीं ! किन्तु वह तो एक साधु, तपस्वी, लंगोट बन्द, खद्दर कफनी पहनने वाला भगवान का सच्चा पुजारी था। वह बेताज बादशाह था।

१६५० की बात मेरे सामने जो बीती घटना है वर्तमान काल के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी शिमला पधारे तो प्रतीत हुआ शिमले की म्युनिसोपल कमेटी ने राष्ट्रपति के स्वागतार्थ तीस सहस्र रुपया व्यय का बजट पास किया और व्यय किया गया अन्य पार्टियों ने तो परमात्मा जाने कितना खर्च किया होगा ! जो भिन्न २ दी गई और जनता कह रही थी, कि जितना व्यय राष्ट्रपतिके स्वागतार्थ अब शिमला में किया गया है योरोपियन राज्य में वायसराय के आने पर भी नहीं हुआ था, इस प्रकार निर्दयतासे भारत का खर्च होता देखकर मुझे बड़ा दुख हुआ लाखोंशरणार्थी कैम्पों में पड़े हुए अभी तक सर्दी गर्मीमें तड़फ रहे हैं केवल एक कांग्रेसी नेता जो भारत का सिर है जबअपने मानसन्मान दिखावेके वास्ते भारत काइतना व्यय हो, उसे परवाह तक न हो, तो शेष राज्य अधिकारियों का क्याकहना !

भाई योरोपियन लोग तो हमें अपना गुलाम समझते थे वह अपना शासन दिखाने के वास्ते हमें ऐसा रूप दिखाते थे अब तो ईश्वर की कृपा से परतन्त्रता से छूटे, स्वतन्त्र हैं, और हम सभी एक दूसरे के भाई बन्धु हैं और एक दूसरे को भली प्रकार जानते हैं अब आप लोग ऐसे बहुरूपिये पन बन कर क्यों भारत माता की पवित्र पूंजी को नष्ट करते हो ? जितना सर्वाधिकारी तपस्वी त्यागी मितव्ययी होगा उतने ही इसके कर्मचारी भारत के कल्याणकारी हितैषी बनेंगे, छोटे सदैव बड़ों का अनुकरण किया करते हैं अब बंगलों में बिजली के पंखों के नीचे विश्राम करने का समय चला गया है किन्तु भारत माता की उन्नति के वास्ते आपको जागना होगा रात्रि को जाग जाग कर अपनी प्रजा की गली कूचों में घूम २ कर दुख दर्द की सुध बुध करनी होगी, सी० आई० डी० का कार्य आपको करना होगा

तब सत्य, न्याय की वास्तविकता आप को शोभा देगी ! एक बार महाराष्ट्र के एक राजा ने वायसराय को निमन्त्रण दिया और साथ ही महात्मा गान्धी को भी निमन्त्रित किया वायसराय की गाड़ी पहले महाराष्ट्र में पहूंची तो राष्ट्र की फौज, पुलिस, ने चारों ओर स्टेशन पर घेरा डाल रखा था और जब वायसराय स्टेशन से बाहिर कार (मोटर) मे बैठा तो कई मोटर कारें आगे पीछे पुलिस अधिकारी इत्यादि और गुप्त रूपसे वायसराय कार में बैठा फिर पीछे कई मोटर कारें और पुलिस की कारें थी ऐसा क्यों किया गया वह इस लिए कि वायसराय को अपने जीवन का भय था कि कही से मारा न जाऊं भारत का राजा हो कर अपनी प्रजा से डरे क्यों! वह स्वार्थी लोभी अभिमानी थे अपने जैसा अपनी प्रजा को नही समझते थे परन्तु वायसराय के पश्चात जब महात्मा गान्धी की गाड़ी स्टेशन पर पहुंची तो सारी महाराष्ट्र प्रजा नर नारी दर्शनों को प्यासी फूलों के हार लिऐ खड़ी थी लोग महात्मा गान्धी के पांव की धूल को उठा कर मस्तिशक पर लगाते थे नगर को सजाया गया, गली कूचे साफ किऐ गये सारा नगर महाराष्ट्र फूला न समाता था एक लंगोटी बन्द की पूजा इस प्रकार क्यों, जिन से योरोपियन प्रजा काँपती थी यह था चरित्र, तप, त्याग प्रजा की सहानुभूति, वह भारत माता के लिए जागा और हमें जगा गया है। ऐ! राजाधिकारियो इसकी मृत्यु होने पर कौन सा देश या कौन सा मुल्क है चाहे किसी भी मत का राज्य क्यों न हो कि जिस किसीने इसकी मृत्यु पर अपने राज्य का झन्डा न झुकायाहो सभी ने सिर झुकाया था यह क्यों! वह यूँ कि वह स्वार्थसे रहित, और नाम मात्र भी मन में इच्छा तक नहीं थी कि भारत के स्वतन्त्र होने पर मैं राज्य अधिकारी बनूंगा और भारतको लूटूँगा अपना शासन करूँगा अपितु वह काँग्रेस का एक कौड़ीका मैम्बर भी नहींथा परन्तु काँग्रेस गान्धी थी और गान्धी काँग्रेस था, वह मितव्यई, वह तपस्वी, त्यागी, अनुरागी था, लोभी नहीं था वह भगवान् का प्यारा था, भगवान् की प्रजा से प्यार करता

था स्वयं मनुष्य बना। हमें मनुष्यता का आदर्श अपने जविन से बनाकर दिखला या। अब विचारो! कि इन राज अधिकारियों में से कोई ऐसा माई का लाल है जो अहिंसा और सत्य का पुजारी हो और मितव्यता से कार्य करे सुनोः- राजा के प्रति वेद क्या आदेश करता है:—

ॐ रक्षाणो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षाणः सुमख प्रीणानः।
प्रतिष्फुर वि रुज वीड्वंहो जहि रक्षोर्महि चिद्वावृधानम् ॥

ऋ. म. ४. स. ३-१४

भावार्थः— वही राजा लोग यश के भागी हैं कि जो दुष्ट पुरुषों की दुष्टता को दूर करके और श्रेष्ठ पुरुषों की श्रेष्ठता बढ़ा के राज्य का निरन्तर पिता के समान अर्थात पिता अपने पुत्र की पालना करता, वैसे पालन करें।

ऐ राज्य अधिकारियो, कर्मचारियो, सम्भलजाओ उस समयको सामने लाओ जिस समय आप परतन्त्र थे स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किस प्रकार का मनुष्यता का जामा पहना था कितना तप त्याग किया था, कहावत है 'तपों राज, राजों नरक' स्वतंत्रता लूटने, रिश्वत लेने, ब्लैकमार्किट के जाल फैलाने, तेरा मेरा पन के बदले नहीं मिली थी जिस कदर तप त्याग बलि-दान से इस स्वतंत्रता को प्राप्त किया है इस प्राप्त की हुई स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कई गुणा अधिक तप त्याग करो तो सुरक्षित रहोगे अन्यथा याद रखो जिस प्रकार से वह अंगरेज, सैंकड़ों वर्षों से राज्य करते हुए एक दम बोरिया बिस्तरा ले कर इंगलैंड जा बैठे; यह वही हाल तुम्हारा परतंत्रता प्राप्ति का होगा। उस महात्मा गान्धी के जीवन को लक्ष्य रखो, प्रातः काल पांच बजे स्वंय जागो, परिवार को जगाओ, पहले मालिक से प्यार करो, आस्तिकता के पुजारी बनो स्वाध्याय करो। और मितव्यता और शुद्ध बुद्धि से कार्य करो भोग बिलास में स्वंय तथा अपनी सन्तान को फंसाने से बचो। सादगी और तप का जीवन व्यतीत करो, भारत माता के हितैषी बनो, बहुत लैक्चर बाजी न करो थोड़ा कहो और अधिक

अपने किए हुए पापों और बुराइयों को सदैव सामने रखो, और अपने नित्य कृत्यों की स्वंय प्रतिदिन जांच करो, भारत की प्रत्येक नर नारी से अपनी आत्मा के समान प्यार करो, यदि ऐसा करोगे तो भारत का उद्धार और सुधार होगा, और देश का सम्मान होगा, तुम्हारा कल्यान होगा॥

लोभ को वश करने के साधन

१ अस्तेय (चोरी न करना)

२ सन्तोष कीर्ती (दान), परोपकार करना,

इस पर आचरण करोगे, फिर सदा सुख शान्ति के मालक बन जावोगे।



तीसरा उपदेश

तीसरी भूल

सुख सम्पत्ति के कारण को भुला दिया

कारण – क्रोध

संसार के भीतर देखें अनेकों प्रकार के जीव जन्तु वास कर रहे हैं ! चियूंटी से ले कर हाथी पर्यन्त कोई भी नहीं चाहता, कि मैं दुखी रहूं प्रत्येक की यह कामना है कि मैं सदैव सुखी रहूँ इच्छा या कामना तो सभी रखते हैं सुखी रहने की, पर क्या सुख के पारसल कहीं बाहर से आते है, नहीं कदापि नहीं, प्यारे सुखः, दुख का प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य के अपने अधीन है। कहावत हैं 'जैसा करोगे वैसा भरोगे,' भगवान् ने मनुष्य को कर्म करने को स्वतंत्र बनाया है, देखो एक तरफ बदी है, दूसरी ओर है नेकी, यदि तुम बदी की ओर चलो तो नेकी से दूर होते जाओगे, यदि नेकी की ओर चलोगे तो बदी से दूर होते जाओगे, अर्थात एक मार्ग है धर्म का, दूसरा मार्ग है अधर्म का ! अधर्म करने से मिलता है दुखः, धर्म करने से मिलता है सुख। धर्म का मूल कारण क्या है। सन्त तुलसी दास ने कहा है:-

दया धर्म का मूल है, नरक मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घट में प्राण॥

सुख का साधन

सुख का जीवन प्रेम है दुख का मूल विरोध।
मूल पाप का बोझ है मुक्ति का पथ बोध।।
युग युग, पावे कीर्ति, युग युग पाये मान।
देश भक्ति में प्राणि जो! करते हैं बलिदान।
कठिन प्याला प्रेम का, पिये जो प्रभु के हाथ।
चारों युग जीता रहें, रहे प्रभु के साथ।

सन्त कबीरः-

प्रेम न बाड़ी उपजे, प्रेम न हाट विकाये।
राजा प्रजा जेह रुचे, सीस देह ले जाये।
प्रेम हरी को रूप है, त्यों हरी प्रेम स्वरूप।
एक हुए दोय यूं बसें, ज्यों सूर्य और धूप।

शास्त्र कार कहते हैं 'प्रीती पुर्वं सुखम्!' अर्थात् जहाँ प्रेम है वहीं सुख है। प्रेम के साधन, अहिंसा, शौच, दया, अब बताओ वह कारण? जिस से हम दुखी और अशान्त हो रहे हैं।

ओ३म् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यमयि धेहि। बलं मसि बलं मयि धेहिओजो ऽस्योजो मयिधेहि। रसिमन्युं मयिधेहि। सहो सि सहोमयि धेहि। यजुःअ० १६ म० ६

प्यारेः-मनुष्य का उद्देश्य प्रकाश प्राप्ति है। प्रकाश के लिए तेल अर्थात वीर्य चाहिये तेल के रखने के वास्ते दिया (बल) चाहिये फिर दियाके भीतर बत्ती (ओज) चाहिये फिर दियासलाई (मन्यु) चाहिये। अब प्रकाश ही प्रकाश है इस के बुझने की रक्षाथ (कवर) ढकना चाहिये, वह

है सहन शक्ति। प्रकाश के नाश करने वाली है आन्धी (क्रोध) आन्धी जब चलती है, स्वयं अंधी हो कर चलती है। इस को अपनी सुध बुध नही होती, और ऊंचे ऊंचे वृक्षों को, समुद्रों में चलने वाले जहाजों को, आकाश में उड़ने वाले हवाई जहाजों को, ऊंचे से ऊंचे मकानो को, पल में गिरा देती है। इस प्रकार क्रोधी मनुष्य आन्धी की भान्ति स्वयं अन्धा हो जाता है, छोटा बड़ा, अपना, पराया, नेक व बद्, सत्य असत्य की जाँच इस को नहीं रहती, अब इस के वास्ते यानी हमारा प्रकाश सदैव स्थापित रहे। तो अपने लैम्प पर ढकना चढ़ाओ सहन शक्ति का, वह अहिंसा दया शौच का ढकना बस ऐसा करने से आन्धी अन्धी ही हो कर नष्ट हो जावेगी परन्तु प्रकाश स्थिर रहेगा।

रामलाल:- बस क्रोध के आजाने पर मनुष्य को अपनी सुध बुध नहीं रहती कह स्वयं जलता रहता है। वह कभी सुख सम्पत्ति और शान्ति को प्राप्त नहीं कर सकता यह लोक प्रसिद्ध बात है कि क्रोध बड़ा चांडाल है इससे तो भगवान् भी दूर भागता है।

सन्त महात्मा:-ओ३म्॥ पराहि मे विमन्यवः पतन्ति वस्यइष्टये।
वयो न वसतीरुप॥ ४ ॥ ऋगवेद-१-२५-४

भावार्थ:-जैसे उड़ाए हुए पक्षी दूर जाकर बसते हैं वैसे ही क्रोधी जीव मुझ से दूर बसें। और मैं भी उन से दूर बसूं। जिससे हमारा उल्टा स्वभाव और धर्म की हानी कभी न होए।

देखो वेद भगवान् ने क्रोध के सम्बन्ध मे क्या उपदेश किया है! कि न क्रोधी के निकट बसूं और न वह मेरे साथ ही बसे। ऐसा होने से धर्म की रक्षा होती है।

अर्थात्--भगवान् क्रोधी को निकट नहीं आने देते और अपने साथ नहीं रहने देते, क्रोध का स्थान कौनसा है इसका स्थान है वाणी। क्रोधी आदमी की वाणी बाण का काम करती है। स्वयं जली हुई रहती है दूसरों को

जलाती रहती है इसकी वाणी मे निम्न लिखित दोष आ जाते हैं।

वाणी के दोष।

झूठ बोलना,	व्यर्थबोलना;	वादविवाद करना,
गाली देना,	निन्दा चुगली;	कटु वचन,
कठोर वचन,	असभ्य वचन,	अशुभ वचन;
खुशामद,	विश्वास घात,	छल,
शराब पीना,	मांस खाना,	तम्बाकू पीना,
भंग पीना,	चरस पीना,	अफीम खाना,।

तामसिक आहार

अब बताओ, क्रोध के आ जाने से मनुष्य की अवस्था कैसी हो जाती है। कोई ऐसा दोष है जो इसके होने से न होता हो। बल्कि यह बड़े २ ज्ञानी तपस्वियों को गिरा देता है।

तपस्वी साधु और जिज्ञासु

एक तपस्वी महात्मा नगर के बाहर एकान्त स्थान में रहते थे मधुर भाषी शील स्वभाव के थे, नगर में उनकी बड़ी प्रशन्सा थी वह प्रसिद्ध महात्मा गिने जाते थे। एक भगवत प्यारे ने महात्मा जी के सदगुणों को सुना। जिज्ञासु रूप होकर शहर से चलकर महात्मा जी के स्थान (कुटिया) पर पहुंचा और नतमस्तक हो कर नमस्कार किया चरणों में बैठ गया।

सन्त महात्माः—प्यारे ! आप कहां से पधारे हैं और आपका यहां कैसे शुभागमन हुआ है।

जिज्ञासुः—महाराज की नगर वासियों ने बड़ी प्रशंसा की आप तपस्वी

त्यागी, वीतराग। महात्मा हैं । मैंने सुना ! दिल बड़ा इच्छुक हुआ । कि दर्शन करूं और कुछ जिज्ञासा प्राप्त करूं, अतः श्री चरणों में आया हूं ।

सन्त महात्मा:–जल पान करेंगे ?

जिज्ञासु:– नहीं महाराज, जल पान तो मैं कर आया हूं मुझे केवल थोड़ी सी अग्नि चाहिये ।

सन्त महात्मा:– प्यारे यहां तो अग्नि नहीं है। यहां कोई हुक्का, तम्बाकू आदि तो नहीं पिया जाता। और कोई सेवा हो तो बतलाऐं ।

जिज्ञासु:– महाराज ! मैं भी हुक्का सिगरेट नहीं पीता यदि आप कृपा करें तो मुझे थोड़ी सी अग्नि दे दें ।

सन्त महात्मा:– मैं पहले कह चुका हूं यहां अग्नि नहीं है, होवे तो दूं ।

जिज्ञासु:– महाराज ! सन्त महात्मा त्यागी होते हैं। थोड़ी सी हीं दे दो। आपके कमी थोड़ी हो जावेगी ।आपका उपकार होगा, मेरा संवार होगा।

सन्त महात्मा:–अरे तू मूर्ख है, जब कहा कि अग्नि यहां नहीं है, फिर कहता है थोड़ी सी दे दो।

जिज्ञासु:– महाराज ! क्रोध न करें। यह तो सत्य है कि बाहर तो अग्नि नहीं है मैं देख रहा हूं पर आप अन्दर से लाकर थोड़ी अग्नि दे देवें आपकी बड़ी कृपा होगी।

सन्त महात्मा:– अरे मूर्खों के सिर, क्या प्रातः काल आकर सिर खाया है जब कह दिया है अग्नि नहीं है। फिर कहता है अन्दर से ला दो । क्या अन्दर छुपा रक्खी है ?

जिज्ञासु:– (चरणों में झुक कर, नम्रता से हाथ जोड़ कर) महाराज ! कितनी दूर से आशावादी होकर आया हूं। आपकी बड़ी प्रशन्सा सुन करके, अब खाली न लौटाओ। बस थोड़ी सी–

इतना कह ही रहा था कि सन्त महात्मा ने लठ ले लिया, क्रोध से अग्नि की न्यायीं हो कर कहा कि जाता है यहां से कि नहीं। लगाऊं दो चार तेरा दिमाग, ठीक करूं, कम्बख्त कहीं के, प्रातः काल आकर सताया है। अग्नि दो, अग्नि दो।

जिज्ञासु:- बस महाराज! मेरी कामना पूर्ण होगई है, अब आप बैठिये, अब नहीं मांगूंगा आपका धन्यवाद, (और नम्रता से कहा) महाराज आप तो कहते थे कि मेरे अन्दर अग्नि बिल्कुल नहीं है। अब यह अग्नि का अंगारा कहां से आगया। सन्त हो कर झूठ बोलते हो।

सन्त महात्मा बात सुनते ही जिज्ञासु की शान्तावस्था और अपनी जली भुनी क्रोधितावस्था को देखकर अत्यन्त लज्जित हुआ। जिज्ञासु के चरणों में पड़ा, क्षमा मांगी, और कहा धन्यहो प्यारे तू महान आत्मा है। आज तूने मेरे जन्म को सफल कर दिया है। और मेरा सदा के लिए जीवन परिवर्तन कर दिया है।

इतर की मिट्टी में मिला के भी, महक जाती नहीं।
तोड़ भी डालो तो हीरे, की चमक जाती नहीं॥

अब बताओ यह क्रोध देवता कहां छुपे हुए थे। कितना तपस्या करने वाले, कितनी संसार में मान प्रतिष्ठा थी। पांच मिनट में क्या अवस्था हो गई।

प्यारे! जिसने इस क्रोध देवता को वश में कर लिया है, मानो भगवान को पा लिया, जब भगवान को पा लिया तो दुःख व अशान्ति कहां॥

भक्त और धनी

और सुनो पाकिस्तान में एक कस्बा जिनोई जिला मुजफ्फरगढ़ में एक गौशाला थी, गौशाला के धन संग्रह अर्थ भक्त सिद्धु राम जी (जो झुग्गी वाला के रहने वाले थे) को यह सेवा सौंपी गई, वह बड़े सहन शील थे,

(शायद अब भी जीवित हों)एक शहर में पहुंच कर एक धनी के पास गए, गौशाला के वास्ते दान मांगा।

धनी पुरुषः- अरे कौन है।

भक्तः-(नमस्ते करके) महाराज गौशाला के वास्ते कुछ भिक्षा लेने आया हूं।

धनीः-जाओ २ सभी भिखारी बन गए, ठग कहीं के।

भक्तः-महाराज रसीद बुक साथ है, गौशाला के प्रतिष्ठत सज्जनों के प्रमाण पत्र भी हैं। पहले देख कर निश्चय कर लें, फिर आप दान देवें।

धनीः—हां २ सुन लिया सब ठग इकट्ठे हो गए।

"मन तुरा हाजी बिगोयम, तू मरा मुल्लां बिगो"।

भक्तः—महाराज, प्रभु का दिया हुआ इस काम में लगाओ जो बोवोगे सो काटोगे, खाया पिया तो टट्टी पेशाब बन जावेगा॥

धनीः—अरे प्रभु का दिया हुआ कह रहा, क्या तेरा वह बाप लगता है।

भक्तः—महाराज,वह तो सब का बाप लगता है। क्रोधित क्यों हो रहे हो।

धनीः—अरे, क्रोध न आवे तो और क्या आवे, तुम लोगों के कार्य ही ऐसे हैं; तो ऐसा करना पड़ता है।

भक्तः—महाराज दर पे आए खाली को खाली लौटाना अच्छा नहीं है आखिर किसने आपको दिया है, अब देगा तो फिर मिलेगा।

धनीः—अरे तू भिखारी बन कर आया है या उपदेश करने को अब पता लग रहा है कि तू कौन है।

भक्तः—महाराज, मैंने तो यर्थाथ बात कही है यह बात लोक प्रसिद्ध है करनी भरनी जैसा करेगा, वैसा भरेगा।

धनीः— (क्रोध में आकर,) ले तुझे दूं, सर खा लिया है।

भक्तः—धन्य हो महाराज, (दोनों हाथ आगे कर दिए)।

धनी ने क्रोध से भरे हूए, भक्त के हाथों में थूक डाला, और कहा, जैसे तुम अधिकारी थे, तुम को दे दिया।

भक्त ने हंस कर नम्रता से कहा, धन्य हो महाराज; अन्त में कृपा की; कुछ तो दिया, दाता तो बन गया, तत्काल रसीद बुक जेब से निकाली, धनी का नाम स्थान लिखा, वसूली के स्थान पर लिखा, एक थूक प्राप्त हुई नीचे हस्ताक्षर करके रसीद काट करके सेठ के आगे धर दी, नमस्कार कर चल पड़ा।

धनी ने रसीद को उठाया, पढ़ा, थूक प्राप्त हुई, दिल में ठेस लगी कहा, मेरी तो संसार में दुर्गत हो गई। तत्काल भक्त जी को जाते हुए बुलाया और कांपते हुए, अपने हाथों उनको अन्दर अपने ठिकाने पर ले जाकर बिठाया। आंखों में आंसू भर आए। भक्त जी के पावों पड़ा, क्षमा मांगी और कहा धन्य है तूं और तेरी सहन शक्ति, और पचीस रुपये भेन्ट किये, और सदा के लिये सावधान हो गया।

भक्त जी ने थूक के स्थान पर पच्चीस रुपये लिखदिये। धन्यवाद किया।

प्यारे—सोचो सुख शान्ति कहां है? बाजार में बिकती है, धन, बल, ज्ञान से प्राप्त होगी? नहीं कदापि नहीं।

प्यारे, दया का स्थान है हृदय, हृदय में बसता है भगवान, जिन के हृदय में भगवान है वहां दया का राज्य है, वहां सुख शान्ति हाथ बान्धे खड़े हैं।

साधु, नौजवान

और सुनो—अमृतसर से हुश्यारपुर तक मोटर, रेल गाड़ी चलती है

इसी मोटर रेल में कई सवारियां स्टेशन के आजाने पर उतरती, कई चढ़ती थीं एक स्टेशन पर एक नौजवान चढ़ा। मोटर के अन्दर सीटें सवारियों से भरी हुई थीं, एक सीट पर एक साधु बैठा था, उस नौ-जवान की दृष्टि इस पर पड़ी, उसे निर्बल जानकर कहा, अरे उठ यहां से मैं बैठता हूँ। साधु ने कहा मैं पहले का बैठा हूँ. तुम नीचे बैठ जाओ, नौजवान ने क्रोध में आ कर कहा अरे तुझे जो कहा नीचे बैठ जा, ठग चोर कहीं के, गिरवे कपड़े पहन लिए निकम्मे, बेकार, उठता है कि लगाऊं दो चार।

साधु सुनता रहा; चुप चाप ही रहा, नौजवान क्रोध में आ कर फिर बोला, अरे सुना नहीं, क्या कह रहा हूं, परन्तु साधु चुप चाप बैठा रहा। नौजवान ने दो तमाचे गाल पर लगा दिये, और कहा, कि अब उठता है कि नहीं, साधु ने दूसरी गाल पेश कर दी। नौजवान ने और थपड़ लगा दिए। और धक्का देकर एक ओर फैंक दिया, और स्वयं बैठ गया परन्तु साधु शान्त रह, कुछ भी मुख से न बोला।

प्यारे मोटर की सटि पर बैठते ही वह नौजवान पागलों सी बातें करने लग पड़ा। अगले स्टेशन पर साधु चुप चाप उतर कर चला गया। परन्तु वह नौजवान तो बिल्कुल पागल हो गया। अपने कपड़े फाड़ने लग पड़ा। अगले स्टेशन पर उतरा, तो कुछ भी सुध बुध नही थी।

कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इनसाफ और अदल प्रस्ती है।
इस हाथ करे उस हाथ मिले यह सौदा नकद व नकदी है॥

अब संरक्षक आए। सारा वृतान्त सुना, लगे साधु को खोजने परन्तु साधु तो कहीं न मिला। परन्तु नौजवान तो सदा के लिए बुद्धि से रहित हो गया अब सभी कहने लगे, भाई क्रोध बड़ा चांडाल है, हाल से बेहाल निढाल कर देता है। ऐ प्रभु हमारी रक्षा करो। इस चंडाल क्रोध से, अपनी दयालुता से दया के गुण प्रदान करो।

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं। सदा ऐशेदौरां दिखाता नहीं॥

इनसान खोके वक्त को पाता नहीं कभी।
जो दम गुजर गया, वह आता नहीं कभी॥

वक्त पर कतरो है काफी, अब्र खुश हन्गाम का।
जल गया जब खेत मेंह बरसा, तो फिर किस काम का॥

एक नौजवान बीमार हो गया, वैद्य के पास गया, उसने नौजवान को देख कर कहा प्यारे; तुम में कमजोरी बहुत है, नौजवान ने दो थपड़ वैद्य के मुहं पर लगा दिये फिर वैद्य से पूछा अब बता मुझ में कमजोरी है वैद्य ने कहा प्यारे यही तो कमजोरी है जो सहन नहीं कर सका, नौजवान चरणों में हकीम के गिर पड़ा, क्षमा मांगी सदा के लिए सावधान हो गया।

प्यारे:— शरीर का रोग शीघ्र दूर हो सकता है पर इस रोग (क्रोध) का दूर करना बड़ा कठिन है।

अहिंसा

शेर और सन्त महात्मा

महात्मा मुन्शी राम जी (श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज) लिखते हैं कि एक दिन मैं हिमालय पर्वत पर गया इस विचार से कि ऋषि महात्मा के दर्शन करूं जाकर क्या देखा कि कुटिया में एक वृद्ध महात्मा विराजमान हैं। मैंने जाकर नमस्कार की, सन्त महात्मा जी ने मुझे अपने निकट बिठाया, मेरा समाचार मुझ से पूछ रहे थे तो अकस्मात शेर के गरजने का शब्द आया तो मैं शब्द सुनकर डरने लगा। मुझे सन्तमहात्मा ने कहा डरो नहीं मैंने फिर दरवाजे से बाहर देखा एक शेर सीधा सन्त महात्मा की कुटिया की ओर आ रहा है। मैं कांपने लगा तो सन्त महात्मा ने कहा डरो नहीं, आओ मेरे साथ बैठ जाओ मैं जाकर सन्त महात्मके संग

बैठा, पर शेर बिल्कुल कुटिया के दरवाजे पर पहुंच गया, अब मैंने सोचा कि अब हमारी खैर नहीं पर सन्त महात्मा मुझे धैर्य देवें, और मैं कांपूं अब शेर कुटिया के अन्दर घुसा आते ही सन्त महात्मा के चरणों में सर झुका कर कुटिया के बाहर पंजा फैला कर बैठ गया ।

मैं यह दृश्य देख कर चकित हो रहा था कि कहां यह दरिन्दा फाड़ खाने वाला जन्गल का बादशाह, फिर मनुष्य को आकर सर झुकाना अब सन्त महात्मा ने शेर को आदेश किया जाओ बेटा खेलो कूदो शेर उठ कर दौड़ता हुआ चला गया, अब मैंने महात्मा जी से पूछा, आज महाराज यह अनोखा दृश्य देखा है । यह दरिन्दा फाड़ खाने वाला जन्गल का बादशाह फिर आप को नमस्कार करना और आज्ञा मिलने पर चले जाना ।

सन्त महात्मा:- जब हम इस जन्गल में आए थे कि कहीं कुटिया बनाकर वास करें तो क्या देखा, यह सामने जो गढ़ा है यह शेर इस में ऊंधा पड़ा हुआ अपनी टांग को हिला रहा था और चिंघाड़ रहा था मैं इस के पास पहुंचा इसके पांवको देखा तो एक बड़ा लम्बा कांटा पांव में लगा हुआ था, मैंने उसे अपने दांतों से दबा कर खैंचा वह निकल पड़ा फिर मैंने वृक्ष के पत्ते तोड़ कर मुंह में चबा कर इसके पांव में पट्टी बान्धी वह समय ३ बजे का था, अब तुम देखो तुम्हारी घड़ी में तीन (३) बजे हैं । महात्मा मुन्शी राम ने घड़ी पर देखा तीन (३) बजे थे, और कहा अब तक मुझ को यहां पर रहते हुए दो वर्ष हो गए हैं यह शेर उसी दिन से ही प्रति दिन ठीक तीन (३) बजे मुझे नमस्कार करने आता है ।

अहिंसा प्रतिष्ठायां ततसन्निधौ वैर तयागः ।

अहिंसा से ही सब वैर भाव ईर्षा द्वेष मिट जाते हैं, वह प्राणी मात्र में अपने आप को देखता है ।

आपा मेटे हर भजे, तन मन तजे विकार ।

निरवैरी सब जीव सों दारु यह मत जान ?
हार चला सो हर भक्त और वाद करे सो नीच ।
रजब कोठी गार की, धोए उतनी कीच ॥

शान्ती देवी

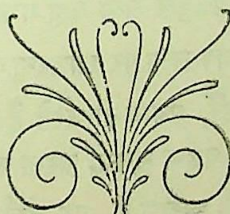
एक मुहल्ले में एक देवीका स्वभाव ऐसा बन गया कि प्रातःकाल उठे तो बारी २ से एक परिवार के द्वार पर जाकर इस घर के परिवार को गाली देनी शुरु कर देवे, अन्दर से घर वाली देवी भी क्रोध से जलकर बाहर आ जावे परस्पर गाली देना आरम्भ कर देवें, खूब दिन भर झगड़ा चले एक देवी उसी मुहल्ले में नेई व्याही आई उस ने यह दृश्य देखा तो सास से पूछा माता जी, यह प्रतिदिन बारी बारी से प्रत्येक के साथ ऐसा वर्ताव करती हैं सास ने कहा हाँ, बेटी एक दिन हमारी भी बारी सप्ताह में आती है इस पापन से सारा दिन दुखी होना पड़ता है, देवी ने सुन कर सास से कहा माता जी जिस दिन हमारी बारी आवे, तो उसके सन्मुख मैं डटूँगी सास ने कहा न बेटी यह बहुत बुरी स्त्री है बुरी २ गालियाँ देती है तूं कल की व्याही है लोग देखेंगे मेरी नाक कटी हो जावेगी। मैं अपने आप निपट लूँगी देवी ने कहा माता जी आप सारा दिन व्याकुल दुखी होंगी मैं केवल एक घन्टा भर में इसे हरा दूँगी । और इसका फल यह भी होगा कि फिर कभी हमारे द्वार का मुँह तक न देखेगी और जिस बात से तूं डरती है कि वह गाली देती है, मैं भी गाली दूंगी मैं ऐसा कदापि नहीं करुँगी जिह्वा तक न हिलाऊंगी और जीत भी लूँगी, आप इस समय मेरे साथ बैठ जाना पर आप यह प्रतिज्ञा करें जैसे मैं न बोलूंगी, आप भी न बोलोगी। सास ने सुना चुप हो गई । अब जैब बारी आई, तो वह देवी आई, आते ही गाली देनी आरम्भ कर दीं । अब बहू सास को साथ ले कर एक चौकी बिछा कर दरवाजे पर बैठ गईं वह गाली देती रही । यह सुन कर चुप बैठी रहीं

बिल्कुल बोलना बन्द, पूरा मौन रखा। जब वह गाली देते देते थकने लगी तो इस देवी ने हाथ अपना खड़ा कर उंगली उसकी तरफ खड़ी कर दिखाई। और हंस पड़ी, तो उसी देवी ने फिर क्रोधित हो कर गाली देनी आरम्भ कर दीं। जब जब वह थके यह उंगली दिखा कर हंस पड़े अन्त में वह थक गई गला बैठ गया। अपने घर जाकर चारपाई पर पड़ी, फिर कभी भी इस के दरवाजे पर न आई।

प्यारे:- सोचो कौन सा शस्त्र इस देवी ने चलाया, अपनी शान्ति का त्याग नहीं किया। दूसरे का क्रोध ग्रहण नहीं किया। बल्कि अपने शान्त स्वभाव से उसके क्रोध को दग्ध कर दिया, यह है अहिंसा, कहते हैं क्रोध पी जाओ, और अपनी नेकी को भूल जाओ। परमात्मा को याद रखो।

अन्तिम

क्रोध के जीतने के साधन। दया, शौच, अहिंसा,
इन गुणों को धारण करो, आचरण करो,
फिर सुख शान्ति भगवत् दर्शन
पाओ, अपने जीवन
को सफल
करो।



(चौथा उपदेश)

चौथी भूल

पिछले भोगे दुखों को भुलाया हुआ है।

कारण———मोह

ओ३म् वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्त ॐ शरीरम्।
ओ३म क्रतो स्मर, क्लिवे स्मर, कृतँ स्मर ॥

यजु०. अ. ४० मं१५

अर्थातः— ऐ मनुष्य ! शरीर में आने जाने वाला जीवात्मा अमर है, परन्तु यह शरीर केवल भस्म पर्यन्त है, इस लिए ऐ जीव, तू ओं का स्मरण कर बल प्राप्ति के लिए स्मरण कर, अपने किए कर्मों का स्मरण कर।

सन्त महात्माः— प्यारे परमात्मा ने अपनी वेद की अमृत वाणी द्वारा हमें जागृत किया है, कि यह शरीर तुम्हारा नित्य रहने वाला नहीं है, नाशवार है, क्या यह ठीक है ?

रामलालः- महाराज ! बिलकुल सत्य कहा गया है।

सन्त महात्माः—क्या आप सत्य पर आचरण करते हो ?

राम लालः—महाराज नहीं, प्रयत्न तो करते हैं।

सन्त महात्माः—प्यारे ! कहना सुगम, करना कठिन, जैसेः—

१—सत्य प्रत्येक कहता है, अच्छा है, पर कोई नहीं करता, दुर्लभ ही करता है।

२–सुनना आसान समझना कठिन, जैसे कहते हैं, परमात्मा है वह सर्व व्यापक है, सर्व शक्तिमान् है, हमारे पाप, नित्य के कर्मों को देख रहा है, ऐसा सभी जानते हैं तो क्या ऐसा मानते भी हैं ?

३–देखना आसान समझना कठिन, – नित्य प्रति देखते हैं अमुक की मृत्यु हो गई अमुक मर गया, और हम ने भीं मरना है, क्या इस को मानते भी हैं ?

४–अपने दुख का अनुभव करना सुगम, दूसरे के दुख का अनुभव करना कठिन।

५–दूसरे के प्राण लेना सुगम, अपने प्राण दूसरों के लिए देना कठिन है।

जिन लोगों ने कठिनाई को हल किया वह उँचे हो गए जो आसानी पर रहे, इसकी कोई नहीं सुनता, ज़रा विचार करो। और हमेशा देख रहे हो कि बाजीगर के लड़के बाजीगर, मदारी के लड़के मदारी बन गए परन्तु ऐसी आश्चर्य जनक बात है, कि बड़े बड़े मनुष्य अर्थात् विद्वान् का लड़का विद्वान् नहीं बनता, भले मनुष्य की सन्तान भली नहीं होती, इस कारण सुगम मार्ग ग्रहण किया, कठिन नहीं,जब स्वंय विद्वान बने तो विद्वान् बनने केलिए तप त्याग का जीवन स्वंय व्यतीत किया, अब जिस तप त्याग के फलीभूत होने पर मान पूजा हुई, धन सम्पत्ति आई, उसी में लिप्त हो गया, स्वार्थी बन गया, सन्तान पैदा की,उसकी सुध बुध नहीं, दूसरों केभरोसे छोड़ दिया, अब जड़ वस्तुओं का पुजारी बना हुआ है, सन्तान इस अभिमान में कि मेरे पिता जी विद्वान् और महात्मा हैं यह नहीं समझता कि जिस प्रकार से मेरे पिता की पूजा मान हो रही है, मैं भी उन कर्मों को करूँ और न ही पिता उसे ऐसा करने को कहता है, कारण सुनिये :–

(१) पृथवी के बिना सृष्टि की स्थिति कठिन है ।

(२) स्त्री पुरुष का प्रेम न होता तो कभी सृष्टि की उत्पत्ति न होती।

(३) माता का यदि बच्चे के प्रति प्रेम न होता तो बच्चे का पालन पोशन कदापि न होता।

(४) पिता के प्रेम से रिश्ता सम्बन्धी का ज्ञान होता है, गुरु के प्रेम से

अपने आप का ज्ञान होता है।

प्यारे:- पति पत्नी विवाह से पहले एक दूसरे को नहीं जानते, परन्तु जब दोनों का विवाह हो जाता है, तो वह बिना सोचे समझे पुरुष अपने सम्पूर्ण परिश्रम की कमाई अपनी धर्मपत्नी के अर्पण कर देता है। फारसी के कवि ने कहा है :-

सपुर्दम बतो मायाये खेशरा, तु दानी हिसाबे कमो बेशरा।

आश्चर्य यह है, कि यह क्यों, आहा - यह तो पूरा साक्षात् आदर्श रूप ही होता है।

जब तक सन्तान नहीं होती, आपस में प्रेम, जब सन्तान हो गई तो दोनों का प्रेम बेटे के अर्पण, इस प्रेम पुत्र के वश आकर माता पिता क्या कुछ नहीं करता, कर्ज, मर्ज, तन, मन सब कुछ पुत्र के प्रेम वश अर्पण कर देता है बहुधा देखनेमें आ रहा है कि वर्तमान काल में स्त्री पुत्र! पिताके विरुद्धहो जाते हैं परन्तु पिता फिर भी परवाह नहीं करता, इसका हित चाहता है।

सज्जनो, क्या यह प्रेम है ? नहीं कदापि नहीं, यह प्रेम नहीं है, यह तो है मोह, जो कि मोक्षके मार्ग में बाधक है, सुनिये नीतिकार ने लिखा है:-

एकः पापानि कुरुते फलं भुंक्ते महाजनः ।
भोक्तारो विप्र मुच्यन्ते कर्ता दोषेण लिप्यते ॥

अर्थात्:- एक पाप करता है, फल खाने वाले सब होते हैं, परन्तु दण्ड आप भुगतना है। कोई साथी धर्म के अतिरिक्त नहीं होता।

"गुरु और शिष्य"

कहते हैं एक सन्त महात्मा ने नगर से बाहर कुटिया बनाई हुई थी वहां पर वह रहते थे, सत्संगी प्रेमी वहां जा कर उन के सतसंग से आत्मिक ज्ञान प्राप्त करते थे। एक नवयुवक जो सुशील उत्तम विचार रखने वाला, गुरु सेवा में निपुण था। एक

दिन सन्त महात्मा ने शिष्य से कहा, प्यारे, तेरे जीवन से संसार का बहुत भला हो सकता है, यदि तू संसार की सेवा करे तो तेरा जीवन फली-भूत होगा, मेरी यही इच्छा है कि तुम संसार की सेवा करो।

शिष्यः—वाह महाराज! आज आपने खूब कही कि मैं संसार की सेवा करूं, महाराज, अभी थोड़ा समय ही बीता है, मुझे विवाह किए हुए। मेरा नन्हा सा बच्चा है, माता, पिता इनकी सेवा करना मेरा धर्म है। न कि उनको छोड़ कर संसार की सेवा करना।

सन्त महात्माः—प्यारे, माता पिता इत्यादि की सेवा करना धर्म है, परन्तु संसार की सेवा इससे अधिक धर्म है। पुत्र, स्त्री, माता, पिता, तो सभी अपने ही हैं, अपनों की सेवा तो प्रत्येक करता है, यह कोई वीरता नहीं है, यह कोई उपकार का कार्य नही है, उपकार वह, जो दूसरों की सेवा करे. अपना खाया पिया तो सब टट्टी पैशाब बन जावेगा जो दूसरों को खिलाएगा, वह जमा किया हुआ ही ऐश्वर्य तेरे भविश्य के काम आएगा। और कहा! सुनो;

कारून

कारून, चालीस कोषों का स्वामी था, लिखा है कि उसने सोलन को (जो यूनान में माना हुआ व्यक्ति था) बुलाया, उसे अपने सभी कोष दिखलाए जब कोष दिखला चुका तो सोलन से पूछा। आप बताएं, कि संसार में सबसे बड़ा और आदर योग्य कौन व्यक्ति तेरी दृष्टि में आता है।

सोलनः—मेरी दृष्टि में सबसे महान् और आदर योग्य, वह व्यक्ति है, जो अपने तन, मन, धन को प्राणी मात्र के हितार्थ, अर्पण कर देता है।

कारूनः—अच्छा यह बताओ, कि इसके पश्चात् दूसरे दर्जे पर तेरी दृष्टि में कौन व्यक्ति माननीय है।

सोलनः—दूसरे दर्जे पर वह व्यक्ति आदर के योग्य है, जो अपने तन,

मन, धन, को माता पिता की सेवार्थ अर्पण कर देता है।

कारुंन की जो इच्छा थी वह पूर्ण न हुई। वह चाहता था कि सोलन मेरी प्रशंसा करे। तो अब खुले शब्दां में पूछा, कि आप मेरे सम्बन्ध में क्या विचार रखते हैं।

सोलन ने उत्तर दिया, कुछ भी नही।

कारूंन को क्रोध आ गया, कि सोलन ने मेरा अपमान किया है मेरी प्रशंसा नही की, ती उसे देश से बाहर निकाल दिया परिणाम स्वरूप ईरान के बादशाह कैंखुसरू ने आक्रमण किया। कारुन को बन्दी बना कर, जीवित ही अग्नि में जला दिया। जिन कोषों पर अभिमान करता था, वह धरे धराए रह गए।

सन्त महात्मा ने यह सुना कर कहा, बेटा! पुत्र, स्त्री, माता पिता का सेवा से, संसार की सेवा मुख्य जानो, यह सेवा तो मोह की ही सेवा है।

शिष्यः—महाराज, आप अनोखी बात कह रहे हैं, मेरी समझ में नहीं आता, कि माता, पिता इत्यादि की सेवा छोड़ दूं।

सन्त महात्माः—मैं कब कहता हूं कि माता, पिता की सेवा छोड़ दो, परन्तु संसार की सेवा इससे महान् सेवा है। अच्छा बेटा, तुम्हें एक दिन समझ आजावेगी।

"गुरु का शिष्य को सन्मार्ग दिखाना"

सन्त महात्मा को यह पूर्ण विश्वास था, कि यह शिष्य होनहार, बुद्धिमान सेवा के गुणों से निपुण हैं, संसार की सेवा करके अपना जीवन सुफल करेगा, तो शिष्य को प्राणायाम सिखाना आरम्भ कर दिया, प्राणायाम सिखाते २ योग समाधी तक ले गए, जब देखा, कि यह पर्याप्त समय तक समाधी लग सकता है, तो एक दिन शिष्य से कहा, प्यारे आज एक काम करो।

शिष्यः—महाराज! आज्ञा करो।

सन्त महात्मा:-आज यह काम करो, कि यहां से जब घर जाओ तो और सब कार्य छोड़ कर, सीधे माता की शरणमें चले जाना, उनसे जाकर कहना, कि माता जी, आज मेरे सर में दर्द हो रहा है, तो माता तुमको कहेगी, लेट जाओ, आराम हो जावेगा, तो उसीसमय तुम उससे यूं कहना कि माता जी, संसार में आना, जाना जीना, मरना आवश्यक ही है, मौत का कोई समय नहीं, वह नहीं देखती, यह बच्चा है, जवान है, बूढ़ा है, और कल नाम काल का ही कहते हैं, एक बात मैं आप से कहता हूं, वह यह कि यदि मेरी आपके जीवित काल में ही, मृत्यु हो जावे तो मेरी अर्थी निकालने से पूर्व मेरे गुरु देव को बुला कर दर्शन करा देना। बस इतना कह कर तुम प्राणयाम चढ़ा कर लेट जाना, मैं स्वंय आकर तुम्हें जागृत करुंगा।

शिष्य:-बहुत अच्छा महाराज। शिष्य नमस्कार करके चल पड़ा, सीधा माता जी के कमरे में पहुंचा और कहा माता जी आज सर में दर्द बढ़ रहा है।

माता जी:-बेटा, थकावट से दर्द हो जाता है, चारमाई पर लेट जाओ, मैं भोजन तैय्यार करती हूं, फिर तुम्हें जगा दूंगी।

पुत्र:-माता जी, एक बात आप से कहनी है, वह भी सुन लो, यह कि संसार में मनुष्य आया तो जाएगा। बचपन के पश्चात् जवानी, जवानी के पश्चात् बुढ़ापा, और जीने के पश्चात् मरना, ऐसा चक्कर चला आता है, मृत्यु सब के संग लगी हुई है, कोई समय निश्चित नहीं कि वह कब और किस समय आकर प्राण ले ले, और कल नाम काल का ही है, यदि आपके जीवन काल में ही मेरी मृत्यु हो जावे बस इतना कहना ही था तो माता जी क्रोध से बोल पड़ीं।

माता:- देख! क्या मुंह से बकवास करता है, तू सदा जीवित रहेगा,

फलेगा, फूलेगा यह काली जबान कैसी बोल रही है। जा ! चैन से सो जा।

पुत्रः-माता जी! क्रोधित क्यों होती हो, कौनसी अनोखी बात मैंने कही है।

माताः- हां, हां, सुन ली है छोटा मुंह बड़ी बात करता है, जा सोजा।

पुत्रः-माता जी, बात सुनने में तेरा क्या लगता है, अब मैं मर थोड़ा ही रहा हूं। मन में ऐसा विचार आता है, उसे तू सुन ले।

माता जीः-क्या विचार सुनूं, बता क्या कहता है, अपना दर्द सर बढ़ा रहा है।

पुत्रः-माता जी, भगवान करे तेरा आर्शीवाद सदैव सुखी रखेगा, तू शान्ति से मेरी बात सुन ले, वह यह कि यदि मेरी मृत्यु हो जावे, तो मेरी अर्थी निकालने से पूर्व, मेरे गुरू देव को बुला कर मेरे दर्शन करादेना।

माता जीः-हां, हां सुन लिया है, आज तेरी बुद्धि मारी गई है, जा चारपाई पर लेट जा।

पुत्र चारपाई पर जा कर प्राणों को ब्रह्मरन्ध्र में चढ़ा कर लेट गया॥

माता जी जब भोजन बना चुकी, काफी समय बीत गया था। अब पुत्र को बुलाया, बेटा, बेटा जागो, आओ भोजन तैय्यार है खाओ। बहुत बुलाया परन्तु वह न जागा। उठकर हाथ को पकड़ कर देखा, तो नाड़ी नहीं चलती, तो रोना पीटना आरम्भ कर दिया, सारा परिवार एकत्रित हो गया, दोस्त मित्र सभी ने रोना पीटना आरम्भ कर दिया, दोस्त, मित्र रो रहे हैं, कोई कहता है, बड़ा दुख हो रहा है, मैं मर जाता पर यह न मरता, इत्यादि। माता, पिता, पुत्र वधु सर पर धूल डाले पीट रहे हैं, काश ! हमारा इकलौता बेटा था, होनहार था, नई जवानी थी, मन्द भाग हमारे हमने बड़े पाप किए होंगे इत्यादि, अब अर्थी तैय्यार करने लगे, तो माता को पुत्र का अन्तिम सन्देश याद आया, तो पति देव को बुलाया।

पत्नीः—(रोते हुए) आज जब बेटा घर आया, तो मुझे कहा, उस की स्मृति मुंह से पहले कहलवा रही थी, कि यदि आपके जीवन काल में ही मेरी मृत्यु हो जावे, तो अर्थी निकालने से पूर्व, मेरे गुरू देव को बुलाकर मुझे दर्शन करा देना। जो स्वर्ण था, वह तो मिटी हो गया, अब कुच्छ बनता नहीं हमारे भाग्य तो ऐसे खोटे थे, पर उसका जो अन्तिम कहना था, उसका पूर्ण कर दो, ताकि मेरे ऊपर इसका ऋण न रहे।

लड़के का पिता बाहर आया, और लोगों से कहा कि आज बेटा जब घर आया, तो आते ही पहले पहले अपनी माता से यही कहा था, कि यदि मेरी मृत्यु आपके जीवन काल में ही हो जावे तो मेरी अर्थी निकालने से पूर्व, मेरे गुरु देव को बुला कर मुझे दर्शन करा देना जो कुच्छ होना था वह तो हो गया, अब आप में से कोई कष्ट करके उसके गुरू देव को बुला लावे, इतना सुनना था, कई आदमी दौड़ पड़े, सन्त महात्मा के पास पहुंचे, शिष्य का सन्देश सुनाया गया, सन्त महात्मा ने अन्दर से एक पुड़िया उठाई, और साथ होकर चल पड़े, शिष्य के द्वार पर पहुंचे, तो शिष्य के माता पिता परिवार दोस्त मित्र सब इकठे होकर सन्त महात्मा के सन्मुख होकर रोने पीटने लगे कि आप का यह शिष्य प्यारा होनहार था आज घर उजाड़ और बरबाद कर गया है। हमारी एक आंख थी, वह भी चली गई अब हम अन्धे हो गए इत्यादि।

सन्त महात्माः-प्यारे, सचमुच बड़ा होनहार था मुझे बहुत प्यारा था, अच्छा अन्दर चलो इसको देखें, अब सन्त महात्मा आगे, पीछे २ माता पिता पुत्र वधु अन्य सभी परिवार रोते पीटते चले, अन्दर आकर महात्मा ने शिष्य को देखा, और यूं कहाः——प्यारे यह बच्चा मुझे बड़ा प्यारा है, मैं इसे जीवित ही करके छोड़ूंगा, यह सुनना था, तो माता पिता पुत्र वधू इत्यादि सभी सन्त महातमा के चरणों में पड़ गए और कहने लगे महाराज, आप भगवान का स्वरूप हैं भगवान की बागडोर आपके हाथ में है, कृपा करो हमारा उजड़ा घर बसाओ सन्तों के हाथ में सब कुछ

होता है, इत्यादि। अब सन्त महातमां ने कहा, कि एक छटांक भर गाए का दूध लाओ, इतना कहना था तो उनके आदमी दौड़ पड़े, अपने २ पात्रों में दूध लाए सन्त महात्मा ने अपनी पुड़िया इसमें मिला दी।

सन्त महात्मा:-प्यारे आप यह तो देख रहे हैं. कि यह अब मरा हुआ है दवाई पी नहीं सकता. अब यह औषधि दूसरा आदमी पींवे पर वह कौन पीवे जो इससे अधिक प्यार करता है, दूध पीने वाला तो मर जाएगा, और यह जीवित हो जावेगा माता पिता परिवार ने जब सुना तो दोस्त मत्र जो यह कह रहे थे कि यह न मरता, हम ही मर जाते, ज्यों ही सन्त महात्मा की बात सुनी, तो चुपके से भाग गए, अब माता पिता पुत्र वधु ही बाकी रह गए।

सन्त महात्मा:-(पुत्र वधु से कहा) देवी! तेरा पति है, प्राणपति प्राण का स्वामी है, तेरा सोहाग है, इसके बिना तेरा जीना व्यर्थ ही है। अपितु नरक है, तेरे प्राण देने से बाकी सारा परिवार सुखी रहेगा, किन्तु पति के मरने पर तू और सारा परिवार दुखी रहेगा। तू यह दूध पी ले, अब वह कहने लगी, महाराज! मरे हुए के पीछे कोई मरा है, मेरे कर्म ही खोटे थे सर नीचा कर लिया।

सन्त महात्मा:-[पिता से कहा], क्यों प्यारे आप तो अन्धे हो गए एक ही आंख थी ऐसा कहते थे, अब तक तो बहुत कमाया, खाया, संसार को भोगा, इकलौता बेटा है. लो तुम ही पी लो, आगे खेती फले और फूलेगी नहीं तो तुमहारा जीना न जीने के तुल्य होगा।

पिता:-[सर नीचा करके], महाराज! आप का कथन सत्य है आप तो ज्ञानी ध्यानी हैं, महाराज! होनहारी होकर ही मिटती है, किसी के बस की बात नहीं है भगवान के किए पर प्रसन्न हूं। चुप हो गया।

सन्त महात्मा:-"[माता जी से] आपका तो दिल का टुकड़ा है, इस के बिना तो घर सुनसान. पुत्रवधु को देखकर नित्य रोती रहेगी, जीना

और न जीना एक बराबर ही होगा, वह दूध तू ही पी ले, बच्चा जीवत हो जावेगा, पीछे घर फले फूलेगा। और तेरा दुखों से छुटकारा हो जावेगा।

माताः–महाराज! कहना सुगम है, करना कठिन है, मेरे मन्दभाग थे यह भगवान का ही किया हुआ है, अच्छा दुख सुख जो भाग्य में लिखा है, भोगूंगी। एक पोता है, यह जवान हो जावेगा इसको ही पुत्र समझ कर समय बिताऊंगी। आप अब इसको अर्थी निकालें, व्यर्थ में देख देख कर जलती तो न रहूं। (रोना आरम्भ कर दिया)

सन्त महात्मा:–प्यारे:–आप ने सब कुछ देख लिया! अब वह माता जो बच्चे को मुंह से चूम चूम कर फूली नहीं समाती थी, और पुत्र से मरने का नाम सुन कर सहन नहीं कर सकती थी, और प्राण पति कहने वाली पत्नी की भी सुन लो, अब बताओ कहां गया वह प्रेम, जो माता पिता पाप, चोरी, बेईमानी, अन्याय करके धन संग्रह करते हैं, इस सन्तान के लिए, अब वह पुत्र किसी को प्यारा है? वह देवी जो प्राण पति पुकारती थी सबकुछ पति की पूंजी की स्वामिनी है, पति ने सब कमाई अर्पण कर दी थी, देखा सिर पर राख रमाए हुए हाथ का चूड़ा तोड़ा हुआ, मुंह काला किया हुआ, रो रही थी। क्या यह चाहती है प्राण देकर पति को जीवित कर दूं। प्यारे कोई किसी का साथी नहीं, कवि ने कहा है :–

अकेला आया अकेला जाना न होगा हरगिज़ कोई भी साथी।
काम आएगा सफर में तोशा, जमा कर गया जो स्वाब करके॥

अब सन्त महात्मा ने कहा, सुनो यह शिष्य मुझे बहुत प्यारा है मैं तो इसे जीवित करके ही छोड़ंगा, स्वयं दवाई पी लूंगा, माता पिता पुत्र वधु सब परिवार कहने लगे महाराज! धन्य हो, महात्मा हों तो ऐसे हों, जो उजड़े घर बसा देवें, रोतों को हंसा देवें, मुरदों को जीवित कर देवें।

पुत्र वधुः–महाराज! यह तो आपका प्यारा शिष्य था, आपका आज्ञाकारी,

मैं भी तो आपकी पुत्री हूं मेरा सुहाग बढ़ाओगे, भगवान् आपको फल देगा। इस के बिना तो मेरे वास्ते सब कुछ सुन्सान है कृपा करो, दया करो, जल्दी करो महाराज देरी न लगाओ। आप दूध पी लेवें।

माता पिता:-महाराज ! सन्तों, महात्माओं का जीवन ही तो संसार के कल्याणार्थ होता है। आप तो भगवान् के प्यारे हैं सब कुछ संसार का साक्षात् किया हुआ है। परोपकारी आत्माएं प्राण तक दूसरों के हितार्थ अर्पण करके जन्म अपना सफल कर जाती हैं। आप ने जैसा आरम्भ में कहा था कि जीवित कर दूंगा, महाराज ! अपना व्रत पूर्ण करो। सन्त महात्मा अपने वचन के पक्के होते हैं।

रघु कुल रीत सदा चली आई। प्राण जाएं पर वचन न जाई॥

अब सभी ज्ञानी बने हुए हैं। दूसरे के प्राण जाएं तो यह खुशी मनाएंगे क्या फिर इनको मनुष्य जन्म मिलेगा ?

सन्त महात्मा :-अच्छा प्यारे! मैं दूध तो पी लूं, परन्तु एक बात सुनलो।

माता पिता सब परिवार:-आज्ञा करो हम सब सुनने व मानने को तत्पर हैं।

सन्त महात्मा:-और तो कोई बात नहीं है, केवल इतनी बात है कि आप प्रतिज्ञा करो कि जब यह बेटा जीवित हो जावे तो आप इसको जो अवस्था बीत चुकी है अक्षरशः सुना देना, माता पिता इत्यादि ! हां हां महाराज ! अवश्य सुना देंगे। हम सब प्रतिज्ञा करते हैं आप विश्वास रक्खें आप दूध पी लेवें। सन्त महात्मा ने दूध का कटोरा उठाया और पी लिया, शिष्य के कानमें आवाज देकर जगादिया शिष्य तत्काल उठ बैठा।

सब परिवार इत्यादि:-अब माता पिता पुत्र वधु परिवार प्रसन्नता से फूले नहीं समाते बधाई बधाई हो रही है, जो मित्र दोस्त दूध पीने की सूचना सुनते भाग गए थे एक दुसरे के गले लग कर खुशी हो रहे हैं।

सन्त महात्मा :-अब जो प्रतिज्ञा आप लोगो ने की थी उसको पूर्ण कर

दो, हम जावें।

माता पिता इत्यादिः—महाराज कौन सी प्रतिज्ञा।

सन्त महात्माः—देखा प्यारे! एक क्षण के अन्दर माता पिता, इत्यादि अब कैसे हो गए, सब दुख भूल गए अब कहते हैं कौनसी प्रतिज्ञा।

सन्त महात्मा ने कहा, कि जो इसके मृत्यु काल में अवस्था बीती है, वह इसको सुना दो।

सब परिवारः—महाराज कृपा करो, जो होना था सो हो गया, अब बीती बातों को क्या याद करना है, आपने निष्काम कर्म किया है, क्यों फल की इच्छा रखते हो।

सन्त महात्माः——(चकित हो कर।) अरे अभी २ प्रतिज्ञा भंग, मुझे उपदेश देने लग गए हो, मैं कौनसा स्वार्थ कर रहा हूं?

सब परिवारः—महाराज क्षमा करो, सन्त महात्मा उदार होते है, आपका जितना उपकार है; हम भुला सकते हैं? इस बात को जाने दो।

सन्त महात्माः—अरे प्रतिज्ञा पूर्ण करते हो, या कुछ और देखना चाहते हो।

परिवारः—न न महाराज अभी सुना देते हैं।

सारी बीती अवस्था जब शिष्यने सुनी, तो अन्दरकी ज्योति जग गई।

सन्त महातमाः—मैं नहीं कहता हूं कि दुनिया से जुदा हो, पर हर एक काम में प्रभु की याद हो॥ फारसी के कवि ने भी कहा हैः—

कस न गोयद कि अज़ दुनिया जुदो बाश।
बहर कारे के बाशी बाखुदा बाश॥

गुरू नानक देव जीः—

जैसे जल में कमल निरालय मुरगावी निसयाने,

शब्द सुरत भव सागर तरिए नानक नाम बिखाने।

तरके दुनिया नेस्त, तरके दौलत व फरज़न्द व ज़न,
बल्कि दिले रा पाक कर्दन अज़ मुहब्बत ईं बआं।

अर्थः— (१) धन, बीवी, बच्चों के छोड़ देने का नाम त्याग नहीं है, अपितु उनके प्रेम से, और उनके मोह से हृदय को पवित्र कर देने का नाम त्याग है।

जीवन के सब काम काज करे, धन कमाए विवाह करे, बच्चे उत्पन्न करे, परन्तु हृदय में उनके प्रेम को न बसाये, हृदय में सर्वदा अपने प्रभु का ध्यान रखे यहि सच्चा त्याग है।

अपनी खुशी को तू नहीं छोड़ता,
उलफते दुनियां से मुंह तू नहीं मोड़ता।
अपनी दानाई से हूँ मैं बाकमाल,
अपनी बे समझी से तू है बाजिबाल।

शिष्य ने—गुरू के चरणों में नमस्कार किया अपने आप को समर्पण कर दिया।

सन्त महात्माः— प्यारे, बताओ जब मृत्यु अवस्था में पड़ा था तो माता, पिता स्त्री परिवार सभी हा हा कार मचाकर सर पर धूली रमाए पीट रहे थे। क्या यह प्रेम था, नहीं कदापि नहीं, मोह ही था, क्या जब वह जीवित हो गया था, तो कोई दुखी अवस्था बीती को स्मरण करता था, और सुनाता था।

१. लोभ से काम उतपन्न होता है, २. काम से क्रोध,
३. क्रोध से मोह, ४. मोह से स्मृति में भ्रम होता है,

५. स्मृति के भ्रष्ट होने पर बुद्धि का नाश होता है
६. बुद्धि के नष्ट होने से मनुष्य नष्ट हो जाता है। (गीता)

"दोस्त मित्र की पहिचान"

अपने बेगाने की खुलती है, हकीकत उस से
खरे खोटे की कसौटी है मुसीबत क्या है॥
ऐश के मारे तो अगयार बन जाते हैं,
दोस्त वह जो बुरे वक्त में काम आते हैं।

जिवाल जाह व हशमत में, बस इतनी बात अच्छी है,
कि दुनियां को बखूबी आदमी पहिचान जाता है॥

प्यारे:—मोह रखने वाला वास्तविकता से कोसों दूर होता है, बड़े २ ज्ञानी शूरवीर, योधा इस मोह के फंदे में आकर अपना नाश कर गए। सुनो, मैं तुम्हें सुनाऊं:—

"महाभारत"

(१) महाभारत में लिखा है, कि जब युद्ध में दुर्योधन और इस की सैना सब मारी गई तो धृतराष्ट्र ने युधिष्टिर को यह कहला कर कि युधिष्टिर तू धर्मात्मा, सत्यवादी है, सर्वदा सत्य की विजय होती है, दुर्योधन दुष्ट, पापी था; अधर्मी और पापी के लिए धर्म ही इस का नाश करने वाला होता है, सो अच्छा हुआ दुष्ट का नाश हुआ तेरी विजय हुई मुझे तेरे सत्य धर्म पर दृढ़ होने की प्रसन्नता हो रही है अब तुम सब आओ मैं तुम्हें मिलना चाहता हूं।

सज्जनों; युधिष्टिर ने जब धृतराष्ट्र (चचा) का संदेश सुना तो तत्काल चारों भाईयों को उपदेश किया कि उठो चाचा जी को चलकर नमस्कार करें और उसकी आज्ञा पालन करें जब सभी तैय्यार हुए तो श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज ने तत्काल रोक दिया और पहले एक लोहे का बुत बनवाया उसे उठवा कर फिर पांडवों को साथ ले कर चल पड़े, जब धृतराष्ट्र के स्थान पर पहुंचे तो धृतराष्ट्र से कहा गया कि पांडव सेवा में आ गए हैं, तो धृतराष्ट्र खड़ा हो गया बोला (आओ प्यारे युधिष्ठिर) युधिष्टिर ने तत्काल नत मस्तक हो कर धृतराष्ट्र को नमस्कार किया, तो धृतराष्ट्र ने तत्काल युधिष्ठिर को दोनों हाथों से उठा, छाती से लगाया। पीठ पर हाथ फेर कर कहा, बेटा धन्य हो, तू धर्म पुत्र है, तेरा धर्म पर विश्वास और धैर्य शक्ति (धृति) पूजा के योग्य है सत्य धर्म नित्य जीवित है, तुम नित्य जीवित रहो और जीवित रहोगे; इत्यादि इस प्रकार बारी २ से अर्जुन नकुल सहदेव को श्री कृष्ण चन्द्र महाराज ने धृतराष्ट्र की भेंट किया, अबजब भीम की बारी आई तो भीम से कहा नमस्कार करलो भीमने नमस्कार किया तो तत्काल श्री कृष्ण ने भीम को खैंच कर एक ओर कर लिया और लोहेका बुत धृतराष्ट्र के सामने खड़ा करके कहा महाराज भीम चरणोंमें नमस्कार करके आपके सन्मुख खड़ा है जब भीमका नाम धृतराष्ट्र ने सुना तो अन्दर से ऐसी अग्नि मोहकी प्रचण्ड हुई, कि उस बुत को छाती से लगाकर ऐसा जोरसे दबाया कि बुत लोहे का भी टेढ़ा होगया, जब ज्ञात हुआ कि यह भीम नहीं था, बल्कि नकली बुत था तो अति लज्जित हुआ।

प्यारे:—धृतराष्ट्र ने ऐसा क्यों किया चारों पाण्डवों को तो आशीर्वाद दिया, गले मिला प्रसन्नता प्रकट की अब भीम का नाम सुनते ही होश से बेहोश क्यों हो गया हालांकि आरम्भ से कितनी ज्ञान धर्म की बातें कर रहा था साफ कर रहा था, दुर्योधन दुष्ट पापी था अच्छा हुआ उसका नाश हो गया इत्यादि, पर वह ज्ञान अब धृतराष्ट्र का कहां गया पहले आखों से अन्धा था पर अब मोह के कारण अन्दर से भी अन्धा हो गया है। यह

क्या था मोह ही था चारों पाण्डवों को तो आशीर्वाद, पर भीम के साथ ऐसा बर्ताव, क्यों किया गया था॥

प्यारे:—भीम ने दुर्योधन को मारा था बदला लेने की भावना, पुत्र का मोह था जिससे धृतराष्ट्र अन्दर से अन्धा हो गया।

(२) जब महाभारत युद्ध हो रहा था तो चक्रव्यूह युद्धमें अभिमन्यु को जयद्रथ ने छल से मार डाला. युधिष्टिर को जब सूचना मिली, कि अभिमन्यु मारा गया है, तो युधिष्टिर फूट फूट कर रोता है, कहता है अर्जुन के आजाने पर इसको अभिमन्यु कहां से लाकर दिखलाऊंगा, अभिमन्यु के वियोग में रो रहा है, जब अर्जुन आया युधिष्टिर को रोता हुआ देखा, तो चकित हो कर पूछा, क्या बात है, आप क्यों रो रहे हो, तो युधिष्टर ने रोते हुए कहा, अभिमन्यु को युद्धमें जयद्रथ ने छल से मार दिया है, तो अर्जुन ने गरज कर कहा, तो क्या हुआ, क्षत्री की सन्तान युद्ध क्षेत्र में प्राण देकर अमर हुआ करती है। और अपनी कुल के नाम को उज्वल करती है, अच्छा हुआ ! चिन्ता किस बात की, परन्तु जब अर्जुन के सामने पुत्र के मोह का रूप बन कर आया, तो तत्काल प्रतिज्ञा करता है कि यदि कल सांय काल तक मैं ने जयद्रथ को न मार डाला तो अपने आप को चिता में जला कर भस्म कर दूंगा। प्यारे कितना वीर योद्धा अर्जुन, आरम्भ में इस मोह वश हो कर गाण्डीव छोड़ कर बैठ गया था, तो श्री कृष्ण महाराज ने इस कालक अन्धकार मोह को ज्ञान के द्वारा मिटाया था; परन्तु अब केवल अपने पुत्र के बदले अपने प्राण तक न्योछावर कर चिता में लेटा हुआ है कहां गई वह वीरता, कारण मोह ही है।

(३) द्रोणाचार्य पान्डुवों, कौरवों के गुरु थे, श्री कृष्ण को भी यही कठिनाई सन्मुख थी कि यह योद्धा कैसे मरेगा तो क्या दाव पेच कराया. युधिष्टिर से कहलवाया कि अश्वत्थामा (द्रोणाचार्य का पुत्र था) मारा गया, द्रोणाचार्य इतना महान योधा जिसका मारना असम्भव था कौनसे

शस्त्र से वह मारा गया, प्यारे जब पुत्र का वियोग सुना, तो होश से बेहोश हो गया; तीरों से तत्काल छलनी कर दिया गया, यह क्या था, मोह ही था ।

"रामायण"

भगवान् राम पिता, माता की आज्ञा पालन करने को वन चला गया, मरा नहीं; परन्तु दशरथ ने मोह वश राम के वनवास जाने पर प्राण दे दिये; वह कितना उत्तम समय था; इसी समय को लाने के लिए दुनियां आज कहती है; राम राज्य हो जावे ।

अब दशरथ के प्राण दे देने का कारण क्या था, मोह ही था ।

॥ ऋषि दयानन्द ॥

परन्तु धन्य हो, ऋषि दयानन्द महाराज ! युग युग में तेरा भला हो तूने इस महान् शत्रु (मोह) पर विजय पाई । बहन, चचा के प्रेम और स्नेह को जुदाई में देखा, टस से मस नहीं हुआ, पत्थर की चट्टान की भान्ति धीरता का साक्षात् नमूना बना रहा आंख से एक बिन्दु आंसु नहीं टपका, माता पिता परिवार दयानन्द को निरप्राण रूप खड़ा देख कुछ का कुछ कह रहे हैं, पर धृति जो धर्म का पहला लक्षण है उस को लक्ष्य रखा हुआ है, प्रेम स्नेह की जुदाई के कारण का चिन्तन कर रहा है, तात्पर्य यह कि ऋषि दयानन्द मोह का शिकार हुआ ? मृत्यु ने उसे मारा ? नहीं, नहीं अपितू सच्चा प्रेम, स्नेह के कोष को प्राप्त कर लिया, मृत्यु पर विजय पाई, प्रकाश को प्राप्त किया, संसार को अन्धकार से निकाल और प्रकाश का मार्ग दिखा कर हंसते हंसते सच्ची माता की गोद में अन्तिम भगवती गायत्री माता का गीत गाते गाते कहा —

'प्रभू तेरी इच्छा पूर्ण हो ! तेरी इच्छा पूर्ण हो !! तेरी इच्छा पूर्ण हो !!!'

मोह पर विजय पाना

सच्चे शिष्य और ऋषि भक्त स्वर्गीय पण्डित लेखराम जी महाराज

प्यारेः—उन्नीस्वीं सदी, कलीयुग कहा जाता है स्वर्गीय पूजय पण्डित लेखराम जी महाराज प्रचार कर के अभी घर पधारे, भोजन परोस कर माता ने दिया, खा रहे हैं, तो तार आ गई हाथ में ली, देखा तो भोजन छोड़ कर खड़े हो गए, माता पूछती है, क्यों बेटा क्या बात है, माता जी, तार आई है, अमुक स्थान पर हिन्दु जाति के लाल मुस्लिम हो रहे हैं, वहां जाता हूँ।

माताः—बेटा तेरा बेटा रुगण है कितने कष्ट में है, श्वास पर श्वास चढ़ा हुआ है।

स्त्रीः—माता जी इनका कुछ लगता हो तो इनको चिन्ता भी हो, घर में कोई मरे या जीवे इनको क्या। पं० जी ने दोनों की बातें सुनी, पर शान्त चित होकर जूता पहना, लाठी उठाई चल पड़े।

प्यारेः—कहते हैं, स्टेशन पर पहूंचे तो गाड़ी तैय्यार नही है, हां एक मेल गाड़ी तैय्यार है, पर वह उस स्टेशन पर जहां पं० जी न पहुंचना है, नहीं ठहरती, परन्तु पं० जी जैसे कहावत है:—

"हिम्मते मरदां मददे खुदा"

वह अपने भरोसे पर काम करने वाले तो थे ही न, वह तो भगवान् के पुजारी उसी का यन्त्र बन कर कार्य कर रहे थे, बस मेलः ट्रेन पर ही सवार हो गए, जब मेल ट्रेन उस स्टेशन के समीप से निकली, जोर से छलांग लगादी, बाहर गिरे टांगों पर चोटें आई लड़खड़ाते हुए पहुंच गए, जब उन हिन्दुओंने जो यवन होने वाले थे, पं० जी के दर्शन ही किए और उनकी बीती कहानी सुनी, तो सभी के सभी पतित होने से बच गए, अब घर से तार मिली, कि तुम्हारा पुत्र स्वर्ग वास हो गया है लोगों ने

शोक प्रकट किया परन्तु पं० जी के मस्तक पर जरा भी दुःख चिन्ता प्रकट तक न हुई, और लोगों से कहा, प्यारे क्या हुआ एक पुत्र मर गया सहस्रों भाईयों का जीवन पतित होने से बच गया। यहां तक नहीं, आगे चलिये, ! एक नौजवान मुसलमान, पं० जी की शरण में वैदिक शिक्षा ग्रहण करने अर्थ आया, शरण में ले लिया, पढ़ाना आरम्भ किया, माता रोकती है बेटा इसको न पढ़ा, यह तेरा भयानक शत्रु है, कई बार कहा परन्तु पं० जी ने यही कहा, कि वेद विद्या प्राप्त करने आया है जो भगवान् का ज्ञान है, सूर्य अपना प्रकाश किसको नहीं, देता शरण में आगया है, पं० जी के मन में जरा भी द्वेश नहीं है, सब में अपनी आत्मा देखने वाले वह नियम जो ऋषि ने लिखा है संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश है कहा यह आदेश ऋषि का कैसे पूर्ण करूंगा, नियम के बनाने वाला मेरा गुरू दयानन्द महाराज ने वेद भगवान् की अमर पवित्र वाणी कल्याणि का प्रचार करते तेरह बार विष खाया, अन्त समय विष देने वाले को धन की थैली दे कर शत्रु की शत्रुता को नाश करने का उत्तम धर्म मार्ग बतला गया, वह शरीर का पुजारी नहीं था, आत्मा का पुजारी था शरीर नाशवान है आत्मा नित्य है।

मेरा कोई शत्रु नहीं है न मैं किसी को शत्रु देखता हूं जब प्रति दिन सन्ध्या में छः बार याचना करता हूं कि

"यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः"

न मैं किसी से द्वेष करूं और न मुझ से कोई द्वेष करने वाला हो,

एक खालिक के बशर सब एक होने चाहिएं।
एक वालिद के पिसर सब एक होने चाहिएं॥
दो नही अहले नजर सब एक होने चाहिएं।
हिंद के नूरे नजर सब एक होने चाहिएं॥

एक हो जाए तो खुद ही एक अपना हो गया।
ख्याल यह छोड़ा है जब से वख्त अपना खो दिया ॥

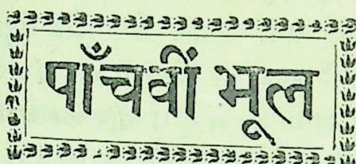
अब जब दुई को हृदय में लाऊं तो भगवान को जुदा अपने से पाऊं जुदाई में खुदाई कहां, इत्यादि कहा और पढ़ाता रहा, शरणागत में आया हुआ विद्यार्थी समय की खोज में था, पं० जी भोजन खा रहे थे, वह विश्वास घाती आया पेट में छुरा घोंप कर भाग गया, पं० जी सदा के लिए प्रभु गोद में पहुंच गए, क्या वह मर गए ? नहीं अमर हो गए अमर रहेंगे, क्या पं० जी मोह का शिकार हुए ? वह मन के स्वामी थे धृति लक्ष्य था, सज्जनों सोचो विचारो आज कल कोई आर्य समाज में ऐसा उपदेशक माई का लाल देखने में आता है ? जिस ने इस प्रकार से कार्य किया हो जिसने तन, धन, मन, स्त्री, पुत्र, तात्पर्य यह है कि प्राण तक वैदिक धर्म के प्रचारार्थ न्योछावर कर दिया, क्या उन पर मोह ने अधिकार जमाया था ? लिखने व उपदेश करने में शेर बबर की भान्ति गरजने वाला, निर्भय आत्मा थी जो जीवन काल में लेख का वह कार्य कर गया है, कि कोई ऐसा लेखक जो इस प्रकार का ग्रन्थ लिख सके नहीं मिलता आज बड़े २ विद्वान आर्य कुल्यात मुसाफिर ग्रन्थ को पढ़ कर लोगों से शास्त्रार्थ करते हैं, पं० लेखराम । का पुस्तकें लिखने का उद्देष्य धन कमाना न था, किन्तु त्याग भावना थी, वर्तमान काल में जो पुस्तक विद्वान लिखता है, उद्देष्य तो परमार्थ, पर लक्ष्य स्वार्थ होता है (धन प्राप्ति) तो क्या ऐसे विद्वान् आत्मा, परमात्मा का साक्षात् करेंगे ? नहीं मोह का ग्रास बनेंगे और दुनियां को ले डूबेंगे ॥

मोह के जीतने का साधन

अपरिग्रह, तप, धृति,

प्यारे-इतने सुनेपर विचारकरो, इसपर आचरण करोगे, सुखपावोगे ।

पाँचवाँ उपदेश



परमेश्वर की दया और न्याय को भुलाया हुआ है

कारण–अहँकार

ओ३म् यंस्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरं, उते माहु नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवामिनाति, श्रदस्मैधत्त स जनासइन्द्रः॥

ऋ० २. १२. ५॥

शब्दार्थ–जिस अदभुत भयंकर वस्तुके विषय में लोग प्रश्न किया करते हैं कि "वह कहाँ है" और जिस इस के विषय में बहुत से कहा करते है, कि "वह है ही नहीं" वही अरि के विपरीतगामी स्वार्थी पुरुष के सब संसारिक समृद्धि, पुष्टि को भूकम्प की भान्ति विनष्ट कर देता है। हे मनुष्यो ! इस परमेश्वर पर श्रद्धा करो वही परमैश्वर्यवान् परमेश्वर है।

प्यारे ! ससांर की लीला बड़ी विचित्र है। बड़े बड़े ऋषि, मुनि, योगी तपस्वी, ध्यानी इस लीला रचने वाले का गीत गाते गाते इस असार संसार से चलते हुऐ अन्त में यही पुकार पुकार कर कहते गऐ, प्रभो ! तेरी लीला अपरम्पार है। तेरी लीला अपरम्पार है। तेरी लीला परम्पार है। तू बे अन्त, तू अन्त, तू अन्त,। तेरा वार पार न पाया किसी ने।

सन्त महात्मा:- आओ आज हम भी सब मिल कर उसका गीत गाऐं।

गीत

हे प्रभो तेरी निराली शान है, आँख वालोंको तेरी पहचान है
अनगिनत पापीतरे तेरे फ़ैजसे, तू दयालु मेहरबाँ भगवानहै। हे
मुझ अभागेके गुनाहोंपर न जा, यह तेराबच्चा महज़ नादानहै। हे
खेलमें बचपन, जवानी विषयोंमें, वृद्ध हुआ तृष्णा में ही ग़लतान है। हे
अपनी भक्ति का मुझे भी दानदो, याचना यह सर्वशक्तिमान है।
हे प्रभो तेरी निराली शान है, आँख वालों को तेरी पहचान है।

अब जब भजन समाप्त हुआतो सत्संगी प्रेमियोंमें सेएक नवयुवक खड़ा हो कर कहता है, "महात्मा जी! वह ईश्वर कहाँ है, जिसने इसबड़े भोग-दायक संसार में दुख-दर्द मृत्यु आदि पैदा करके लोगों का रस भंग कर रखा है, जो कि बड़ा दुष्टों का दलन करने वाला तथा अपने वज्र से पापों का संहार करने वाला कहा जाता है, उस घोर भयंकर ईश्वर के विषय में पूछते हैं कि वह कहाँ है? हमें बताओ, वह कहाँ है! दूसरे कुछ भाई निश्चय ही कर लेते हैं कि "ईश्वर फ़ीश्वर कुछ नहीं है। ईश्वर तो अब बीसवीं शताब्दी में मर गया है, ईश्वर केवल अज्ञानियों के लिये है।"

सन्त महात्मा:-प्यारे! सावधानी से देखो। सत्य को खोजो। और इसे धारण करो, देखो, वह पुरुष जो अपनी समझ में प्रकृतिमय ईश्वर विहीन (नास्तिक) संसार में रहते हैं, अतः जो इस जगत् में जिस किसी तरह सुख भोग करना ही अपना ध्येय समझते हैं और स्वभावतः विपरीतगामी होकर धर्म दया आदि के सत्य मार्ग को तिरस्कृत कर निरन्तर अपनी पुष्टि की ही धुन में लगे रहते हैं अर्थात् धन संग्रह, स्त्री, पुत्र, प्रतिष्ठा, प्रभाव आदि से अपने को समृद्ध और पुष्ट करते जाते हैं उन अभिमानी स्वार्थी लोगों के सामने भी एक समय आता है जब कि उनका यह संसारिक भोग का खड़ा किया हुआ सारा महल एक दम न जाने कैसे गिर पड़ता है

उनके जीवन में एक भूकम्प सा आ जाता है उन्हें एक जोर का धक्का लगता है; उनकी वह सब भौतिक पुष्टि क्षण में मिट्टी हो जाती है सब ठाठ गिर पड़ता है। उसी समय बहुत बार उनका अभिमान नष्ट होता है और वे नम्र होते हैं। कल्याणकारी है वह धक्का, कल्याण कारी है उनका वह सर्वनाश, यदि वह उन्हें नम्र बनाता है, और धन्य है वह पुरुष जिन्हें यह कल्याणकारी धक्का लगता है। क्योंकि वहीं पर प्रभु के दर्शण हो जाया करते हैं।

प्यारे ! वह ईश्वरआँख से देखने की वस्तु नहीं है, उसे तो श्रद्धा की आँख से देखो; जो मनुष्यों की बड़ी बड़ी योजनाओं को पल मारते में बदल देता है, कुछ का कुछ कर देता है, जिस के आगे अल्प मनुष्य का कुछ बस नहीं चलता. जरा उसे देखो, नम्र होकर उसेदेखो, वहीं परमेश्वर है। इस संसार के सब बड़े से बड़े भोगदायक ऐश्वर्य उसीके हैं, जिन्हें कि हम भोगते हैं उस परमैश्वर्य वाले इन्द्र को श्रद्धा से देखो, अपने हृदय की सत्य धारणा शक्ति (श्रद्धा) से उसे देखो। हमारे पापों को सुधारने वाली वही है, हमारी विनाश कारिणी अस्वास्थय कारी पुष्टि, को गिरा देने वाली वही है इस प्रकार कल्याण करने वाला वही है उस पर श्रद्धा करो।

राम लाल:--महाराज ! संसार के भीतर बल शाली ज्ञानी धनी लोग अनेकों पाप और अत्याचार कर रहे हैं, क्या भगवान् सोया हुआ है, जबकि आप कहते हैं और वेद का आदेश भी ऐसा है कि वह पापियों का दलन कर देता है अर्थात् गीता में भगवान् कृष्ण चन्द्र जी महाराज ने भी लिखा है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम ।।७।। अ० ४

अर्थात:—जब जब पापों की वृद्धि होती है तब तब मैं उस के नाश करने को आता हूं।

सन्त महात्मा: — प्यारे आप का कथन सत्य है पर थोड़ा सा समझने का फेर है प्रत्येक वस्तु जो उत्पन्न होती है उस का बीज होता है, नाम तो प्रत्येक बीज का होता है, पर बीजों की अवधि होती है, फलने और नाश होने की, एक बीज होता है, जैसे साठी चावल, यह साठ दिन में पक कर तैय्यार होता है, फिर पौदा नष्ट भ्रष्ट हो जाती है, गेहूं छे मास के पश्चात् पक कर तैय्यार हो जाती है फिर समाप्त हो जाती, है, ईख को एक बार बोवो, तीन वर्ष तक फल देता रहता है फिर समाप्त।

आम की गुठली को बोवो ५ वर्ष तक उसकी सेवा करो तो फिर फल देता है जो अनेकों वर्षों तक फिर खाते रहो। प्यारे! भगवान् तो न्याय और दया करने वाला है वह सोया हुआ नहीं है वह त्रिकाल में जाग्रत अवस्था में रहता है वह सर्व अन्तर्यामी होने के कारण प्रत्येक मनुष्य के पाप व पुण्य के कर्मों को जानता है, वह कर्म फल दाता है, देखो! तुम ने गेहूँ बोया उसे पानी दिया अब अच्छा पक कर खेत तैय्यार है तो यालाबारी (गड़ा, ओले) हो गई अब सारा खेत नष्ट हो गया, तो बताओ यह किसने ऐसा किया है जो पका पकाया खेत एक पल में नष्ट हो गया, बताओ अब कुछ कर सकते हो, कोई कोर्ट अदालत ऐसी जहां पर जाकर दावा पेश कर सको, नज़र आती है?

(२) कोयटा में भूचाल दो चार सैकिंड आया, सहस्त्रों मनुष्य परिवार मृत्यु का ग्रास हो गए, सारा कोयटा पृथ्वी में दबकर समाप्त हो गया अभी आप अपने सामने देख तथा अपने ऊपर सहन कर चुके हो, कि जब पाकिस्तान में थे, तो किस दशा में थे। क्या किसी को ऐसा ज्ञान था कि एक दिन लाखों की संख्या में मनुष्य घर से बेघर और लाखों क्रोड़ों की सम्पत्ति के स्वामी होते हुए सब को अपने हाथों फैंककर दर बदर जो धक्के खा रहे हैं. नसीब होंगे, नहीं कदापि नहीं, चाहे हम बेसमझी से यह दोष अपनी बुद्धि अनुसार कांग्रेस पर, या महात्मा गांधी पर लगाते हैं, पर ज़रा ध्यानपूर्वक सोचो; क्या कांग्रेस या महात्मा

गांधी की यह इच्छा थी कि इस प्रकार का संकट पंजाब पर आवे, प्यारे किसी की भी ऐसी नियत न थी ऐसा समझना भूल और नादानी है प्यारे, यह समष्टि पाप का फल था उस कर्मफल दाता ने ही हमे अपने किए कर्मों का फल दिया है यह परमात्मा का न्याय और दया है, हम तो परसों का खाया पिया भूल जाते हैं। और देखो! कि अनेकों ऐसे व्यक्ति जो पाकिस्तान में कंगाल और पराधीन रहते थे, वह यहां आ कर मालो माल हो गए। वह प्रभु कैसा है।

कवि ने क्या सुन्दर लिखा है: —

तू शाहों को गदा कर दे, गदा को बादशाह कर दे।
इशारा तेरा काफी है, बनाने में मिटाने में ॥

सुनो, देखो! आपके सन्मुख बीता हुआ सही दृश्य बतलाऊं कि वह परमात्मा कहां है, वह कैसे अहंकारियों का अहंकार नष्ट करता है, और कैसे शाहों को गदा करता है।

प्रत्यक्ष दृश्य ॥

(१) पाकिस्तान के बन जाने पर जब पञ्जाब का नया मन्त्री मन्डल बना तो भार्गव को प्रधान मन्त्री बनाया गया, थोड़ा समय वह स्थित रहा तो भार्गव को मन्त्रीपद से हटा कर श्री भीमसेन सच्चर को प्रधान मन्त्री बनाया गया, लगभग छः मास ही बीते होंगे, सच्चर को हटा कर भार्गव फिर प्रधान मन्त्री बना, अब सोचो क्या भार्गव को यह खबर थी कि मैं मन्त्रीपद से पृथक हो जाऊंगा क्या सच्चर को मन्त्रीपद पर नियुक्त होने पर उसके यह आशा थी कि मुझे छे मास के पश्चात् मन्त्री पने से हटना पड़ेगा।

अच्छा! क्या भार्गव जब दोबारा प्रधान मन्त्री बना, इसको यह खबर थी कि जिस प्रकार से इसको मन्त्रीपद से हटाया गया, ऐसी मेरी दुर्गति होगी जीते जी मुझे मुर्दा कर दिया जावेगा, दूसरा भार्गव ने कितना धन, तन मन चुनाओं पर व्यय किया कितनी पार्टियां बनाई, प्रधान मन्त्री

बनना तो दूर रहा, किन्तु मैम्बर तक भी न बन सका। भले संसारिक लोग अपने अपने विचार से कुछ कहें, पर वास्तविकता यह है कि यह खेल इस खिलाड़ी का है जो ऊपर कहा गया है।

"शाहों को गदा कर दे, गदा को बादशाह कर दे।

प्यारे:-भार्गव पटेल के सहारे पर था उसी के संकेत पर चलता था, ऐसा ही कहा जाता है, परन्तु जब तक पटेल जीवित रहा, तब तक भार्गव जीवित रहा, जब पटेल संसार से चल बसा, भार्गव जीते जी मन्त्रीपद से चल बसा, अब सच्चर साम्राज्य है। यह पं० जवाहर लाल के सहारे पर है, कल उस का परिवर्तन हो जावे, तो सच्चर साम्राज्य समाप्त, यह क्यों, मनुष्य भूला हुआ है उस न्याय और दया करने वाले को, यदि उस का हो जावे, तो फिर कभी मर सकता है? क्या महात्मा गान्धी को किसी ने महात्मा अधिकार से हटाया क्या संसारिक लोगों ने वोट दे कर उस को महात्मा बनाया था, नहीं, हरगिज नहीं, वह महात्मा महान आत्मा का पुजारी बना, वह नित्य है, महात्मा गान्धी नित्य रहेगा, वह केवल भारत में महात्मा नहीं पुकारा गया, किन्तु सारे संसार में उसे महात्मा पुकारा गया, और पुकारा जाया करेगा, महात्मा गान्धी ने भगवान् का यंत्र बन कर उस का कार्य समझ कर किया भगवान् नित्य जीवित है महात्मा गान्धी नित्य जीवित रहेगा।

कवि ने क्या सुन्दर कहा है :-

जो कुत्ता दर दर फिरे, दर दर दुर दुर होय।

एक ही दर का हो रहे, दुर दुर करे न कोए॥

प्यारे वर्तमान कालमें भारत के राज अधिकारी थपेड़े खाते हुए भी नहीं समझते हैं, जब चुनाव के दिन थे तो लोगों के दर दर धक्के खाते पाँव चूमते रहे, केवल इस लिए कि हम तुम्हारी सेवा करेंगे, मन, धन, लुटाया कस्में खाईं, विश्वास दिलवाने के वास्ते, तो राज्य की कौंसिल

की मैम्बरी में चुने गए, अब कुर्सी मिल गई तो स्वार्थ और बदला लेने की भावना आंखों के सामने हर समय नाच रही है, वह भोले नहीं समझते, कि यह कुर्सी जिस पर बैठे हुए, इस समय हम, तुम कर रहे हो, क्या यह ऐसे कर्मों के बदले में मिली थी, या नम्रता याचना और झुके थे, नम्र हुए थे दीन निर्बल का स्वरूप बन कर दर दर पर याचक बने थे,

प्यारे ! यह उसी का फल है, आप वैसे ही पहले की भांति झुक कर रहो, यह इसी न्याय दया करने वाले की कृपा है, जिस ने तुम्हें झुकता देख कर फलीभूत किया, सम्भल कर रहो, नहीं तो इस की थपेड़ लगेगी तो मुहँ से मां का नाम भी न ले सकेगा फिर तुरन्त कहेगा, वाह! ईश्वर तेरी महिमा अब तू यहां है ।

अंहकारी ! देख और सम्भल

वह ईश्वर कहां है

जतोई नामक एक कस्बा जो मुज्जफर गढ़ जिला (पाकिस्तान) में है, एक समय विलायत से मांग आई, कि भेड़ बकरियों के ताजा जमें बच्चों की खालें उतार कर भेजो, और प्रति खाल का मूल्य भेड़ बकरी की कीमत से बढ़ चढ़ कर नियत किया गया, तो एक मनुष्य ने यह व्योपार आरम्भ कर दिया । वह छोटे छोटे बच्चे लाए, उनका खाल उतरवा कर भेजना आरम्भ कर दी और वह धन से भरपूर होने लगा, उस के तीन बच्चे थे, एक की आयु ७ वर्ष दूसरे की ५ वर्ष तीसरा बच्चा अभी दो चार दिन हुऐ उत्पन्न हुआ था मां की गोद में लेटा हुआ था एक दिन वह स्वयं, भेड़ बकरियों के नन्हे बच्चोंको मोल लेने को गया, तो पीछे दोनों भाई बाहर खेल रहे हैं, खेलतेर बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा, कि घर जा,बाबा वाली छुरी ले आ, छोटा भाई घर गया छुरी उठा लाया और भाई को दी, अब बड़े भाई ने छोटे से कहा, कि तू अब लेट जा, तो वह लेट

गया, अब बड़ा भाई छोटे से यूं कहता है, कि भाई बाप इस छुरी से कैसे करता है, यह शब्द कह कर छोटे भाई के गले पर छुरी फेर दी तो रक्त की धार चल पड़ी, बच्चे ने एक चीख मारी प्राण दे दिये। माता नव जात बालक को ले कर अन्दर सोई पड़ी थी, उसके कान में जब बच्चे की चीख की आवाज पहुंची तो वह हाहाकार करके उठ बैठी, और उठ कर बाहर आई; तो क्या देखा, बच्चा रक्त से लत पत है, जान में जान नहीं है, अब बड़ा बच्चा मां को आते देख कर भागा कि मुझे पीटेगी, बच्चे की मां उसे दौड़ता देख कर उसके पीछे पकड़ने को भागी, बच्चे ने जब देखा, मां पकड़ने को दौड़ी आ रही है; मार पीट करेगी तो कूआं निकट ही था, कूएँ में छलांग लगा दी मृत्यु का ग्रास बन गया अब माता रोती पीटती घर की ओर आई; अन्दर गई तो क्या देखा, वह नन्हा बच्चा जो अभी दो चार दिन से उत्पन हुआ था, पीछे से उसको कुत्ते ने आकर फाड़ डाला है; अब माता सिर पर राख डाल कर रोने पीटने में हाल से बेहाल हो रही है, सारा घर सुनसान बना हुआ है, अब चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा दीख रहा है, लोग इकट्ठे हो गऐ 'त्राहिमाम्' २ कर रहे हैं अब बच्चों का बाप घर पहुंचा दृश्य देखा; ऐसा गिरा, कि फिर उठ न सका; अब सभी लोग कह रहे हैं वाह प्रभु तेरी लीला, तेरा न्याय; और दया; प्यारे —अब समझे; कि भगवान् कहाँ है कवि ने क्या सुन्दर कहा है:—

न चैन पायगा तू भी जालिम, किसी का खाना खराब करके।
यह याद रखना कि लेंगे बदला, जनाब बारी हिसाब करके॥

मैं हूं

फ़ख़र बकरे ने किया मेरे सिवा कोई नहीं।
मैं ही मैं हूं इस जहाँ में, दूसरा कोई नहीं॥

जब न छोड़ी "मैं,मैं" उस ने माया बे असबाब ने।
फेर दी गरदन पे, तंग आकर छुरी कसाब ने॥
गोश्त हड्डी और चमड़ा जो था जिस्मे ज़ार में।
कुछ पका कुछ फुक गया, कुछ बिक गया बाज़ार में॥
अब रही आंतें फकत "मैं मैं" सुनाने के लिये।
पे जा उस को ले गया, धुनकी बनाने के लिये॥
चोट जब पड़ने लगी, तो राग क्या गाने लगी।
मैं के बदले तू ही तू की फिर सदा आने लगी॥

सन्त कबीरः- कबीरा गरव न कीजिए, रंक न हंसे कोए।
अजे बी नांव समुन्द्र में, क्या जाने क्या होए॥

अरे ओ अण्डे खाने वाले, छोटे छोटे निरापराध पक्षि-पक्षियों तथा भेड़; बकरियों के नन्हे नन्हे बच्चों पर छुरी चला कर; घर को शमशान और पेट को कबरिस्तान बनाने वाले; इन्सान का बुत बनेहुए, इन्सान कहलवाने वाले; और रूप निर्दयता के बने हुए परमात्मा के रचे हुए बागीचे को मत उजाड़ो, यह बेज़बाँ हैं तुम ज़बाँ वाले हो; मत समझो, कि वह तुम्हारी ही केवल आवाज़; पुकार को सुनता है किन्तु वह बे ज़बानों, बेकसों की भी पुकार बार बार सुनता है इस का नाम है गरीब निवाज़, गरीब परवर है, उस का नाम दौलत निवाज़ और दौलत परवर नहीं, न किसी ने इस को ऐसे पुकारा है, किसी को हेच, नीच मत देखो, हम सभी उसी की सन्तान हैं। अण्डे खाने वालो, तुम नहीं देख रहे, कि घरों में अनेकों ऐसी देवियां हैं जिनके गर्भ होते गिर रहे हैं; बच्चे जमते ही मर जाते हैं खेलते दौड़ते बच्चे आखों के सामने समाप्त हो रहे हैं नौजवान लड़के इकलौते माता पिता के सामने क्षण भर में संसार से विदा हो रहे हैं क्या कभी विचार किया, कि ऐसी अवस्था क्यों हो

रही है. डाक्टरों वैद्यो मन्दिरों शिवालयों ज्योतिषियों के पास जाकर तन मन धन लुटा कर बरबाद हो रहे हैं, क्या कभी वास्तविकता को सोचा, अरे दुष्टो ! इलाज करने से पहले परहेज करो; बिना परहेज किये के चिकित्सा सफल न होगा यह उचित है कि चिकित्सा करने से पूर्व "परहेज़ करो" वर्तमान काल में कोई भी डाक्टर, वैद्य ऐसे रोगी को यह नहीं कहेगा, जिस पुरुष का वीर्य कमजोर है और इस की स्त्री को लिकोरिया का रोग है कि तुम जाकर छः मास का ब्रह्मचर्य व्रत करो, क्योंकि वैद्य, डाक्टर ईश्वर के भरोसे पर विश्वास नहीं रखते वह ऐसा कहें तो उन को भय रहत है कि फिर हमारी आय कहाँ से होगी वह रूप तो परोपकारी का बनाए हुऐ हैं पर वास्तव में स्वार्थी हैं।

प्यारे ! आओ संभल जावो, भगवान् के बागीचों को सुन्सान मत बनाओ, नहीं तो अपने आपको सुनसान पाओगे फिर देखने में आवेगा कि वह ईश्वर कहाँ है।

धनी अहंकारी

मुझे बताया गया है कि मुल्तान नगर में एक छाबड़ी वाला छोले तैय्यार करके वेचा करता था एक सेठ जी आए और यूं कहा—

सेठ जी:—अरे दो पैसे के छोले दे ।

छाबड़ी वाला:—लो महाराज ! पत्ता साफ किया, छोले उठाए उस पर मसाला, निंबू रस निचोड़ कर कहा, लो महाराज ।

सेठ जी:—छोले लिए धीरे धीरे खाए, पत्ता फैंका, जेब से रूमाल निकाला मुँह को साफ किया और चलते बने ।

छाबड़ी वाला:—(हाथ जोड़ कर सेठ जी महाराज से बोला) ! आप पैसे देना भूल गए हैं ।

सेठ जी:—(क्रोध से लाल पीला हो कर कहा), कम्बख्त इतनी असभ्यता,

बाजार में मुझ से पैसे मांगता है।

छाबड़ी वाला:- (हाथ जोड़े पांव पर पड़ा हुआ) महाराज, मैं गरीब आदमी हूं अधेला, अधेला, पैसा, पैसा, के छोले बेच कर दो चार आना रोज बच जाते हैं, निर्वाह करता हूं, मैंने औ‚ तो कुछ नहीं कहा, मुझ पर क्षमा करो फिर नहीं मांगूंगा।

सेठ जी(आग बबूला हो कर) तुम छोले बेचने वालों का दिमाग बिगड़ा हुआ है, तुम किसी की परवाह नही करते, देख, अभी तुम्हें मजा चखाता हूं, यह कह कर चलता बना।

प्यारे:- धन का नशा बड़ा अत्याचारी होता है, भंग, अफीम शराब का नशा मनुष्य को अपनी सुध में नहीं रहने देता, प्रभु भक्ति का नशा संसार की सुध नहीं रहने देता, परन्तु धन का नशा, संसार के स्वामी धन और अन्न के दाता, स्वामी प्रभु की, न अपने बेगाने की सुध रहने देता है, (एक मैं है) अब चारों ओर से छाबड़ी वाले के कान में आवाज आई यह बेचारा अब जेल में गया, सेठ जी कह गया है। जरूर ऐसा करेगा. यह बड़ा अत्याचारी है, किसी ने कहा, अरे छाबड़ी उठा, यहाँ से शीघ्र चला जा, कहीं छुप जा, नहीं तो तेरी खैर नहीं, यह जो कहता है करके ही छोड़ता है यदि कोई सिफारिश हो तो इसके पास ले जा।

छाबड़ी वाले ने जब यह सुना तो तत्काल छाबड़ी उठाई घर पहुँचा, छाबड़ी को छोड़ दरवाज़ा बन्द करके एक सुनसान मकान के भीतर कोने में छुप कर रोने लगा, और पुकार सुनने वाले को सुना रहा है।

ओ३म् इमंमे वरुणा श्रुधी हवमद्या च मृड़या।
त्वाम वस्यु रा चके ॥१॥ य० अ० २१ मं १

अर्थात् ऐ पाप निवारक मैं तेरी शरण आया हूं, मेरी तू आज पुकार सुन, मुझे इस कष्ट से बचा तू मेरी बीती सारी अवस्था को जानता है तू

निर्धन बेकसों की सुनता है, मेरा अब तेरे बिना कोई सहारा, आसरा नहीं, तू निराश्रय का आश्रय, निर्बलों का बलदाता निमानों का मान नितानों की तान, अनटेकों की टेक है, नाथ कृपा करो—मुझे बचाओ !

प्यारे:—सेठ जी अब अपने ठिकाने पर पहुँचे, तो नौकर को बुलाया, और कहा अभी अभी जावो, अमुक व्यक्ति (गुँडा का सरदार था) को बुला लाओ, अपने साथ लाओ, देर मत करो, नौकर गया और गुँडों के सरदार को बुला लाया, जब सेठ के सन्मुख वह आया ता उसने, झुक कर प्रणाम किया, और पूछा, महाराज, क्या आदेश है ।

सेठ जी:—अरे देखो एक काम करना है, पर अभी अभी देर मत करो ।

कवि ने क्या सुन्दर कहा है:—

ऐ ज़र तू खुदा नहीं वलेकिन ब खुदा,
सतारे अयूब व काज़ी उल हाजाती

अर्थात् ऐ ज़र तू खुदा नहीं परन्तु कसम खुदा की कि तू, ऐबोंको छुपाने वाला और हाजितों, कठिनाइयों को मिटाने, दूर करनेवाला है ।

गुँडा:—महाराज आज्ञा करो जैसा कहोगे, वैसे ही कर दूँगा आपकी छाया में रहें, फिर काम में देरी हो !

सेठ जी:—अमुक छाबड़ी वाला जो छोले बेच रहा है उसको कारावास में डलवाना है ।

गुँडा:—सेठ जी, बस यही बात है, यह तो साधारण कार्य है आपका आशीर्वाद चाहिये, आप दस रुपया मुझे खोटे दे दो ।

सेठ जी ने मुनीम (खजान्ची) से कहा दस रुपऐ खोटे इनको देदो, गुँडा दस रुपऐ लेकर जब चला, तो सेठ जी खूब हंसने लगे, कि आज खूब तमाशा देखेंगे, तात्पर्य यह कि सेठ जी इतने हंसे, कि पेट की आँतों में बल पड़ गया (कौलन्ज) हो गया अब हकीम, वैद्य, डाक्टर बुलाए

जा रहे हैं सेठ जी हाहाकार मचा रहे हैं, धन लुटाया जा रहा है इन्जैक्शन हो रहे हैं, चारों ओर सर्व परिवार, दोस्त, मित्र इकट्ठे हैं इलाज हो रहा है, पर सफलता कुछ नहीं हो रही है, अन्त में सेठ जी तड़पते, तड़पते भगवान् को पुकार रहे हैं, आओ प्रभु दया करो, ऐसा कहते कहते, तीसरे घन्टे में प्राण दे दिए, अब अर्थी उसको उठाई जा रही है त वह बे सहारा, निधन छाबड़ी वाला सुनसान मकान से आँखें पोंछ कर बाहर निकला तो अर्थी को देख कर पूछा यह किस की अर्थी है, उतर मिला, अमुक सेठ की मृत्यु होगई है, और नगर में हाहाकार मची हुई है, लोग कह रहे हैं यह उस गरीब छाबड़ी वाले की आह का फल है; सेठ कितना निर्दयी था अहंकारी था किसी को आप जैसा नहीं समझता था वाह प्रभु तेरी लीला, तेरा न्याय महान् है सच मुच तू दयालु है, दुखियों बे सहारों की तो तू तत्काल सुन लेता है

कवि लिखता है

ऐ ज़ालिम गरीब को मत सता, गरीब रोदेगा।
सुनेगा इसका मालिक, तो जड़ से खोदेगा ॥

बुरा गरीब का मारनो, बुरी गरीब की आह
मुए बकरे की खाल से, लोहा भसम हो जाय

गर इन्साफ परस्ती बद अखतर किस असत।
कि दर शहतशरंज दीगर कस अस्त ॥

अर्थात:- ऐ इन्सान यदि तु जानना चाहता है, कि इस संसार में अभागा मनुष्य कौन है, उत्तर:-जो दूसरों को कष्ट दे कर आराम चाहता है।

ओ बशर ओ खाक के पुतले तुमें इतना ग़रूर।
तेरे हम जिन्स और फिर तु ही रहे उन से नफ़ूर ॥

नशाए ज़र नशाए ज़र की तरह क्यों चढ़ गया ।
हो गई उल्टी समझ, क्यों क्या हुआ तेरा शऊर ॥
ऐ बशर तुझ पर न होता, फ़ज़ल गर अल्लाह का ।
तुझ को कब मिलती यह इज्ज़त यह शराफत ॥
कर खुदा का शुक्र, क्या था क्या से क्या तू हो गया।
जो हो करना आज करले, कल तो मरना है जरूर ॥

कहते हैं अहंकार इस को खा जाना अर्थात दूसरे
की बुराई को भूल जाना, मौत को याद रखना

करनी भरनी

कन्चन तजना सहज है, सहज त्रिय का स्नेह,
मान बड़ाई इर्षा मुशकिल तजना देहय ॥

मुझे बताया गया कि एक गृहस्थी जो जेहलम जिला का था जीविकार्थ अफरीका गया उस समय उसकी धर्मपत्नी गर्भवती थी इसके पीछे लड़का पैदा हुआ गृहस्थी १५-१६ वर्ष वहाँ रहा, रुपया भेजता रहा, पर स्वयं न आया लड़का होनहार स्कूल में पढ़ रहा है, पन्दरह सोलह वर्ष का हो गया प्रति दिन मां से आ करके पूछे मेरे पिता जी कब आयें गे माता जी समझाती रही बेटा आजावेंगे पत्र आया हुआ है अब शीघ्र आ जावेंगे ।

सज्जनों ! स्कूल में गर्मी की छुट्टियाँ हुई लड़का घर आया माँ से बोला मैं अब पिता जी को मिलने को अफ्रीका जाता हूं माँ कहती है बेटा अफ्रीका बहुत दूर है बस अब तेरे पिता जी आने वाले हैं घबराओ नहीं

पर लड़का न माना और कहा, माँ जी ! मनुष्य पूछता पूछता दिल्ली पहुँच जाता है मैं मूर्ख थोड़ा हूं मैट्रिक पास हूँ, और साथ मेरे एक साथी भी है अकेला थोड़ा जा रहा हूँ परन्तु माता के रोकने पर लड़का हठ करता ही रहा अन्त में माता जी ने रुपये दे कर आज्ञा दे दी दोनों साथी रवाना हुए, मार्ग में गाड़ी परिवर्तन करनी थी, उतर पड़े, धर्मशाला में चले गए, रहने को एक कमरा धर्मशाला के प्रबन्ध कर्तासे ले लिया, भोजनादि करके रात को लेट गए दैवयोग से रात के १२ बजे गाड़ी आई एक यात्री नौकर सहित उतरा सीधा वह भी उसी धर्मशाला में आ गया सरायवाले ने उस को ऊपर का कमरा आराम करने को दे दिया वह यात्री नौकर सहित छत पर चौबारे में पहुंचा तो नीचे वाले कमरे में जो दोनों लड़के सो रहे थे तो एक लड़के के पेट में पीड़ा आरम्भ होगई और रोने और चिल्लाने लगा, यात्री ने नौकर से कहा अरे नीचे जाकर शोर करने वालों को रोको, शौर मत करें।

नौकर:–(नीचे पहुंच कर कहा) भाई मेरे, सेठ जी बहुत दूर से आए है, आराम करना है आप शोर न करें।

लड़का–भाई हम शोर तो नहीं कर रहे मेरे साथी के पेट में दर्द हो रहा है इस दर्द के कारण से रो रहा है।

नौकर:–(सेठ जी से) महाराज! नीचे दो लड़के ठहरे हैं एक के पेट में दर्द हो रहा है इस लिए वह रो रहा है।

इतना ही कह रहा था तो जोर से रोने चिल्लाने को आवाजें आने लगी।

सेठ:–(नौकर से) अरे मूर्ख ! सुनता नहीं कितना शोर कर रहे हैं जावो ! सरायवाले से कहो इनको चुप कराए।

नौकर:–नीचे गया सराय वाले के कमरे में पहुंच कर दरवाजा खट खटाया अन्दर से आवाज आई, कौन हो ! नौकर ने कहा महाराज ! नीचे वाले कमरे में दो लड़के शोर मचा रहे हैं, हमारे सेठ जी दूर से थके मान्दे

आए है उनको विश्राम नहीं करने देते ।

सरायवाला उठा दरवाजा खोला साथ चल कर लड़कों के कमरे पर पहुँचा और क्रोध से बोला अरे क्यों शोर मचा रखा है । अब लड़का जोर से रोने चिल्लाने लगा, साथी ने उत्तर दिया महाराज ! हम शोर तो नहीं मचा रहे पेट में पीड़ा लग गई इसलिए रो रहा है खुशी से थोड़ा रो रहा है। आधी रात का समय है सब दुकाने बन्द हैं कहां से औषधि लाऊँ बेबसी से यह रो रहा है । अब सरायवाले ने नौकर से कहा प्यारे यह धर्मशाला है प्रत्येक यात्री आकर विश्राम कर सकता है दुखी हो रहा है क्या करें, यह शोर तो नहीं है यह कह कर सरायवाला चला गया ।

नौकरः-सेठ जी ! सराय वाले को बुला लाया उसने आकर देखा लड़के के पेट में बहुत दर्द हो रहा है, उसने कहा हम क्या करें धर्मशाला है प्रत्येक यात्री आकर ठहर सकता है दुखी है यह शोर तो नहीं कर रहा ।

कह हो रहा था कि लड़के की पहले से अधिक रोने चिल्लाने की आवाजें आने लगी, सेठ क्रोध से लाल पीला हो कर नौकर को दो चार गालें सुनाई स्वयं नीचे उतरा आते ही उन लड़कों को झाड़ें दीं, वह बेचारा पहले से अधिक रोने और चिल्लाने लगा ।

प्यारेः—दर हकीकत वह दिल नहीं; जिस में न हो अहसासदर्द ।

दिदा ए बे नूर है वह चश्म जो पुरनम नहीं ॥

सेठ जी सीधे सराय वाले के कमरे पर पहुंचे उसे जगाया और कहा कि कमरे में दो लड़के शोर कर रहे हैं हमें आराम नहीं करने देते कई बार उन लड़कों को प्यार से समझाया गया पर वह नहीं मानते ।

सराय वाला- भाई ! लड़के के पेट में दर्द है दुखी हो रहा है, कोई खुशी से थोड़ा रो रहा है । सराय यात्रियों के लिए है, दुखियों के लिए है, रात का समय है, दुकाने बन्द हैं, नहीं तो कहीं से औषधि लाते ।

सेठः— अच्छा दरवाजा तो खोलो बात तो सुनो। सराय वाले ने

दरवाजा खोला, सेठ ने दस रुपय अपनी जेब से निकाले सरायवाले की जेब में डाल दिए और कहा इन लड़कों को बाहर निकाल दे ।

सरायवाला दस रुपय देख कर बहुत प्रसन्न हुआ उन दिनों में पैसे का बड़ा महत्त्व था, सेठ के साथ हो लिया लड़कों के दरवाजे पर पहुंचा।

दौलत बड़ी वबाल है इन्सान के वास्ते ।
नादार का फकीर का कोई १अदू नहीं ।। १शत्रु

सरायवाला :—(लड़कां से,) क्यों तुमने शोर मचा रखा है कई बार समझाया गया बाज़ नहीं आते ।

बालकः— (कर जोड़ कर,) महाराज ! क्या शोर कर रहे हैं उदर में इतनी पीड़ा बढ़ रही है कि उसे सहन नहीं कर सकता कृपा कर कोई औषधी हो तो देवें।

सरायवालाः — कोई कृपा वृपा नहीं होती निकलो बाहर यह यात्रियों के सुख पाने के हेतु है न कि तुम दूसरों को कष्ट देते रहो ।

बालकः— (रोते हुये) महाराज ! आधी निशा व्यतीत हो चुकी है शीत मास है, अधिक शीत पड़ रही है अब कहां जायें, (पावों में पड़ कर) महाराज अब हम पर दया करो निशा व्यतीत करने दो ।

सेठः— दया इत्यादि कोई नहीं होती निकलो बाहर नहीं तो कौतुहल बंद करो, तुम दूसरों को आराम भी नहीं करने देते ।

सरायवालाः- अरे निकलते हो या दिखाऊं तमाशा ।

दोनों साथी फूट २ कर रोने लगे, पर्याप्त कर जोड़ कर विनती करी किन्तु कोई ध्यान नहीं दिया, कर जोड़ कर पुनः कहता है भगवान् के नाम पर हम पर दया करो ।

सेठ :— (सराय वाले से कहा) आवो जी इनका सामान बाहर फैंक दें

धक्का देकर निकालें, यह सीधे मार्ग से नहीं जाते ! दोनोंने मिलकर सामान द्वार से बाहर फैंक कर दोनों को धक्के दे कर द्वार से बाहर निकाल सराय का द्वार बन्द कर दिया सेठ जी हंसते हुए ऊपर जाकर बिस्तर पर लेट गए सरायेवाला भी सराये के द्वार को भीतर से ताला लगा कर अपने घर चला गया।

कवी ने कहा है:—

वह दिल कि जिस में सोज़े मुहब्बत न होवे ज़ौक़।
बेहतर है इससे संग कि उसमें शीर तो है॥

बीमार है वह रूह, जो दर्दे आशना नहीं।
बीमार सर जो सामने हक के झुका नहीं॥

बीमार दिल है जिसमें तहम्मल ज़रा नहीं।
बीमार आँख है जो हकीकत नुमां नहीं॥

खुदा रहम करता नहीं उस बशर पर।
न हो दर्द की चोट जिस के जिगर पर॥

गुज़र जाम आफत किसी ही के सर पर।
पड़े ग़म का साया न उस बे असर पर॥

प्यारे:—लड़के का सहयोगी बाहर बैठा अपने साथी के कष्ट को निरीक्षण कर अत्यन्त वेगतासे अश्रु प्रवाह कर रहा है। शीत अधिकतासे पड़ रही है कोई बिचारे का बस नहीं चलता, जिस से कि साथी को आराम पहुँचा सके, अन्त में लड़के ने पेट पीड़ा तथा आधिक शीत के कारण प्राण दे दिए; सदैव के लिये अपने सहयोगी से जुदा हो गया. अब साथी ने रोते २ निशा समाप्त की, प्रातः काल हुआ पूलीस को

पता लगा तो सबइन्स्पैक्टर पूलीस सिपाहियों (दूतों) सहित सराये के द्वार पर पहूंचा और सरायेवाले को बुलवाया।

सरायवाला को रात दस रूपये मिलने से इतनी प्रसन्नता हुई कि दिन चढ़ गया पर नींद खुलती नहीं दरवाजा सराये का अन्दर से बन्द है।

पुलीस मैन ने दरवाजा खटखटाया, आवाजें दीं सरायेवाला जागा दरवाजे की ओर आया बहुत शोर सुना तो दरवाजे की झांकी से झांक कर देखा कि वह लड़का मरा पड़ा है, पूलीस आई हुई है लोगों की भीड़ है, कांपता हुआ सेठ जी के कमरे में गया कहा, सेठ जी देखो रात को कितना अत्याचार आपने कराया लड़के को बाहर फैंक दिया, अब लड़का मर गया है, पूलीस दरवाजे पर आई हुई है लोगों की भीड़ है. अब चलो प्राण बचाओ।

सेठ जी:—डरो नहीं क्या हुआ, ऐसे कई खेल हमने खेले हैं, यह साधारण सी बात है, चारपाई से उठा और हाथ धो कंघी पट्टी कर, पतलून कोट, नकटाई लगा आँखों पर चश्मा लगाया, कलाई पर घड़ी, सरपर हैट (टोपी) पहनी, लाठी उठा मूछों को ताव देता हुआ नीचे उतरा, सेठ जी आगे हैं सराए वाला पीछे, दरवाजा खोला सेठजी की पौजीशन देख कर पूलीस दारोगा ने हाथ से हाथ मिलाया तो सेठ जीने दारोगा साहब को एक ओर लेजा कर पांच सौ रूपया के नोट जेब में डाल दिये और कहा इस मामले को छिन्न भिन्न करके शम्शान में संस्कार शीघ्र करा दो। दारोगा साहब फूला नहीं समाता अब वह लाश के निकट आया।

इन्स्पैक्टर:—अरे लड़के, यह लड़का कहाँ का रहने वाला है तुम रात को यहां चोरी करने आए थे, गुण्डे बदमाश, आज कल शिक्षा ऐसी है; मूर्ख क्या बदी करेगा, जितने शिक्षित चतुर्ता से बुराई करते हैं, हमारा तो इन पढ़े लिखों ने नाक में दम कर रखा है यह बात कह ही रहा था। तो इन्सपैक्टर पोलीस आ गया, यह बड़ा दयानतदार था अब सब

इन्स्पैक्टर आदि सब एक तरफ हो गए, सेठ जी भी चकित हो कर सिर नीचा किए खड़े हैं।

इन्सपैक्टर:— (लड़के से पूछा,) क्यो बेटा तुम कहाँ से आए हो यह लड़का कहाँ का है ?

लड़का फूट फूट कर रोने लगा, बोले तो मुँह से आवाज नहीं निकलती सिसकियाँ भर रहा है सभी लोग इसको देख कर आँखों से आँसू बहा रहें है इस दृश्य को देख कर वह सेठ जिसने निर्दयता से इस बालक को फैंका था चेहरा स्याह हो रहा है दिल धड़क रहा है अब बस नहीं चलता, कैसे पीछा छुड़ावें, क्योंकि आखिर एक दयानतदार सच्चा मनुष्य है।

इन्स्पैक्टर की आंखों में आंसू आ गए लड़के को प्यार किया, दलासा दया, समझाया बेटा, जो होना था, सो हो गया अब बनता कुछ नहीं, शान्ति करो, अब मुझे बता, इस लड़के का नाम क्या है ?

लड़का—इसका नाम राम लाल है।

इन्स्पैक्टर —इसके पिता का नाम व जात ?

लड़का--मुकन्द लाल, ज़ात अमुक।

इन्स्पैक्टर--निवास स्थान ?

लड़का—गावों कालू ज़ला, जेहलम।

जब लड़के ने, लड़के का पूरा पता बताया, तो सेठ ने फिर पूछा, इस लड़के का नाम क्या है ? पिता का नाम ? निवास स्थान पूछा तो लड़के ने पहले की भान्ति सारा पता बतलाया, तब सेठ जी ने भूमि से मिट्टी उठाई अपने सिर पर डालो चीखें मार मार कर रोने लगा, हाय पुत्र हाय बेटा राम लाल मैं ने बड़ा अत्याचार किया।

अब सारी जनता, पूलीस यह दृष्य देख कर चकित हो रही है कि यह क्या था, और क्या होगया चारों ओर सब ही रो रहे हैं।

इन्स्पैक्टर--(सेठ जी से) क्यों भाई, क्या बात है! तुम क्यों इतना रोना पीटना कर रहे हो।

सेठः—अपने मुहं पर थप्पड़ मार कर बोला, महाराज! मैं सोलह वर्ष से जापान रहता था, उस समय यह बच्चा मेरी स्त्री के गर्भ में था मेरे पीछे जन्म लिया, मैं खर्च भेजता रहा, इसकी चिट्ठी आई कि मैं अब आपके पास आरहा हूं मैं ने तार दी तुम मत आओ, मैं आ रहा हूं प्रतीत होता है तार इसे नहीं मिली, यह पहले चल पड़ा है यह मेरा अपना पुत्र है इसको किसी ने भी नहीं मारा अपने पुत्रको अपने हाथों मैंने मारा है सच कहा है। "जैसा करोगे वैसा भरोगे"

करदने खुद पेश में आयद फलक रा तोहमत अस्त।
हरचे अदाज़ी मयाने आस्या आरद बरूँ॥

अर्थात्‌ः-अपने कर्म किये हुये अपने सामने आते हैं, दूसरों को कोसना व्यर्थ है, चक्की के अन्दर जैसा दाना डालेगा, वैसा आटा आयगा। प्यारे! देखा, अहंकार का फल, कैसा सुन्दर मिलाप हुआ है अहंकारी मनुष्य ऊपर नीचे, आगे पीछे, अन्दर बाहर कुछ नहीं देखता केवल मैं के! अब बताओ परमात्मा कहाँ है। कवी ने क्या अच्छा लिखा है :—

दिखा ले जग को हशमत चार दिन इफ़लाक के नीचे।
शहनशा व गदा सब एक से हैं ख़ाक के नीचे।
हैरान हूं निहायत आखिर यह ज़ब्त क्या है,
किस दोस्त गुमशुदह को जंगल में ढूंडता है।
तुझको तलब है जिसकी दोनों हैं उससे खाली,
दरवाज़ा खोल दिल का देहरो हरम में क्या है।
करता है जिवह साई क्यों मकबरों में ग़ाफ़िल,

तू किस की ज़िन्दगी को मुर्दों से मांगता है।
दिल है तो सब कहीं है, वरना कहीं नहीं है,
क्या खूब कौल तेरा ऐ जोशे बेनवा है।
किस नींद में है बन्दे, अन्दर तेरे खुदा है।

गुरू नानक देव जी—

पुष्प मद जियू बास वसत है, मकर माही जैसे छाई।
तैसे ही हर बसे निरन्तर, घट ही खोजो भाई॥
बाहर भीतर एको जानो ए गुरू ज्ञानी सुनाई।
जिन नानक बिन आपा चीने मिटे न भ्रम की काई॥

अर्थात्—जैसे फूलों में सुगन्धी होती है जैसे शीशे में प्रतिबिम्ब होता है ऐसे ही वह प्रभु मनुष्य में है, अतः अन्दर ही खोज करनी चाहिये। पीर मुर्शिद (गुरू ज्ञानी) ने यह रमज़ बताई है, कि वह स्वामी अन्दर बाहर एक सा ही है, उसे अपने अन्दर पहचाने बिना जो भ्रम की काई जमी हुई है वह दूर नहीं हो सकती।

हासिल न शब्द तुरा रज़ाए, ताखातिरे बन्दगाने न जोई।
ख़्वाही के खुदाए बतो बख़्शद, बा खलक खुदाए कुननि कोई।

अर्थात्—जब तुझे ज्ञान है कि हर एक के हृदयमें परमात्मा विराजमान है, तो तेरा कर्त्तव्य है कि प्रत्येक हृदय के भीतर उसको देखे। जब तक तू दुखियों के साथ सहानुभूति न करेगा, तब तक परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता यदि तू चाहता है कि परमात्मा तुझ पर दया करे, तो तू उसकी प्रजा के साथ प्यार कर। आगे कवि ने कहा है—

दिलके आईने में है तसवीरे यार, जब ज़रा गरदन झुकाई देख ली।

खानाये दिल है स्याह उसकी स्याही दूर करे,
क्या सफेदी से महल करता है तू अपना सुफेद ॥

हृदय की पवित्रता कैसे हो

खाही केबशवद दिलेता चूँ आईना,दाह चीज़ गैरू कुन ज दरूनेसीना
बुखल, वहसदो, जुलम, वहराम, व गैवत ।
बुगुज, बतमा, बहिरस, वरियाव, व कीना

अर्थात:—यदि तू चाहता है कि तेरा दिल शीशे की भान्ति साफ हो, तो अपने अन्दर से दस बुराईयाँ जो समाई हुई हैं; इनको दूर कर,

१ कंजूसी, २ हसद, ३ जुलम, ४ हरामखोरी, ५चुगल खोरी, ६दुश्मनी, ७बेजा ख्वाहिश, ८ लालच, ९ मकारी, १०बदला लेने की भावना ।

जब इन बुराईयों का त्याग हो गया तो हृदय शुद्ध पवित्र, दर्पण की भान्ति बन जावेगा।

सत्य पाल:— महाराज ! फिर उसकी पहचान कैसे होगी ।

सन्त महाराज:—कहते हैं हजरत मूसा ने खुदा से पूछा, ऐ प्यारे खुदा मकबूल तेरा कौन है बन्दों में सिवा ।

उत्तर मिला, "बन्दा हमारा वह है, जो ले सके, और न ले बदी का बदला"

उसके हृदय से तेरा मेरा पन दूर ईर्षा, द्वेष, नष्ट हो जाते हैं ।

राम लाल:—कैसे दूर हो जावेंगे आज कल तो बड़े बड़े विद्वान् ईर्षा द्वेष से खाली नहीं अभी थोड़े दिनों की बात है कि मैं एक मन्त्री. आर्य समाज

के घर में बैठा था और वहां पर सभा के एक महोपदेशक बैठे थे। मन्त्री जी ने उन से कहा, कि रामायण की कथा अर्थ अमुक उपदेशक को मंगवा लेवें बड़ी अच्छी कथा करते है तो महोपदेशक ने कहा, नहीं २ कदापि नहीं, वह दूसरी सभा का उपदेशक है उसे कदापि नहीं बुलाना, महाराज! जब यह महोपदेशकों, जो संसार के उपकार करने के ठेकेदारों का यह हाल हो, तो हम वेचारे कैसे सुधरेंगे।

सन्त महात्मा:-प्यारे परिणाम भी तो वैसा ही वह पा रहे हैं कहाँ वह समय था, जब कि ब्राह्मण देवता की ऐसी पूजा थी शूरवीर कर्ण ने लिखा है:—

नाहं विशङ्के सुर राज वज्रान्न यत्र शूलान यमस्य दंडात।
नाग्नेंन सौमो म रवि प्रतापात शंङ्क महमं ब्रह्म लोकापमाना॥

अर्थात् मैं इन्द्र के वज्र से नहीं डरता और न महादेव के त्रिशूल से डरता हूं, न यम राज के डंडे से डरता हूं, न अग्नि, न चन्द्र, सूर्य इत्यादि से किंचित मात्र भी नहीं डरता, मुझे डर है, तो केवलउससे, कहीं ब्राह्मणों के कुल का मुझ से अपमान न हो जावे, भगवान् रामचन्द्रजी ने लिखा है:-

विप्र प्रसादात् धरणी धरोहं विप्र प्रसादात् कमला वरोहम।
विप्र प्रसादात् अजिता जितोह विप्र प्रसादात् मम् राम नामः॥

अर्थात ब्राह्मणों के ही प्रशाद से मैं धरणीधर हूँ ब्राह्मणों के ही प्रताप से मैं धनुष तोड़ कर सीता को विवाह लाया हूं, विप्र के प्रताप से लंका जीती, ब्राह्मणों के ही प्रसाद से हमारा राम नाम है।

कवच अभेद विप्र पद पूजा।
यह सम वजय उपाय न दूजा॥

विद्वानों की वर्तमान समय की अवस्था
(पूर्णतया देखो लेखक की अतिथि यज्ञ प्रसाद पुस्तक में)

दो विद्वान

दो विद्वानों को सद गृहस्थी ने श्रद्धा प्रेम से निमन्त्रण दिया; दोनों गृहस्थी के द्वारपर पहुँचे, गृहस्थी ने नमस्कार और सत्कार किया, तो विद्वानों ने कहा, हमने स्नान करना है। गृहस्थी ने कहा, महाराज। कमरे में नलका है आप में से एक पहले स्नान कर लेवे, फिर दूसरी बार दूसरा महाराज जी, अतः एक विद्वान् स्नान को चले गए तो गृहस्थी ने पीछे बैठे विद्वान् से कहा, महाराज! यह आपके संग वाले बड़े तपस्वी प्रतीत होते हैं तो उन्होंने उत्तर दिया, हूं! क्या तपस्वी हैं, गधा ही तो है। अब जब पहले विद्वान् नहा कर आए तो दूसरे विद्वान् नहाने को गए, तो फिर गृहस्थी ने कहा महाराज। आपके संगी बड़े योगी त्यागी प्रतीत होते हैं तो विद्वान् महोदय ने कहा, अरे बाबा तुझे उसका क्या पता, यह तो बैल ही है। अब जब दोनों ने स्नान कर लिया; तो गृहस्थी ने भोजनार्थ आसन बिछाया, जल से पाँव धोए, हाथ धुलाए, तो दो थालियों में खाना परोस सुन्दर रुमालों से ढक कर दोनों के सामने रख दिया, अब विद्वानों ने जब रुमाल खाने से उठाया, तो क्या देखा, कि एक थाली में खाली भूसा, मिला हुआ धरा है, और दूसरी में भूसा और दाना, जब विद्वानों ने देखा, तो क्रोध अवस्था में हो कर गृहस्थी से बोले अरे मूर्ख, तुमने यह क्या मखौल कर रखा है, ब्राह्मणों का अपमान।

गृहस्थी ने कर जोड़ नम्रता से कहा, महाराज! क्रोधित क्यों होते है, आपने जैसा ही कहा था, वैसे आपके कथन अनुसार खाना लाया हूं, ताकि आपके अनुकूल हो, किन्तु मेरी इच्छा तो पूरी कचोरी हलवा खीर इत्यादि तैय्यार कर के भेंट करने की थी।

दोनों विद्वानः-अरे मूर्ख! तेरा नाश हो. क्या तुमने हम को पशु समझ रक्खा है क्या खीर पूड़ी खाने वाले को सींग होते हैं।

गृहस्थीः-(नम्रता से) महाराज! आपने मेरे पूछने पर तो बतलाया था

कि यह गधा है, यह बैल है, तो गधे व बैल का जो भोजन होता है, मुझे वही यथार्थ लाना था, लाया, क्यूं महाराज! आपने कहा था, कि यह गधा है। दूसरे से पूछा क्यूं महाराज, आपने कहा था कि यह बैल है। अब दोनों विद्वान् लज्जित हो गए।

प्यारे:-यही गति आजकल प्रायः विद्वानों का हो रही है, ब्रह्मण वह, जो ब्रह्म को पहचाने, जब ब्रह्म का हो गया तो फिर उसे चिन्ता क्या, आज कल तो बड़े २ विद्वान् दुकानदारी खोले बैठे हैं। नौकरी करते हुए तनखालेकर उपदेश बेचते फिरते हैं। न उन्होंने ब्रह्म से प्यार किया, न ब्रह्म के बने, पूजा विद्या की नहीं होती, पूजा तो चरित्र को, कर्त्तव्य पालन करने वाले की होती है।

भला सोचो—सन्त कबीर, गुरु नानक देव जी महाराज इत्यादि क्या संस्कृत जानते थे, वेद जानते थे, क्या विद्वान थे, नहीं कदापि नहीं।

प्यारे:— वह ग्रन्थों को पढ़कर तोते की भांति न थे जो वर्तमान काल में हैं, वह तो भगवान के प्यारे उसी के पुजारी भगवान के भक्त थे, अन्दर, बाहर, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, जहां तहां उसी को देखा। कवि ने कहा है:—

कारसाजे मा वफिकरे कारमा, आजारे मा ।
फिकरे मा दर कारे मा आजारे मा ॥

बच्चा जब तक मां की गोद में होता है, वह टट्टी करे पैशाब करे, आंख मुख में थूक आदि लटक रही हो, तो माता स्वयं उसको साफ सुथरा करेगा, नहलाएगी, सुन्दर कपड़े पहनाएगी, दूध पिलाएगी। तात्पर्य यह कि चौबीस घन्टे रक्षा में रहती है। वैसे ही वह जगत जननी माता अपने भक्तों की सदैव रक्षा करती रहती है। बच्चा बेफिकर रहता है, हां जब बच्चा मां से जुदा हो जावे, तो फिर माता भी कहती है, जान छूटी, अब टक्कर मारे, बस प्यारे=उसी के दरवाजा से विद्वान् जन भक्ति से दूर हैं

दर दर धक्के खाते फिरते हैं, आर्य समाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द महाराज से पहले भारत में क्या थोड़े विद्वान थे। क्या कोई ऋषि दयानन्द बना, कदापि नही, क्यों! कारण यह कि वह अपने कर्त्तव्य से दूर विद्या के अहंकार में डूबे हुए थे, भगवान का भक्त सच्चा पुजारी तपस्वी अखण्ड ब्रह्मचारी, जो रात के दो बजे उठकर प्रभु के चरणों का वास करता था, फिर ससांर के कल्याण निमित चिन्तन। तात्पर्य यह है कि चौबीस घन्टे उसी का हो कर उसी का कार्य करता था, उसी का साक्षात करते करते अपने आपको समर्पण किया। भगवान को यूं माना-जाना,

ओ३म् यदन्तरं तद् बाह्यं, यद् बाह्यं तदन्तरं ॥ अथर्व० २,३०

अर्थात:- जो अन्दर हो वही बाहर हो जो बाहर हो वही अन्दर हो। अन्त में माता की गोद में हंसते हंसते यह शब्द कहता हुआ गया 'प्रभू तेरी मन्गल इच्छा पूर्ण हो! पूर्ण हो!! पूर्ण हो!!!।

प्यारे भक्ति बिन शक्ति नहीं; शक्ति बिन हस्ती नही प्राप्त होती, आज बड़े बड़े संस्कृत के धुरैन्द्र विद्वान् स्टेजों पर सन्त कबीर जी तथा गुरू नानक देव जी महाराज इत्यादि की वाणियों को पढ़ पढ़ कर सुना सुना कर लोगों को भक्ति का उपदेश करते हैं लोग उनकी वाणियों को सुन २ कर मस्त मतवाले हो जाते हैं। यह क्यों, प्यारे=सन्तों की वाणी अपनी वाणी नहीं होती वह भगवत् वाणी होती है वह तो यूं होते हैं।

ओ३म् आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मायज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् स्तोमश्च यजुश्च ऋकच सामंच बृहच्च रथन्तरं च। स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम प्रजापतेः प्रजा अभूम वेट् स्वाहा ॥ यजु० अ.१८.म.२९

इस मन्त्र का भावार्थ वही है जो आप सत्संगियों ने आरम्भ में ही मिल कर गाया था। "प्रभू जी भेंट धरु क्या मैं तेरी" भजन के अन्त में यह गाया था।

"तुमरे दर का कुकर स्वामी, लाज राखो प्रभु मोरी।
चरण शरण निज अर्पण कर के दीजो भक्ति बिन देरी॥

प्यारे: समझा है इस भजन के फिकरे को!

सत्य पाल:— महाराज! यह समझ में नहीं आ रहा, कि भक्त ने अपने आप को कुत्ता शब्द से सम्बोधित क्यों किया है, मनुष्य होता हुआ भी, क्या यह असत्य नहीं है।

सत महात्मा— प्यारे भगवान् के भक्त, भगवान् की प्रत्येक वस्तु को देख कर उसकी उद्भुत रचना पर लट्टू हो जाते हैं। उस के गुण को ग्रहण करते हैं। दूसरा वर्तमान काल में मनुष्य का मनुष्य रूपी शरीर तो है, पर मनुष्यता दुर्लभ है, यदि मनुष्यता होती, तो राम राज्य न होता? यह सारा संसार परमात्मा का रचा हुआ एक प्रकार का सिनेमा है, जो रचने वाले की रचना का गीत गा रहा है। उसका खेल दिखा रहा है, इसको तुम और हम नहीं सुन देख और समझ सकते हैं, भक्त ही भगवान् के इस को सुनते, देखते, और समझ सकते हैं।

वह कैसे सुनो:— मनुष्य यदि बुद्धि रहित (दिवाना) पागल हो जावे तो उस समय उस को माता पिता बहिन भाई मित्र अपने पराए की पहचान नहीं होती, सब के वास्ते एक से दुर्वचन कहता है, मारता है, कपड़े उतार कर नंगा हो कर जो भी सामने मिल जावे, मुहँ में डाल लेता है तात्पर्य यह है कि अपने और दूसरों की सुध बुध से रहित हो जाता है। पर कुत्ता यदि दिवाना हो जावे, तो जो भी सामने आ जावे उसी का काटे गा, पर उस में विशेषता यह कि जिस का अन्न (नमक) खाया हुआ है उस को (स्वामी को) नहीं काटेगा, अतएव भक्त ने भगवान् से याचना की है कि प्रभु, तुमरे दर का कुकर स्वामी, अर्थात् जिस प्रकार

कुत्ते की बुद्धि भ्रष्ट हो जाने पर अपने स्वामी की पहचान को नहीं भूल सकता, नहीं काटता, बस ऐ नाथ ! ऐसी बुद्धि प्रदान करो कि सारे संसार से मेरी बुद्धि हट जावे, पर तेरी पहचान से रहित न हो, प्यारे इस भजन में भक्त ने भगवान् को सब कुछ समर्पण कर दिया है, केवल स्वामी की पहचान तथा भक्ति का दान ही भगवान् से मांगा है ।

रामलाल:— महाराज ! अब यह भक्ति से शक्ति और शक्ति से हस्ती कैसे प्राप्त हो जिस से सुख, शान्ति और भगवत प्राप्ति हो ।

सन्त महात्मा:—प्यारे आओ, हम सब मिल कर भक्ति करें । कैसे, मन वचन कर्म से ही, अब एक भजन गावो पर दूसरों के सुनाने के लिए नहीं गाना, स्वंय सुनो, कान पवित्र होंगे, वाणी, अमृत वाणी होगी, मनन करने से मन शुद्ध, निर्मल होगा, आचरण करने से भगवत प्राप्ति होगी।

भजन

जीवन का मैं ने सौंप दिया, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
उद्धार पत्तन अब मेरा है, भगवान् तुम्हारे हाथों में ॥
हम तुम को कभी नहीं भजते; तुम हम को कभी नहीं तजते ।
अपकार हमारे हाथों में, उपकार तुमहारे हाथों में ॥
हम व तुम में है भेद यही, हम नर हैं तूम नारायण हो ।
हम हैं संसार के हाथों में, संसार तूम्हारे हाथों में ।
दृग विन्दु बनाया करते हैं, एक सेतु विरह के सागर पर ।
जिस पर हो कर हम जाते हैं, वह पार तुम्हारे हाथों में ॥

सन्त महात्मा—प्यारे यह तो भजन आपने मिल कर गाया है आचरण करने से फल तो मिलेगा पर जिस फल में रसना न हो तो वह फल

किस काम का,। वह कब प्राप्त होगी, रसना तो पानी का गुण है, जब फल में कोमलता आवेगी तब उसके अन्दर रस होगा, वही सुख कारी होगा यह तो फल हुआ शरीर का भोग, पर भगत चाहता है उस का आनन्द, आनन्द तो आत्मा का भोग है वह तो मिलेगा परमात्मा से, क्योंकि परमात्मा आनन्द स्वरूप है सत्तचित आनन्द है, जीव आत्मा सत्त चित् है अब आनन्द की प्राप्ति के लिए तो अपनी वस्तु समर्पण करनी होगी, वह क्या है, वह है नमस्कार, जो कि मनुष्य जन्म से ही अपने साथ लाया था जिस से अहंकार का नाश होगा, फिर आत्मा का प्रभु के चरणों में वास होगा, जिससे आनन्द प्राप्त होगा। आओ सभी मिल कर परमपिता परमात्मा के चरणों में नमस्कार करें:—

भजन

नमो सृष्टि कर्ता, नमो कष्ट हर्ता।
नमो विश्वभर्ता, नमो और नमः हो॥

नमो दुख भंजन, नमो पाप गंजन।
नमस्ते निरञ्जन, नमो और नमः हो॥

नमो दीन बन्धु, नमो करुणा सिन्धु।
नमस्ते स्वयम्भू, नमो और नमः हो॥

नमो तिमिर हन्ता, अटल और अनन्ता।
नमस्ते नियन्ता, नमो और नमः हो॥

नमो पतित पावन नमो दुख निवारण।
अनादि अकारण, नमो और नमः हो॥

नमो ज्ञान दाता, नमस्ते विधाता।
विशन है यह गाता, नमो और नमः हो॥

सत्य पाल—महाराज इन विषयों के वशी भूत करने का कोई गुर है?

सन्त महात्मा —इन पाँचों विषयों पर विजय प्राप्त करने का गुर है, गुरु मन्त्र, वह यह है:—

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

प्यारे—इस मन्त्र का नाम है गायत्री मन्त्र निम्न लिखित प्रकार से यह वश में होंगे!

ओं —से अहंकार

भूर्भुवः स्वः—से मोह

तत्सवितुर्वरेण्यं —से लोभ

भर्गो देवस्य धी महि —से क्रोध

धियो यो नः प्रचोदयात् —से काम

इस गुरु मन्त्र के प्रतिदिन जाप करने से ही यह सब विषय हट जावेंगे जिस प्रकार से कन्या वर को प्राप्त करके स्वतंत्र हो जाती है, पति की सम्पूर्ण पूंजी की मालिक हो जाती है, वैसे ही इसका जाप करने वाला भगवान को प्राप्त कर लेता है।

सत पाल महाराज ! गायत्री जाप तो हम करतेहैं. पर हमें इसके जाप करने का ऐसा मार्ग बतलादें, जिससे हम इन विषयों पर विजय पा सकें।

सन्त महात्मा प्यारे जाप करनेके मार्ग तो कई हैं प्रत्येक मनुष्य अपनी अपनी प्रकृति और पूर्व सस्कारों के सम्बन्ध से जाप करता हुआ सफलता प्राप्त करता है, मैं स्वयं तो अभी क, ख, की श्रेणी में हूं मेरे गुरु देव जी महाराज ने इस गायत्री मन्त्र की व्याख्या अपने अनुभव से एक पुस्तक जिस का नाम 'गायत्री र स्य' में की है, उसके पढ़ने से आप को अपनी इच्छानुसार मार्ग मिल जावेगा, इस समय जितना भी उसके संग और पुस्तकों के स्वाध्याय से और अपने अनुभव से जो मार्ग मिला है वह मैं बताता हूं इस पर आचरण करनेसे आपको आवश्य सफलता प्राप्तहोगी।

गायत्री को पांच मुखी विशेष रूप में सब धर्म वाले मानते हैं ।

(१) ओं[१] भूर्भु[२]वःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं[३]

भर्गो देवस्य[४] धीमहि धियो[५] यो नः प्रचोदयात् ।

(२) पांच विषय हैं:–काम क्रोध लोभ मोह अहंकार

कैसे वश हों:—

स्तुति, स्वाध्याय, जाप, उपासना, प्रार्थना ।

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार

(३) मुख में पांच ज्ञान इन्द्रियां हैं ज्ञानसे ही यह विषय वशमें हो सकते हैं, इन के वश करने के भिन्न २ मार्ग हैं, सुनो:–

१ गायत्री मन्त्र का जाप, ध्यान त्रिकुटि में करने से यह मस्तिष्क पर लिखने के अभ्यास से काम निवृत्ति होगी ।

२ जिह्वा को तालू पर लगा कर जप करने से; दांत पीस कर जप करने अथवा दो दांतों के मध्य में जिह्वा को वश में करके जप जाप करने से क्रोध शान्त होता है ।

(३ प्राणायाम द्वारा जाप करने से य नाक के अग्रभाग पर ध्यान कर जाप करने से लोभ वृत्ति हट जाती है ।

४ मन में गायत्री जाप उपासना रूप से ध्यान करने से अर्थात अन्दर से स्वयं ही गायत्री मंत्र का उच्चारण होता सुनाई देवे, तो मोह हटेगा ।

५ गायत्री द्वारा प्रार्थना करने और उस प्रार्थना को अपने कान से सुनने से जबान और कान, आवाज और श्रवण एक हो जावे तो अहंकार वृत्ति का नाश होगा ।

राम लाल:— महाराज यदि कोई व्यक्ति जाप द्वारा सब विषयों को एक दम वश में करना चाहे तो कैसे जाप किया जावे ।

संत महात्मा जबान को तालू में लगा, वृत्ति को त्रिकुटी में जमा, कान को अर्थों में टिका, प्राणायाम रूप अथवा ध्यान रूम से मन में जाप करे, तो पांचों विषयों में धीरे २ विजय प्राप्त होगी ।

लोभ और मोह के त्याग से संसारी लोग यश गाते हैं परन्तु यह यश मुक्त करनेवाला नहीं है, जब तक मनुष्य जीवित रहता हैं तबतक मनुष्य का यश होता है पश्चात में नहीं यह प्राकृतिक यश है ।

काम के त्याग से देवता ही महिमा गाते हैं भीष्म पितामहा ऋषि दयानन्द, भगवान् राम, लक्ष्मण,जबतक सृष्टि स्थापित है तबतक नाम जीवित है परन्तु सृष्टि के लोप हो जाने के पश्चात नहीं ।

अंहकार और क्रोध के नाश करने से मनुष्य सदैव जीवित रहता है जैसे परमात्मा नित्य है वह नित्य जीवित रहता है ।

प्यारे आज उपदेश समाप्त हो गया इन पांच मूलों और इन के दूर करने के साधनों पर आप लोगों ने सुना है इन का मनन, निध्यासन, कीर्तन करेंगे तो आवागमन के चक्र से छूट कर सुख, शान्ति और प्रभु दर्शन अवश्य प्राप्त होंगे ।। एक प्रेमी ने प्रश्न किया

प्रश्न:- जो व्यक्ति ज्ञान, व वाणी अच्छी रखता है, परमात्मा के विषय में अच्छा संसार के परमार्थ व्यवहार के सम्बन्ध में ज्ञान भी रखता है, और उसे लोगों में वर्णन भी अच्छा कर सकता है, परन्तु स्वंय आचरण नहीं करता, उसे क्या प्राप्त होता है ।

उत्तर:- उसे अच्छा खाना, पीना, अच्छा वस्त्र और धन भी मिल जावे गा, और मान भी परन्तु जितनी यह वस्तुएं उसे अधिक प्राप्त होंगी उतना ही वह प्रभु से और भी दूर होता जाएगा । उसे अपना मोह और लोभ अन्त में काम क्रोध में गिरा देवेगा ।

"यम नियम द्वारा इन विषयों की जीत"

नाम विषय	यम	नियम
काम	ब्रह्मचर्य्य	स्वाध्याये
लोभ	अस्तेय	सन्तोष
क्रोध	अहिंसा	शौच
मोह	अपरिग्रह	तप
अंहकार	सत्य	ईश्वर प्रणीनधान

संसार में दो वृतियां कार्य कर रही हैं; एक आसुर दूसरी दैव्य वर्तमान काल में प्राय: संसार में आसुर बृति का राज्य है । इस पर विजय पाने के लिए देव बृति का प्रयोग हो ।

कैसे ?

आसुर वृत्ति	इसका स्थान	देववृत्ति	जब विषय जाग्रत हो तत्काल उसे कैसे वश में किया जावे ।
काम	आंख	लज्जा	आंखों को उलटा दो,
लोभ	नाक	कीर्ति	नाक को रगड़ो,
क्रोध	बाणी	दया	जिह्वा को तालू से लगावो
मोह	मन	धृति	सर पर मुक्के लगावो,
अहंकार	कान	नम्रता	कान मरोड़ा करो ।

काम—से चित की अपवित्रता होती है ।

लोभ—से बुद्धिकी अपवित्रता होता है ।

मोह—से मन की अपवित्रता होती है ।

क्रोध—से बाणी „ „ „ „

अंहकार—से प्राण „ „ „ „

इन सब विषयों को वश करने के लिए एक गुर है, वह है गायत्री मन्त्र जिस को वेद मुख माता कहते हैं । यह पतित पावनी, कष्टनिवारणी, लोक तारनी माता हैं जो सुख, शान्ति, परमात्मा का साक्षात दर्शन करा‌ने वाली है ।



"प्रार्थना"

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय ।
यह अभिलाषा हम सब की भगवन पूरी होय ॥

विद्या बुद्धि तेज बल, सब के भीतर होय ।
दूध पूत धन धान्य से, वंचित रहे न कोय ॥

आप की भक्ति प्रेम से, मन होवे भर पूर ।
राग द्वेश से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर ॥

मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश ।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश ॥

पाप से हमें बचाईए, कर के दया दयाल ।
अपना भक्त बनाय कर, सब को करो निहाल ॥

दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अरु प्यार ।
हृदय में धैर्य वीरता, सब को दो कर्तार ॥

नारायण तुम आप हो, पाप के मोचन हार ।
क्षमा करों अपराध सब, कर दो भव से पार ॥

हाथ जोड़ विनती करुं, सुनिए कृपा निधान ।
साधु संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान ॥

———

॥ शान्ति – पाठ ॥

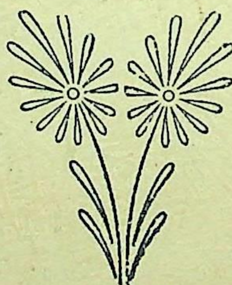
ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सामा शान्तिरेधि ।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्ति !!

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया: ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत् ॥

सब का भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान् ।
सब पर कृपा करो भगवान्, सब का सब विध हो कल्याण ।

स्वामी ब्रह्मानन्द



दयानन्द इन्डस्ट्रियल प्रैस कटड़ा शेर सिंह अमृतसर
में श्री रामचन्द्र जी के प्रबन्ध में छपी ।